Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जैन मरु-गूर्जर कवि और उनकी रचनाएं

भाग १

संपादक

अगरचन्द नाहटा

प्रकाशक

श्री अभय जैन ग्रन्थालय

नाहटों की गवाड़, बीकानेर

For Private and Personal Use Only

।। कोबातीर्थमंडन श्री महावीरस्वामिने नमः ।।

।। अनंतलब्धिनिधान श्री गौतमस्वामिने नमः ।।

।। गणधर भगवंत श्री सुधर्मास्वामिने नमः ।।

।। योगनिष्ठ आचार्य श्रीमद् बुद्धिसागरसूरीश्वरेभ्यो नमः ।।

।। चारित्रचूडामणि आचार्य श्रीमद् कैलाससागरसूरीश्वरेभ्यो नमः ।।

आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर

(जैन व प्राच्यविद्या शोधसंस्थान एवं ग्रंथालय)

पुनितप्रेरणा व आशीर्वाद

राष्ट्रसंत श्रुतोद्धारक आचार्यदेव श्रीमत् पद्मसागरसूरीश्वरजी म. सा.

जैन मुद्रित ग्रंथ स्केनिंग प्रकल्प

ग्रंथांक : १२८७

श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र

आचार्यश्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर
कोबा, गांधीनगर-श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र
आचार्यश्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर
कोबा, गांधीनगर-३८२००७ (गुजरात)
(079) 23276252, 23276204
फेक्स : 23276249
Websiet : www.kobatirth.org
Email : Kendra@kobatirth.org

शहर शाखा

आचार्यश्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर
शहर शाखा
आचार्यश्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर
त्रण बंगला, टोलकनगर
हॉटल हेरीटेज़ की गली में
पालडी, अहमदाबाद – ३८०००७
(079) 26582355

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भ० महावीर के २५००वें निर्वाण महोत्सव के उपलक्ष में
अभय जैन ग्रन्थमाला ग्रन्थांक ३४

जैन मरु-गूर्जर कवि और उनकी रचनाएं

[जैन गूर्जर कवियो भाग १-२-३ की अनुपूर्ति]

भाग १

[११वीं से १६वीं शताब्दी तक का]

संपादक
अगरचन्द नाहटा

द्रव्य सहायक
श्री जैन श्वेताम्बर कॉन्फ्रेंस, बम्बई

प्रकाशक
श्री अभय जैन ग्रन्थालय
नाहटों की गवाड़, बीकानेर

वत् २०३१ मूल्य पांच रुपया

Phone : [illegible]
मुद्रक—एजूकेशनल प्रेस, फड़ बाजार, बीकानेर

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सम्पादकीय

भारतीय साहित्य में जैन साहित्य का महत्त्वपूर्ण स्थान है। प्राकृत, संस्कृत, अपभ्रंश, हिन्दी, राजस्थानी, गुजराती, मराठी, कन्नड़, तमिल आदि भारत की सभी प्रधान भाषाओं और धर्म, दर्शन, काव्य, कथा, ज्योतिष, वैद्यक आदि जीवनोपयोगी प्रत्येक विषय का जैन साहित्य प्रचुर परिमाण में प्राप्त है। ज्यों-ज्यों खोज की जाती है, नित्य नई जानकारी व सामग्री प्रकाश में आती रहती है।

प्राप्त जैन साहित्य का विवरण संग्रहीत करने का सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य स्व० मोहनलाल दलीचन्द देसाई वकील—हाईकोर्ट बम्बई ने किया था। उन्होंने 'जैन साहित्यनो संक्षिप्त इतिहास' और 'जैन गूर्जर कविओ' भाग १-२-३ के नाम से जो ग्रन्थ करीब ३५ वर्ष के निरन्तर और अथक प्रयत्न से तैयार किये थे, वे जैन श्वेताम्बर कॉन्फ्रेन्स बम्बई की ओर से संवत् १९८२ से संवत् २००० के बीच गुजराती में प्रकाशित हुए। इस भगीरथ कार्य को इतनी लगन और परिश्रम से सम्पन्न किया कि आज तक वैसा और किसी के द्वारा नहीं हो पाया। 'जैन गूर्जर कविओ' के तीन भागों में लगभग १ हजार कवियों एवं २०० गद्य लेखकों की ३-४ हजार रचनाओं का विवरण ४ हजार से अधिक पृष्ठों में प्रकाशित हुआ है।

श्री देसाई के 'कविवर समयसुन्दर' नामक निबंध से प्रेरणा प्राप्त करके हमने (मैं और मेरे भ्रातृ-पुत्र भंवरलाल ने) जैन साहित्य के खोज का काम सं. १९८५ से आरम्भ किया और उसी प्रसंग से देसाई से हमारा सम्पर्क बढ़ता गया। जब उनका जैन गूर्जर कवियो का तीसरा भाग छप

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रहा था तो हमने उन्हें अपनी खोज से जो नवीन तथा अज्ञात सामग्री हमें मिली थी उसका विवरण उन्हें भिजवा दिया। तदन्तर हमारे यहां बीकानेर आकर भी उन्होंने काफी रचनाओं का विवरण तैयार किया, इसी से तीसरा भाग इतना बड़ा बन सका।

हमारा शोध-कार्य निरन्तर प्रगति करता रहा, फलतः हमें उपरोक्त तीनों भागों में जिन कवियों और रचनाओं का उल्लेख नहीं हो पाया था, उनकी बहुत बड़ी सामग्री और जानकारी प्राप्त होती गई। अतः यह निर्णय किया गया कि अज्ञात कवियों और उनकी रचनाओं तथा ज्ञात कवियों और उनकी अज्ञात रचनाओं का विवरण देसाई के तीनों भागों की पूर्ति रूप में तैयार किया जाय। उसी के फलस्वरूप कई वर्षों के प्रयत्न से हमने एक बड़ा ग्रन्थ तैयार किया जिनमें ११वीं से १६वीं शताब्दी तक के कवियों और रचनाओं का विवरण इस ग्रन्थ के प्रथम भाग में प्रकाशित किया जा रहा है। यद्यपि इस अवधि की अधिकांश रचनाएं छोटी-छोटी हैं पर वे परवर्ती कवियों के लिए प्रेरणा-स्रोत रही हैं और विविध प्रकार की हैं। इसलिए उन छोटी-छोटी रचनाओं का भी विवरण देना आवश्यक समझा गया। १६वीं के बाद तो बड़ी-बड़ी रचनाएं बहुत मिलने लगती हैं और १७वीं शताब्दी तो जैन साहित्य और इतिहास का स्वर्ण युग है, इसलिए उस शताब्दी के कवियों और उनकी रचनाओं का एक स्वतंत्र भाग ही तैयार हो गया है। १८वीं में भी वह क्रम चालू रहा। १९वीं में कुछ मन्दता आयी और २०वीं के पूर्वार्द्ध की तो बहुत थोड़े कवि और रचनाएं ही ज्ञात हैं। उत्तरार्द्ध से मुद्रण का प्रसार बढ़ता गया और विवरण केवल जैन भण्डारों में प्राप्त हस्तलिखित प्रतियों से ही लिया गया है।

प्रस्तुत ग्रन्थ के नाम में भी कुछ परिवर्तन करना आवश्यक समझा गया क्योंकि श्री देसाई ने अपने ग्रन्थ का नाम 'जैन गूर्जर कविओ' रखा था पर उसमें केवल गुजरात के कवियों या केवल गुजराती भाषा की रचनाओं का विवरण न होकर मारवाड़—राजस्थान आदि प्रान्तों के

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जैन कविओं और उनकी मरु-भाषा की रचनाओं का विवरण भी काफी बड़ी संख्या में था अतः वह नाम सार्थक नहीं लगा। यद्यपि १५वीं शताब्दी तक मरु और गूर्जर दोनों प्रान्तों की भाषा एक ही थी पर १६वीं शताब्दी से उनका अन्तर स्पष्ट होता गया व बढ़ता गया, इसलिए दोनों भाषाओं का संयुक्त नाम 'मरु गूर्जर' कहना या लिखना ज्यादा उचित है। इसी कारण इस ग्रन्थ का नाम मरु गूर्जर कवि और उनकी रचनाएं रखा गया है।

जैन गूर्जर कविओ ग्रन्थ का प्रकाशन जैन श्वेताम्बर कॉन्फ्रेन्स की ओर से हुआ था, इसलिए मैंने भी अपने ग्रन्थ को प्रकाशित करने के लिए कॉन्फ्रेन्स को लिखा पर उक्त संस्था ने इसके लिए केवल १ हजार रु. ही आर्थिक सहयोग श्री ताजमल जी बोथरा की प्रेरणा से स्वीकार किया जिससे पूरा ग्रन्थ प्रकाशित होना संभव ही नहीं था। अतः यह प्रथम भाग ही प्रकाशित होने पा रहा है।

ग्रन्थ को प्रेस में देने के बाद कागजों के भाव आकाश को छू गये तथा छपाई भी काफी बढ़ गयी इसलिए बीच में काफी समय तक मुद्रण रुका रहा अतः प्रकाशन में काफी देरी हो गई है। आगे के भागों का प्रकाशन तो भविष्य पर ही निर्भर है।

इस ग्रन्थ को तैयार करने में मेरे सहयोगी भ्रातृ-पुत्र भंवर लाल तथा अन्य कई व्यक्तियों का सहयोग प्राप्त हुआ है और प्रकाशन में कॉन्फ्रेन्स व श्री ताजमल जी बोथरा का सहयोग मिला इसके लिए उनका व अन्य समस्त सहयोगियों के प्रति मैं आभार प्रगट करता हूँ। प्रस्तुत ग्रन्थ के आगे के भाग भी शीघ्र प्रकाश में आयें, यही शुभ कामना है।

—अगरचन्द नाहटा

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अनुक्रमणिका

क्र. सं.	कवि का नाम	रचना का नाम	पृष्ठ संख्या
		११वीं शताब्दी	
१	पं. धनपाल	१ सत्यपुरीय महावीर उत्साह	१
		बारहवीं शताब्दी	
२	वर्द्धमान सूरि	२ वीर जिणेसर पारणउ	२
३	पल्ह कवि	३ जिनदत्तसूरि स्तुति	३
४	श्रीजिनदत्तसूरि-भक्त	४ श्री जिनदत्तसूरि स्तुति	४
५	धर्मसूरि शिष्य	५ धर्मसूरि बारह नावउं (बारहमासा)	४
		तेरहवीं शताब्दी	
६	श्रा. लखण (लक्ष्मण)	६ जिनचन्द्रसूरि काव्याष्टक	५
७	वज्रसेन सूरि	७ श्री भरहेसर बाहुबलि घोर	६
८	सिरिमा महतरा	८ जिनपतिसूरि बधामणा गीत	७
९	आसिगु	९ चन्दनबाला रास	७
१०	जिनपतिसूरि शिष्य	१० बालावबोध प्रकरण	८
११	,, ,,	११ शांतिनाथ रास	९
१२	सुमति गणि	१२ श्री नेमिनाथ रास	९
१३	शाह रयण	१३ श्री जिनपति सूरि धवलगीत	१०
१४	कवि भत्तउ	१४ श्री जिनपति सूरि गीत	११
१५	पाल्हणु	१५ नेमिबारहमासो रासो	१२
१६	जिनेश्वर सूरि	१६ श्री महावीर जन्माभिषेकः	१२
१७	जिनेश्वर सूरि शिष्य	१७ श्री आदिनाथ बोलिका	१३
	,, ,,	१८ श्री वासुपूज्य बोलिका	१४
	,, ,,	१९ ,, ,,	१५
	,, ,,	२० शांतिनाथ बोलिका	१५

For Private and Personal Use Only

	,, ,,	२१ श्री महावीर बोलिका	१६
	,, ,,	२२ श्री जिनेश्वर सूरि (मदनयुद्ध)	१६
	जिनेश्वर सूरि शिष्य	२३ मंगल गाथा	१७
	,, ,,	२४ गुरु गुण षट्पद	१७
१८	अज्ञात	२५ अंबिकादेवी पूर्व भव वर्णन तलहरा	१८
१९	,,	२६ श्री वीर तिलक चौपाई	१९
२०	कवि छल्हु	२७ क्षेत्रपाल द्विपदिका	१९
२१	अज्ञात	२८ मयणरेहा रास	२०
२२	अमरप्रभ सूरि शिष्य	२९ संख वापी पुर मण्डण श्री महावीर स्तोत्रम्	२१
२३	देल्हणि	३० गयसुकमाल रास	२२

चौदहवीं शताब्दी

२४	लक्ष्मी तिलक	३१ श्री शांतिनाथ देवरास	२३
२५	सोममूर्ति	३२ गुरावली रेलुआ	२४
	,,	३३ श्री जिनप्रबोध सूरि चच्चरी	२४
	,,	३४ जिन प्रबोध सूरि बोलिका	२४
२६	पद्मरत्न	३५ श्री जिन प्रबोध सूरि वर्णन	२५
२७	ठक्कुर फेरू	३६ श्री युगप्रधान चतु:पदिका	२६
२८	लखमसीह	३७ श्री जिनचन्द्र सूरि वर्णना	२७
२९	जिनचन्द्र सूरि शिष्य	३८ जिनचन्द्र सूरि फावर	२७
	,, ,,	३९ श्री जिनचन्द्र सूरि चतुष्पदी	
३०	सहजज्ञान	४० श्री जिनचन्द्र सूरि वीवाहलउ	२८
३१	चारित्रगणि	४१ श्री जिनचन्द्र सूरि रेलुआ	२९
३२	ख०जिनचन्द्र सूरि शि.	४२ युगवर गुरु स्तुति	२९
३३	हेमतिलक सूरि शिष्य	४३ श्री हेमतिलक सूरि संधि	३०

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

३४ ख. जिनप्रभ सूरि शि.	४४ जिनप्रभ सूरि गीत त्रय	३१
३५ जयधर्म (ख. जिन-कुशल सूरि शिष्य)	४५ श्री जिनकुशल सूरि रेल्हुया	३२
३६ अज्ञात	४६ श्री जम्बूस्वामि सत्क वस्तु	३३
३७ अज्ञात	४७ श्री थूलिभद्र मुनि (मदनयुद्ध) वर्णनाबोलि	३४
३८ "	४८ श्री शालिभद्र रेलुआ	३४
३९ "	४९ धर्म्म चच्चरी	३५
४० "	५० कृपणनारी संवाद	३५
४१ "	५१ श्री चतुर्विंशति जिन चतुष्पदिका	३६
४२ शांतिभद्र	५२ चतुर्विंशति नमस्कार	३६
४३ अज्ञात	५३ चतुर्विंशति तीर्थंकर नमस्कार	३७
४४ "	५४ मातृका बावनी	३८
४५ वीरप्रभ मुनि	५५ श्री चन्द्रप्रभ कलश	३८
४६ ख. जिनचन्द्र सूरि शि.	५६ श्री आदिनाथ बोली	३९
४७ अज्ञात	५७ श्री नेमिनाथ बोली	३९
४८ "	५८ श्री युगादिदेव जन्माभिषेक कलश	४०
४९ "	५९ श्री युगादिदेव कलश	४०
५० "	६० श्री चन्द्र प्रभ स्वामि कलश	४१
५१ "	६१ श्री वासुपूज्य कलश	४२
५२ रामभद्र	६२ शांतिनाथ कलश	४२
५३ अज्ञात	६३ श्री शांतिनाथ कलश	४३
५४ "	६४ श्री नेमिनाथ स्तवनम्	४४
५५ "	६५ श्री वीर जिन कलश	४४
५६ "	६६ श्री महावीर कलशः	४५

For Private and Personal Use Only

५७	अज्ञात	६७	श्री वीर जिन कलश	४५
५८	”	६८	सर्व जिन कलश	४६
५९	जिनपद्मसूरि	६९	श्री शत्रुञ्जय चतुर्विंशति स्तवनम्	४७
६०	अज्ञात	७०	श्री स्थूलिभद्र बोली	४७
६१	”	७१	माल उघटणं	४८
६२	”	७२	आशातना षटपद	४८
६३	”	७३	शासनदेवता गीत पदानि	४९
६४	”	७४	ज्ञान छप्पय	४९
६५	धर्मसूरि	७५	श्री समेत शिखर तीर्थ नमस्कार	५०
६६	अज्ञात	७६	सम्मेत शिखर गीत	५०
६७	”	७७	श्री शत्रुञ्जय चैत्य परिवाड़ी	५१
६८	”	७८	श्री शत्रुंजय महातीर्थ गीतम्	५१
६९	”	७९	स्थूलिभद्र गीतम्	५२
७०	”	८०	श्री सुदरिसण महारिषि गीतम्	५२
७१	”	८१	श्री स्थूलिभद्र गीतम्	५३
७२	”	८२	श्री वयरस्वामि गीतम्	५३
७३	”	८३	मधु बिन्दु गीतपद	५३
७४	शांतिसूरि	८४	श्री सीमंधर स्वामि स्तवनम्	५४
७५	अज्ञात	८५	गिरनार तीर्थ स्तवनम्	५४
७६	”	८६	” ” ”	५५
७७	मंत्री धारिसिंह	८७	श्री नेमिनाथ धुल	५५
७८	देवचन्द्र सूरि	८८	रावण पार्श्वनाथ वीनती	५६
७९	अज्ञात	८९	जिनस्तवन	५६
८०	”	९०	साऊका पार्श्वनाथ स्तवनम्	५७
८१	”	९१	कोका पार्श्वनाथ स्तवनम्	५७
८२	”	९२	महुरा पार्श्वनाथ जिन विज्ञप्ति	५८

For Private and Personal Use Only

८३ अज्ञात	९३ श्री आदिनाथ कलश	५८
८४ राजशेखर	९४ श्री पार्श्वनाथ स्तोत्रम्	५९
८५ उदयकरण	९५ श्री जीराउला पार्श्वनाथ स्तोत्रम्	५९
	९६ श्री फलवद्धि पार्श्व स्तोत्र	५९
८६ विनयप्रभ	९७ श्री सीमंधरस्वामि स्तवनम्	६०
	९८ श्री विमलाचल आदिनाथ स्तवनम्	६०
८७ अज्ञात	९९ श्री अतरीक पार्श्वनाथ स्तवनम्	६१
	पन्द्रहवीं शताब्दी	
८८ मेरुनंदन	१०० श्री गौतम स्वामि छंद	६२
”	१०१ श्री गौतम स्वामि छंद	६३
”	१०२ स्थूलभद्र छंद	६३
”	१०३ स्थूलभद्र छंद	६३
८९ रत्नशेखर सूरि	१०४ गौतम रास	६४
९० कान्ह	१०५ अंचल गच्छनायक गुरुरास	६५
९१ पहुराज	१०६ जिनोदयसूरि गुण वर्णन	६६
९२ जयसिंह सूरि	१०७ प्रथम नेमिनाथ फागु	६७
	१०८ द्वितीय नेमिनाथ फागु	६७
९३ राजतिलक	१०९ जंबूस्वामि फाग	६८
९४ जयशेखर सूरि	११० द्वितीय नेमिनाथ फागु	६८
९५ गुणचन्द सूरि	१११ वसंत फागु	६९
९६ अज्ञात	११२ श्री जयतिलक सूरि भास	७०
९७ ”	११३ ” ” ”	७१
९८ ”	११४ ” ” ”	७१
९९ जयकेशर मुनि	११५ जयतिलक सूरि चउपई	७२
१०० अज्ञात	११६ श्री जयतिलक सूरि भास	७२
१०१ जयतिलक सूरि	११७ गिरनार चैत्य परिपाटी	७३

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

	११८ आबू चैत्य परिपाटी	७३
१०२ जयतिलक सूरि शिष्य	११९ श्री नेमिनाथ रास	७४
”	१२० सोपारा विनती	७४
”	१२१ आदिनाथ विवाहलउ	७५
१०३ अज्ञात	१२२ मेरु तुग सूरीश्वर रास	७६
१०४ ”	१२३ नागपुरीय गच्छ सुगुरु फाग	७७
१०५ उ.मुनिरत्न गणि शि.	१२४ तपागच्छ गुरु नामावली	७८
१०६ अज्ञात	१२५ श्री रत्नसागर सूरि भास	७८
१०७ ”	१२६ सुहगुरु चउपई	७९
१०८ ”	१२७ श्री गुरु गीतम्	७९
१०९ ”	१२८ तपागुरावली	८०
११० वच्छ भण्डारी	१२९ आदिनाथ घनल	८१
१११ जिनवर्द्धन सूरि	१३० पूर्वदेश तीर्थमाला	८१
११२ अज्ञात	१३१ खर. गुरुवावली	८२
११३ सिद्धसूरि	१३२ पाटण चैत्य परिपाटी	८३
११४ ख.जिनभद्रसूरि शि.	१३३ खरतरगुरु गुण छप्पय	८४
११५ देवदत्त ख.	१३४ जिनभद्रसूरि धूवड	८५
११६ भैरदूदास	१३५ जिनभद्रसूरि गीतम्	८५
११७ जिनभद्रसूरि शिष्य	१३६ श्री जिनभद्रसूरि गीतम्	८६
	१३७ श्री जिनभद्रसूरि अष्टक	८६
११८ धनराज	१३८ मंगल कलश विवाहलु	८७
	१३९	८७
११९ अज्ञात	१४० नगरकोट चैत्य परिपाटी	८८
१२० सोमसुन्दरसूरि शि.	१४१ देव द्रव्य परिहार चौपाई	८८
१२१ अज्ञात	१४२ मृगा पुत्र कुलक	८९
१२२ जयशेखरसूरि शि.	१४३ उपधान सन्धि	९०

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

१२३	अज्ञात	१४४ कयलपाट मंडण पार्श्व स्तवनम्	९१
१२४	”	१४५ कयलवाड पार्श्वनाथ स्तोत्र	९२
१२५	”	१४६ श्री नाडुलाई महावीर स्तवनम्	९२
१२६	सज्जण सुत	१४७ श्री पार्श्वनाथ स्तोत्रम्	९३
१२७	अज्ञात	१४८ श्री चतुर्विंशति जिन स्तवनम्	९३
१२८	”	१४९ धर्माधर्म विचार	९४
१२९	”	१५० नदीसरवर चउपई	९४
१३०	”	१५१ विमलाचल आदिनाथ स्तवनम्	९५
१३१	”	१५२ धर्म प्रेरणा दोहा	९५
१३२	हरिकलश	१५३ कुरुदेश तीर्थमाला स्तोत्रम्	९६
		१५४ पूर्व दक्षिण देश तीर्थमाला	९६
		१५५ श्री गुजरात सोरठदेश तीर्थमाला	९७
		१५६ बांगड़ देश तीर्थमाल स्तोत्रम्	९७
		१५७ दिल्ली मेवाती देश चैत्य परिपाटी	९८
		१५८ आदिश्वर वीनती	९९
		१५९ जीरावल्या वीनती	९९
१३३	पद्मानंद सूरि	१६० श्री चउवीसवटा श्री पार्श्वनाथ चैत्य	९९
		१६१ श्री चउवीसवटा पार्श्वनाथ स्तुति	१००
		१६२ वर्द्धनपुर चैत्य परिपाटी स्तवनम्	१००
१३४	अज्ञात	१६३ द्वादश भाषा-निबद्ध तीर्थमाला	१००
१३५		१६४ कोशा प्रतिबोध	१०१
१३६	परमानंद ?	१६५ शत्रुञ्जय चैत्य परिपाटी	१०२
१३७	अज्ञात	१६६ शत्रुञ्जय चैत्य परिपाटी	१०२
१३८	माणिक्य सूरि	१६७ राजीमती उपालंभ स्तुति	१०३
१३९	डुंगरु	१६८ ओलंभडा बारहमासा	१०३
१४०	धनप्रभ	१६९ श्री नेमिनाथ झीलणा	१०४

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

१४१ रत्नाकरमुनि	१७० श्री नेमिनाथ वीनति	१०५
१४२ अज्ञात	१७१ श्री गिरनार भास	१०५
१४३ ”	१७२ गिरनार वीनति	१०६
१४४ ”	१७३ श्री नेमिनाथ वीनति	१०६
१४५ ”	१७४ बारहव्रत चउपई	१०७
१४६ ”	१७५ सुगुरु समाचारी	१०७
१४७ समरा	१७६ नेमि चरित रास	१०८
१४८ राजलच्छी	१७७ शिव चूला गणिनी विज्ञप्ति	१०९
१४९ अज्ञात	१७८ कीर्तिरत्न सूरि फागु	१०९
१५० कवियण	१७९ मातृका फाग	११०
१५१ जयमूर्ति गणि	१८० मातृका	१११
१५२ अज्ञात	१८१ दीपक माई	११२
१५३ ”	१८२ आत्म बोध मातृका	११२
१५४ ”	१८३ शृंगार माई	११३
१५५ ”	१८४ वैराग्य चउपइ	११३
१५६ ”	१८५ सुभाषित दोहि	११४
१५७ ”	१८६ योगी वाणी	११४
१५८ ”	१८७ सोधति नगर शांतिनाथ स्तवन	११४
१५९ ”	१८८ जीराउलि वीनती	११५
१६० ”	१८९ विमल मंत्री रास	११६
१६१ शांति सूरि	१९० श्री अर्बुदाचल हीयाली	११६
	सोलहवीं शताब्दी	११६
१६२ मतिशेखर	१९१ बावनी	११७
१६३ अज्ञात (केहरू ?)	१९२ जिनभद्र पट्टे जिन चन्द्र सूरि गीत	११७
१६४ अज्ञात	१९३ रयणावली	११८
१६५ कल्याण चन्द्र	१९४ कीर्तिरत्न सूरि बीवाहलउ	११९

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

		१९५	श्री कीर्तिरत्न सूरि चउपई	११९
१६६	विनयचूलागणिनी	१९६	हेमरत्नसूरि फागु	१२०
१६७	अज्ञात	१९७	अमररत्नसूरि फागु	१२१
१६८	सेवक	१९८	शालिभद्र फागु	१२१
१६९	लखमसीह	१९९	शालिभद्र चौपई	१२३
१७०	देपाल	२००	कायावेड़ी सझाय	१२४
१७१	जयानंद	२०१	ढोला मारू की वार्ता दोहाबद्ध	१२४
१७२	धनसार	२०२	उपकेश गच्छ ऊएसारास	१२६
१७३	कीरति	२०३	आराम शोभारास	१२७
१७४	लब्धिसागर सूरि	२०४	बीशी	१२८
१७५	कोल्हि	२०५	कंकसेन राजा चौपई	१२९
१७६	पद्ममंदिर	२०६	गुणरत्नसूरि विवाहलउ	१३०
		२०७	श्री देवतिलेकोपाध्याय चौपाई	
१७७	क्षेमराज	२०८	फलवर्धी पार्श्वनाथ रास	१३१
१७८	अज्ञात	२०९	प्रभव जंबूस्वामि वेलि	१३२
१७९	जयवल्लभ	२१०	नेमिपरमानंद वेलि	१३३
१८०	कनक	२११	वल्कल चीर ऋषि वेलि	१३३
१८१	सालिग	२१२	बलभद्र वेलि	१३४
१८२	अज्ञात	२१३	हेमविमलसूरि विवाहलउ	१३५
		२१४	हेमविमलसूरि फाग	१३५
१८३	विनयरतन	२१५	सुभद्रा चौपई	१३६
१८४	हेमध्वज	२१६	जैसलमेर चैत्य परिपाटी	१३७
१८५	अज्ञात	२१७	परनिंदा चौपाई	१३८
१८६	भक्तिलाभ	२१८	श्री जिनहंससूरि गुरु०	१३९
१८७	भावसागरसूरि शिष्य	२१९	चैत्य परिपाटी	१४०
१८८	विनय अज्ञात	२२०	महावीर २७ भवस्तवन	१४०

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

१८९ कमल धर्म	२२१ चतुर्विंशति जिनतीर्थमाला	१४१
१९० धर्म समुद्र	२२२ सुदर्शन चौपई	१४२
१९१ विद्यारत्न	२२३ मंगल कलश रास	१४३
१९२ उ० हर्षप्रिय	२२४ शाश्वत सर्वजिन द्विपंचाशिका	१४५
१९३ भाव उपाध्याय	२२५ विक्रम चरित्र रास	१४६
१९४ विनयसमुद्र	२२६ विक्रम पंचदण्ड चौपइ	१४८
	२२७ नमिराजऋषि संधि	१५०
	२२८ नमिराजऋषि कुलं	१५१
	२२९ चित्रसंभूति कुलक	१५१
	२३० इलापुत्र कुलक	१५२

पूर्ति रूप संक्षिप्त विवरण

	२३१ साधु वंदना गाथा १०४	महिमा
	२३२ शील रास गाथा ४४	मोती०
	२३३ सिंहासन बतीसी चौपाई सं० १६११ बीकानेर	अनुप०
	२३४ नल दवयंती चरित्र सं० १६१४	मोती०
	२३५ चौवीसी	अभय०
	२३६ ब्रह्मचरी गाथा ५५	अनुप०
१९५ पार्श्वचन्द्रसूरि	२३७ चौवीसी	अभय०
,, ,,	२३८ गच्छाचार पंचाशिका गाथा ५०	अभय०
,, ,,	२३९ षड्विंशति द्वार गर्भित वीर स्तवन सं० गाथा ९५	अभय०
१९६ अज्ञात	२४० वाहणनु फाग गाथा १२ सं० १५८७	प्र०
१९७ आगम माणिक्य	२४१ जिनहंस गुरु नवरंग फाग गाथा २७	प्र०

For Private and Personal Use Only

१९८ अज्ञात	२४२ साधु वंदना गाथा २४७	नाहर
१९९ देवसुंदर	२४३ आषाढ भूति सझाय गाथा ८४ सं० १५८७	
२०० माणिकराज	२४४ नल दमयंती चरित्र रास सं० १५९०	दि० जयपुर
२०१ उदयरत्न	२४५ अजापुत्र रास सं० १५९८	वृ० ज्ञान०
२०२ धणचंद	२४६ चित्रसेन पदमावती गाथा ११०२	दि० जयपुर
२०३ खेम	२४७ नेमिरास गाथा ३३ सं० १५९६	
२०४ ऋषिविजय	२४८ अठारह नाता सझाय गाथा १०१	
२०५ माणिकसुंदर	२४९ नेमिश्वर चरित्र	
२०६ अज्ञात	२५० नेमिनाथ रास	प्र०
२०७ ,,	२५१ चंपकमाला चौपइ गाथा ६४	
२०८ दयारत्न शिष्य	२५२ श्री दयारत्न वाणारस गीतम् गाथा ८	
२०९ ईसर सूरि	२५३ ईसर शिक्षा गाथा २९	अभय०
,,	२५४ नंदिषेण ६ ढाल० गाथा ७६	पुण्य०

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मरू-गूर्जर जैन कवि और उनकी रचनाएं

ग्यारहवीं शताब्दी

(१) पं० धनपाल (महाराजा भोज के सभा पंडित)

(१) सत्यपुरीय महावीर उत्साह पद्य १५

आदि:—जिणव जेण दुट्टु कम्म, बलवंता मोडिय,
चउ कसाय पसरत जेण, उम्मूल त्रितोडिय,
तिहुयण-जगडण-मयण सरहि, तणु जासु न भिज्जइ।
इयर नरहि **सच्चउरि-वीरू**, सो किम जगडिज्जइ ॥१॥

अन्त:—**कोरिट, सिरिमाल, धार, आहाडु, नराणउं,**
अणहिलवाडउ, विजयकोट्टु, पुण **पालित्ताणु** ।
पिक्खवि ताव बहुत्त ठाम, मणि चोज्जु पईसइ,
ज अज्जवि **सच्चउरि** वीरू, **लोयणिहि** न दीसइ ॥१३॥

सहस्सेण वि लोयणह, तित्थु न होई नियतह,
वयण सहस्सेहि गुणनतुट्टु, निट्ठियहि थुणतह।
एक्क जीह **'धणपालु'** भणइ, इक्कु ज मह **नियतणु**,
कि वन्नउ **सच्चउरि-वीरू**, हउ पुणु इक्काणणु ॥१४॥

रक्खि सामि पसरंतु मोहु, नेहुंडुय तोडहि,
सम्मदंसणि नाणु चरणु, भड्डु कोहु विहाडहि।
करि पसाउ सच्चउरि-वीरू, जइ तुहु मणि भावइ,
तइ तुट्टइ **'धणपालु'** जाउ, जहि गयउ न आवइ ॥१५॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पं० धणपालकृत: श्रीसत्यपुरमंडन-श्रीमहावीर उत्साहः समाप्तः।

प्र० जैन-साहित्य संशोधक खं० ३ अं० ३

वि० तिलकमंजरी रचयिता, महाकवि शोभनमुनि के भ्राता।

बारहवीं शताब्दी

(२) वर्द्धमान सूरि

(२) वीर जिणेसर पारणउ गा० ४३

आदि:—जस निसुणह एकग्ग मण, धम्मि धरेविणु चित्तु ।
वीर जिणिंदह पारणउ, कोसबियहि ज वित्तु ॥१॥

अन्त:— **वद्धमाण** सूरिहिं पणय, हरिपत्थु थुइ वाय ।
भवि भवि तेम पसीय महु, जेम थुणउं तुह पाय ॥४३॥
श्रीवीरजिनेश्वरस्य पारणकं समाप्तमिति ।

[सं० १२८६ लिखित प्रकरण पुस्तिका, ताड़पत्रीय प्रति-मणिसागरसूरि संग्रह, कोटा, पाटण भं० सूची पृ० ४१२]

प्र० हिन्दी अनुशीलन वर्ष ३ अंक २

वि० वर्द्धमान सूरि ११-१२ वीं शताब्दी में दो हो गये है—

१ खरतर विरुद पाने वाले जिनेश्वरसूरि के गुरु वर्द्धमानसूरि समय सं० १०५५ से सं० १०८० ।

२ द्वितीय अभयदेवसूरि के शिष्य, समय सं० ११३० से ११७२

संभवत: उपर्युक्त रचना द्वितीय वर्द्धमानसूरि की होगी।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(३) पल्ह कवि

(३) जिनदत्तसूरि स्तुति छप्पय १०

आदि:—जिण दिट्ठइ आणदु चडइ, अइ रहसु चउग्गुणु,
जिण दिट्ठइ झड़हड़इ पाउ, तणु निम्मल हुइ पुणु,
जिण दिट्ठइ सुहु होइ कट्ठु, पुव्वुक्किउ नासइ,
जिण दिट्ठइ हुई रिद्धि, दूरि दारिद्दु पणासइ ।।
जिण दिट्ठइ हुइ सुई धम्म मइ, अबुहहु काइ उइखहु ।
पहु नव फणि मंडिउ 'पास' जिणु, अजयमेरि कि न पिक्खहु ।१।

अन्त:—वक्खाणियइ त परमतत्तु जिण पाउ पणासइ ।
आराहियइ त वीरनाहु, कइ 'पल्हु' पयासइ ।।
धम्मु तु दय संजुत्तु जेण, वर गइ पाविज्जइ ।
चाउ तु अण खंडियउ जु, बंदिणु सलहिज्जइ ।
जइ ठाउ त उत्तिमु मुणिवरहवि, पवर वसहि हो चउर णर
तिम सुगुरु सिरोमणि सूरिवर, खरतर सिरि जिणदत्त वर।१०।

(१) इतिश्री पट्टावली षटपदानि । संवत् ११७० वर्षे अश्व युगाद्य पक्षे ११ तिथौ श्रीमद्धारानगर्यां श्रीखरतर गच्छे विधि-मार्ग प्रकाशि, वसतिवासि श्री जिणदत्त सूरीणां शिष्येण जिन रक्षित साधुना लिखितानि ।

(२) इतिश्री पट्टावली ।। संवत् ११७१ वर्षे पत्तनमहानगरे श्री जयसिंह देव विजयि राज्ये श्री खरतर गच्छे योगीन्द्र युगप्रधान वसतिवासी जिनदत्त-सूरीणां शिष्येण ब्रह्मचंद्र गणिना लिखिता । शुभं भवतु । श्री पार्श्वनाथाय नमः । सिद्धि र तु ।।

प्र० अपभ्रंश काव्य-त्रयी । ऐति० जैन काव्य संग्रह पृ० ३६५

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(४) श्री जिनदत्त सूरि शि० या भक्त

(४) श्री जिनदत्तसूरि स्तुति पद्य १६ अपूर्ण

आदि— जो अमाणु सिरि वद्धमाणु, मय माण विवज्जिउ ।
सिद्धि पुरधिनि वद्धमाणु, भव पंजरु भजिउ ॥
लोयालोय पयासणिक्क, मुरु भुयण दिवायरु ।
सो जिणिंदु नय अमर विंदु, वदिवि करुणायरु ।
सथुणिहि वीर जुगपवर गुरु, गुरु भावहु संठविय मणु ।
जिण सासण गयणंगण तरणि, सिव-पहगमण महासमणु ॥१॥

अंत — अप्राप्त

[जैसलमेर ताड़पत्रीय प्रति क्र० १५६ पत्र ५७ से ५६ में अपूर्ण प्राप्त]

प्र० यु० जिनदत्तसूरि, परिशिष्ट नं० ३

(५) धर्मसूरि शिष्य

(५) धर्मसूरि बारह नावउं (बारह मासा) गा० ५०

आदि—तिहुयण मणि चूड़ामणिहि, बारह नावउ धर्मसूरि नाहह ।
निसुणेहु सुयणहु नाण सणाहह, पहिलउं सावण सिरि फुरिय ॥१॥
कुवलय दल सामल घणु गज्जइ, नमद्दलु मंडल झुणि छज्जइ ।
बिज्जुलडी झबकिहि लवइ मणहरू, वित्थारेवि कलासु ।

× × ×

अन्त—अट्ठाइय वरिसेहिं जसु लोए समागमु ।
अहिय मासु संपत्तो सो सहिय मणोरमु ॥४८॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तहि वदउ जस सूरि सुहकारु, तव सिरि कन्ह वयंस पयारु।
धर्मसूरि बारह नावउ संतह, हरउ दुरिउ सुह करउ पढंतह ।।४९।।
विग्नतिय निसुरोहि, सासण दिवि सायरु ।
नंदउ **धर्मसूरि** लोए, जां चन्द दिवायरु ।।५०।।
इति बारह नावउं सम्मतं

—इसके पश्चात् रविप्रभ सूरि रचित धर्म सूरि स्तुति है ।

प्राप्ति स्थान—पाटण भंडार—ताडपत्रीय प्रति पृ० ३७ । प्रतिलिपि—अभय जैन ग्रन्थालय । प्र० हिन्दी अनुशीलन वर्ष ६ अं० ४

तेरहवीं शताब्दी

(६) श्रा० लखण (लक्ष्मण)

(६) जिनचन्द्रसूरि काव्याष्टम् गा० ८

आदि—**अभय** सूरि सिरि सीसु सगुण, जिण**वल्लहु** दिट्ठउ ।
तसु पट्टह **जिणदत्त** सूरि, अवट्ठमि बइट्ठउ ।।
दिव्वं नाण पहाण वलिण, ज कियउ अचंभमु ।
वालत्तणि लिअ मग्गि सगुरि, **रासल** अगुब्भमु ।।
गुरु पारतंतु अगमहि भतु, **जिणयत्तसूरि** फुडु उच्चरिवि ।
दुप्पसहु जाव वढियइ सुहु, तुम्ह धम्मु कमि कमि करिवि ।।१।।

अन्त—अज्जु दियहु सकयत्थु, अज्जु नर वन्नु सुहावउ ।
अज्जु वारु रमणीउ, अज्जु संवच्छरु आवउ ।।
अज्जु जोउ जयवंतु, अज्जु महु करणु पियंकरु ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अज्जु मित्तु सुह महत्तु, अज्जु गह-रासि सुहंकरु ॥
सकयत्थु अज्जु लोयण जुयलु, हिअइ अज्जु वढियइ सुहु।
गउ पाउ अज्ज दूरंतरिण, दिट्ठइ गुरु **जिण**चंद पहु ॥८॥

कृतम् श्रावक लखणेन, पत्र २ अभय जैन ग्रन्थालय

वि० दूसरे एवं तीसरे पद्य में 'लखणु भणइ' पाठ है।
(मणिधारी) जिनचन्द्र सूरि का समय सं० १२११ स १२२३ तक का है।

---

(७) वज्रसेन सूरि (देव सूरि शिष्य)

(७) श्री भरहेसर बाहुबलि घोर गा० ४५

आदि—पहिलउं रिसह जिणिंदु नमेवि, भवियहु निसुणहु रोलु धरेवि।
बाहूबलि केरउ विजउ ॥१॥

सयलह पुत्तह राणिव देवि, भरहेसरु निय पाट ठवेवि।
रिसहेसरि संजमि थियउ ॥२॥

मध्य—**देवसूरि** पणमेवि सयलु, तिय लोय वदीतउ
वयरसेण सूरि भणइ एहु, रख रंगु जु वीतं ॥२५॥

अन्त—अवरु म करिसउ माणु ए, **वयरसेणसूरि** वज्जर ए।
भावण तिण भावेउ, जिव भावी भरहेसरिहिं,
तउ केवल पावेहु ए, राजु कारंता तेण जिव ॥४५॥

वि० वादि देवसूरि शि० वज्रसेन सूरि का समय सं० १२३५ के लगभग
सं० १४३० लि० प्रति में। प्र० शोध पत्रिका ३/३

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(८) सिरिमा महत्तरा (स्व० जिनपति सूरि आज्ञानुवर्ती साध्वी)

(८) जिनपति सूरि वधामणा गीत गा० २०

सं० १२३२ के लगभग

आदि — आसी नयरी वधावणउ, आयउ जिणपतिसूरि
जिणचंदसूरि सीसु आइया लो ।
वधावणउ वजावि सुगुरु जिनपतिसूरि आविया लो । आंकणी ।

मध्य — **हाले महतो** इम भणइ, संघह मणोरह पूरि ।
बारहसं बत्तीसा ए, मासि जेठह सुद्धि तीजह । जि० । ८ ।
सिरिमा महत्तर इम भणइ इव पहु होसइ कांइ ।।

अन्त — घरि घरि हुअउ वधामणउ, सरगहि रंजियउ जिणचंदसूरि ।
आसिया नयरि वधावणउ ।। २० ।।

[अनूपसंस्कृत लायब्रेरी]

वि० यह रचना साहित्यक भाषा में न हो कर बोलचाल की सरल भाषा में है। प्रति भी १७ वीं शती से पूर्व की प्राप्त नहीं है अतः भाषा में कुछ परिवर्तन हुआ संभव है।

(पाठ भेद सह प्र० हिन्दी अनुशीलन वर्ष १२ अं० १)

---

(९) आसिगु (शांति सूरि भक्त)

(९) चन्दनबाला रास गा० ३५ जालोर

आदि—जिण अभिनवि सरसइ भणए, पुहविहि भरह खेत्रि ज वीत ।
वीर जिणदह पारणाए, निसुणउ **चंदनबाल** चरित्तु । १ ।।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्रथम लील कसमीर करंती, ललिय लोल कल्लोल वहंती ।
अठदल कमल मज्झि उप्पत्ती, सकल सबल अम्हि तालह दिन्ति ।। २ ।।

अन्त: संलेपिणी जिण दिन्नं दाणु, वीर जिणंदह केवल नाणु ।
चंदण पढम पवत्तिणिय, परमेसरह निव्वाणह जंति ।
वत्तीमासय खित्त तहि, अखलिउ सुह सिद्धिहि माणति ।। ३४ ।।
एहु **रासु** पुण वृद्धिहि जंति, भाविहि भगतिहिं जिणहरि दिंत ।
पढइ पढावइ जे सुणइ, तह सवि दुक्खइं खइयह जंत्ति ।
जालउर नउरि **आसुगु** भणइ, जम्मि जम्मि तूसउ सरसत्ति ।।३६।।

।। इति श्री चन्दनबाला रासः ।।

(सं० १४३७ की प्रति से)

प्र० राजस्थान भारती ३/३-४

वि० इस कवि का जीवदया रास सं० १२५७ सहजिगपुर में रचित है जिसमें कवि ने अपना विशेष परिचय दिया है (प्र० भारतीय विद्या भा-३) दे० जै० गु० क० भा० ३ पृष्ठ० ३९५

---

(१०) जिनपतिसूरि शिष्य

(१०) बालावबोध प्रकरण गा० ११६

आदि –पणमवि जिणवइ देउ गुरु, अनु सरसइ सुमरेवि
धम्मुवएसु पयंपियइ, सुणि अवहाणु करेवि ।।१।।

मध्य –दाणु न दिज्जइ भोग न भुंजहिं, सुय पियय मपिय माइ सुसिज्जहिं
देव गुरु वि तिण सम वि गणिज्जहिं, जुत्ताजुत्तहिं नवि याणिज्जहि ।।६८।।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अन्त—धम्मुवएसं पयं आराहेहिंति जे महासत्ता ।
चारित्त चंदन धवलिय तिजया जाहिंति ते सिद्धि ॥११६॥
[जीवदया प्रकरण काव्य त्रयी में सानुवाद प्रकाशित]

---

(११) श्री जिनपति सूरि शि० (ख)

(११) शांतिनाथ रास (अपूर्ण प्राप्त)

(स० १२५८ के लगभग)

आदि—पंचमु भरह नरिंदो, जिणवइ सोलसमो,
संति सुहंकर कंदो, पणमिय पय पड़िवनउ ।
चरिउ किंपि पभणउं तसु नाहह, गुरु चूडामणि भुविय पावह ।
त निसुणतह भवियह सवणिइं. भरियहं अमीय रसायण म घणिउं ।
खेडि नयरि जो संति **उद्धरणि** कराव्यु, विहि समुदय ससुभत्ति
जिणवइसूरि ठावियु ॥

अन्त—अप्राप्त

इसमें खेडनगर के शांति जिनालय का उल्लेख है जो कि उद्धरण साह कारित और सं० १२५८ में जिनपति सूरि द्वारा प्रतिष्ठित हुआ था ।

(प्रति—अपूर्ण, जेसलमेर भण्डार)

---

(१२) सुमति गणि (ख० जिनपति सूरि शिष्य)

(१२) श्री नेमिनाथ रास गा० ५८

(सं० १२७० के लगभग)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आदि -- पणमवि सरसइ देवी, सुय रयण विभूसिय
पभणिसु नेमि सुरासो, जण निसुणहु सूसिय ॥१॥

अन्त—सिरि जिणवइ गुरु सीसिइं, इहु मणहर भासु ।
नेमि कुमारह रइउ, गणि **सुमइणि** रासु ॥५७॥
सासण देवी अबाई, इउ रास दियतह
विग्घू हरउ सिग्घू, संघह गुणवंतह ।५८।

वि० श्री सुमति गणि की दीक्षा सं १२६० में हुई थी। इनकी सबसे बड़ी रचना 'गणधरसार्धशतक वृहद् वृत्ति' सं० १२९५ की है जिसका परिमाण १२१०५ श्लोकों का है।

[१४ वीं १५ वीं शती की लिखित २ प्रतियां, जैसलमेर भंडार]
प्र० हिन्दी अनुशीलन वर्ष ७ अं० १

(१३)शाह रयण (ख० जिन पति सूरि भक्त श्रावक)

(१३) श्री जिनपति सूरि धवल गीत गा० २०

सं० १२७८ के लगभग

आदि—वीर जिणेसर नमइ सुरेसर, तस पह पणमिय पय कमले ।
युगवरं **जिनपति सूरि** गुण गाइसो, भत्तिभर हरसिहि मनि रमले ।१।

अन्त—(सं० १२७७)

अन्न दिणंतरे बार सतहोतरे, मास असाढि जिण अणसरी ए ।
मन्न सुर झाणहि सिय दसमी दिवसहि, पहुतउ सूरि अमरापुरी ए ॥१९॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

एहु **श्री जिणपति सूरि** गुरु जुगपवरु, **'साह रयण'** इम संथुणइ ए
समरइ जे नर नारि निरंतर, तहा घर नव निधि संपजइ ए ॥२०॥

(प्र० ऐ० जैन काव्य संग्रह पृ० ६

मूलप्रति—सं० १४६३ लिखित अभय जैन ग्रन्थालय संग्रह ग्रन्थ पुस्तिका

---

(१४) भत्तउ (ख० जिन पति सूरि श्रावक)

(१४) श्री जिन पति सूरि गीत गा० २०

सं० १२७८ लगभग

आदि—वीर जिणेसर नमीउ सुरेसर, तस पह पणमिय पय कमले ।
युगवर **जिनपति सूरि** गुणमंडन, गुण गण गाइसो मति रमले ॥१॥

अन्त—चरण कमल नरवर सुर सेवइ, मंगल केलि निवास हुए ।
थूभह-रयण **पालणपुर** नयरिहिं तिहुअण पूरइ ए आसहुए ॥१६॥
लीणउ कमलेहि भमर जिम **भत्तउ**, पाय कमल पणमिय कहइ ।
समरइ ए जे नर नारि निरंतर, तिहां घरे रिद्धि नव निहि लहइए ॥२०॥

प्र० ऐ० जैन काव्य संग्रह पृ० ८

दि० शाह रयण एवं भत्तउ रचित गीत द्वय में छुई पद्य व पंक्तियां तो एक ही हैं। दोनों गीत एक दूसरे से प्रभावित हैं।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(१५) पाल्हणु

(१५) नेमि बारहमास रासो पद्य १६

आदि—कासमीर मुख मंडण देवी, वाएसरि पाल्हणु पणमेवी ।
पदमावतिय चक्केसरि नमिउं, अंबिका देवी हउं वीनवउं ॥
चरिउ पसायउ नेमिजिण केरउं, कवित्तु गुण धम्म निवासो ।
जिम राइमइ विओणुभओ, बारहमास पयासउं रासो ॥१॥
१५ वें पद्य में भी 'पाल्हणु भणए' कवि का नाम प्रयुक्त है ।

अन्त—इण परि भणिया बारहमासा, पढत सुणंतह पूजउं आसा ।
रायमइ नेमिकुमर वहु चरिउं, संखेविण कवि इणि परि कहिउं ।
अबिक देवि सासण देवि माइ, सत्र सानिधु करिजउ समुदाइ ॥१६॥

सं० सं० १२८८ में रचित आबू रास मे भी पाल्हण कवि का नाम है । दोनों रचनाएं एक ही कवि की होनी चाहिए । दोनों रचनाएं एक ही प्रति में उपलब्ध हुई हैं । जैन गूर्जर कविओ भा० ३ पृ० ३९८ में नेमिरास, आबूरास राम (?) कवि कृत होने की सभावना की है पर ये दोनों पाल्हण रचित ही हैं ।

(सं० १४२५ के लगभग जिनप्रभसूरि परंपरा मे लिखित संग्रह-प्रति, बीकानेर वृहत् ज्ञान भण्डार)

प्र० सम्मेलन पत्रिका

---

(१६) जिनेश्वर सूरि (ख० जिनपति सूरि शि० समय १२७८-१३३१)

(१६) श्री महावीर जन्माभिषेकः गा० १४

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आदि—सिद्धत्थ महानर राय बंश, सर राय हंस मुणि रायहंस।
तेलुक्कनाह जुगदीह वाह, जय चरम जिणेसर वीरनाह ॥१

तुह मज्जणु जे जिण कुणहि भव्व, ते पावइ संपइ नाह सव्व।
उच्छिन्न रुद्द दारिद्द कंद, पणयामरचिंद जिणिंद चंद ॥२

साधन्न पुन्न सुकयत्थ वीर, सिरि तिसलदेवि जसु उयरि धीर।
उपन्नु सयल तेल्लुक नाहुं, तहु गुण गण रयणह सलिल नाहु ॥३

सुर सिहरि मिलिय चउसट्ठि इंद, जम्मक्खणि तक्खणि तुह जिविंद।

के ऊर मउड़ कड़ि सुत्तहार, चल कुंडल मंडिय भत्ति सार ॥४

अन्त—**जम्माभिसेउ** कय तिजग सेउ, भवियण मिन्नासिय पाव लेउ।
तुह करहि देव देविंद विंद, असुरिंद फणिंद स जोइसिंद ॥१३

जेम मेरुम्मि अमरेसरा मज्झणं, करहि तुह वीर गिरि धीर दुह तज्जणं।
सद्द सुवियड्ढ तह फुणहि जे संपयं, सुत्त रिहिणाउ ते लहहि परमं पयं ॥१४

इति श्री महावीर जन्माभिषेक: कृत: श्री **जिनेश्वर सूरिभि:**

१ (सं० १४३७ लि० प्रति से

२ बीकानेर जिन हर्ष सूरि भंडार प्रति

---

(१७) जिनेश्वर सूरि शि०

(१७) श्री आदिनाथ बोलिका गा० ८ रचना स्थान—बाहड़मेर

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आदि : ता पुहवि पहाणइ सग्ग समाणइ वल्लउ **वाहड़मेरि**
ता तहिवि जिणहरु अच्छइ मणहरु जोउव निज्जइ मेरि
ता नाभिहि नंदणु नयणाणंदणु रिसह जिणेसरु देउ ।
ता सहि वदिज्जइ निच्छइ फिट्टइ पावह लेउ ॥८

अन्त : ता पूइउ मज्जिउ पुन्नु उवज्जिउ सामिउ हरिसह पूरि
ता जगह पहाणु गुणह निहाणु वदिउ **जिणिसर** सूरि
ता मिलिया लोया पूयह जोया, चित्ति भयउ चमकारु
ता इणि परि महिमा का इहि रम्मा पावहि सुक्खु अपारु ॥८

प्रतिलिपि—अभय जैन ग्रन्थालय

(१८) श्री वासु पूज्य बोलिका गा० ४ पाल्हणपुर

आदि : ता **पल्हणपुरि** गोरी विनंति करइ जु प्रिय निसुणेहु ।
ता दूसम कलि सूसमु अवयरिउ यउ दुहह जलंजलि देउ ॥
ता चल्लहि सामिय मयगल सलहउ जसु करेसु ।
ता **विजाउरि** विहि मंदिरि पणमिसु वासुपुज्जु तित्थेसु ।७

अन्त : ता छं छं छरर आउज वजहि वीण वेणु अइ रम्म ।
ता तुंबुर सरि महुर सरि गायहि गायण खोड़हि कम्म ॥
ता वासपुज्जु तित्थयरु पसंसहि सु गुरु **जिणेसर** सूरि
ता भवियह जण मण वंछिउ पावहु दुरिउ पणासइ दूरि ॥४

(सं० १४३७ लि० प्रति से)

विशेष विजाउरि—बीजापुर के सम्बन्ध में बुद्धि सागर सूरि का ग्रंथ द्रष्टव्य है ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(१९) श्री वासु पूज्य बोलिका गा० ४ र० विज्जलपुर

आदि : ता उत्तर दिसिहि नारि ज हुंती, चल्लिय मणि विहसंति ।
ते चड़िय तुरगिहि पवण वेगिहिं, मिल्हवि घरु पइसंति ॥
सा हरषिय चित्तिहि बहु सुपवित्तिहि, **विज्जलपुर वर आय ।**
ता पहु वसुपुज्ज वदावि प्रियं महु, ते पणमहि पहु पाय ॥१

अन्त : ता पच्छिम रंभ कंठ रयणायरि जे हुंती निय ठाणि ।
ता कर जोड़िवि निन्नवउ नरिंदह पहुवेगेण पराणि ॥
ता वासुपुज्ज **विजलपुर** नयरह थप्पिउ **जिणेसर** सूरि ।
ता मोपहु पणमतिल्हु पसंसइ दुरिउ पणासइ दूरि ॥४॥

(सं० १४३७ लि० प्रति से)

---

(२०) शांतिनाथ बोलिका गा० ४ र० श्रीमालनगर

आदि : ता उत्तर दक्षिण पूरब पच्छिम बहु दिसि हुंती नारि ।
ता कर जोड़े विणु नाहु नमेविणु वयणु इक्कु अवधारि ॥
ता दूसम काली पहु सिरमाली अदबुदु सुणियइ तित्थु ।
ता इहि भवसायरि दुक्खह आयरि भवियह जण बोहित्थु ॥१॥

अन्त : ता धन पुनवती बहु गुणवंती अमर पसंसहि सग्गि ।
ता दाणु दियावहि महिम करावहि सुगुरु वयणि विहि मग्गि ॥
ता **सिरमाळह** मंडणु पाव विहंडणु थप्पि **जिणसर** सूरि
ता भवियहु वंदहुजिव चिरुनंदहु दुरिउ पणासइ सूरि ॥४॥

प्रति — १५ वीं शती की संग्रह प्रतियों में

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(२१) श्री महावीर बोलिका गा० ८

आदि : ता **गुज्जर** नारिहि इह संसारिहि मणि हूयउ आणंदु ।
ता तिसलह नंदण कम्म विहिडण वंदह वीर जिणिंदु ।।
ता कणयह कलसू अमियह वरिसू सु भइ मणहर दडु ।
ता सहियह दिट्ठइ पाऊ फिट्टइ रोरु जाइ सय खंडु ।।१

अन्त : ता **उदय** विहारू सारोद्धारू कारिउ **कुलधरि** मति ।
ता असुर सुरिंदा खयर नरिंदा पक्खिवि सीसु धुणंति ।
ता तासु पइट्ठा कियइ विसिट्ठा सीसु धुणातिउ इदु ।
ता धम्म कहतू जगि जयवंतू **जिणिसर** सूरि मुणिंदु ।।८

प्रतिलिपि—अभय जैन ग्रन्थालय

वि० उदय विहार के उत्तर के कुलधर का ऐतिहासिक उल्लेख ।

---

(२२) श्री जिनेश्वर सूरि (मदन युद्ध) चन्द्रायण गा० १२

आदि—हेलि पंचकुसुम सरि विसरु नमिभ्जइ करि घर वर सारंगो
मइ समरि **जिणीवउ** सूरि **जिणेसर** गुण ठवि नण सुचंगो
रइ भणइ मयण सुणि सत्तु कहं तुह मिल्हि करह को दंडो
सो अजउ न जित्तु केणवि जिप्पइ **जिणीसर सूरि** पयंडो ।।१।।

अन्त—रइ वारिउ न हिउ संचरिउ घणु धरि करि उब्भड़ मयणु ।
तं हणइ **जिणेसर** सूरि गुरु, गंहिवि बंभु खग्गह रयणु ।।१२ ।

प्रतिलिपि—अभय जैन ग्रन्थालय

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(२३) मंगल गाथा ४

आदि—जो मंगलु सिरि रिसह नाह मरु देविहि दिन्नउ
जो मगलु नेमिहि कुमार सिव देवि पवन्नउ
जो मगलु पहु पास नाइ वम्मा इवि किज्जइ

जो मंगलु चउवीसह जिणह, सुरनाह करहि मेरू वरहि ।
सो मगलु चउविह सु सघ सणि, मिलि ठवियउ सासण सुरिहि ॥१॥

अन्त—करउ संति संघस्स सति **जुगपवर जिणेसर** ।
सति सयल लोयस्स सति **उद्दयह** नरेसर ॥
अइरा-एविहि जाइ राइ **विससेणइ** नंदणु ।
चक्क लच्छि परिचत्त जयइ जिण पाव विहंडणु ॥

कमट्ठ करहि धड पंच मुह भविय लोय भव भय हरणु ।
जय जयहि जयहि जय संनियर संतिनाह सिव सुह करणु ॥४।

---

(२४) गुरु गुण षटपद गा० ८

आदि—**जिण वल्लह** पमुहाणं, सुगुरुणं जो पढेइ वर-कप्पं ।
मंगल-दीवंमि कए, सो पावइ मंगलं त्रिमलं ॥१॥

अन्त—जिण **वल्लह जिणदत्तसूरि जिणचन्द्र** जु **जिणवइ**
तुय सुव्वई आसीस दिंति **जिणेसर** सूरि भुणिवइ ।
उयहि जाम जलु रहइ गयणि जाम मह दिणेसरु ।
ताम पयासिउ सूरि धम्मु जुगपवरु **जिणेसरु** ॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

त्रिहि संघुस नंदउ दिणण दिणु, वीर तित्यु थिरु होउधर ।
पूजन्ति मणोरह सयल तहि कव्वट्टु पढति नारि नर ।।८।।

इति षटपदम्

[प्र० ऐतिहासिक जैन काव्य संग्रह पृ० १]

---

(१८) अज्ञात

(२५) अंबिकादेवी पूर्व भव वर्णन तलहरा गा० ३०

आदि— ····················तिलोत्तम रंभ रइ ।।४।।
सीलिहिं जणुसीता दवदति राणी, अजणं सुंदरी रायमइ ।
सोहग सुंदरि जगह पहाणी, जाविहि निम्मल निम्मविय ।।५।।

अन्त—बुहयण वयणह किंपि सुणेवि, किंपि मुणिय निय मइ बलिण ।
चरिउ तुम्हारउ वनिउ देवि, पूरि मणोरह अम्ह तणइ ।।२६ ।
नेमि जिणेसर चरण अंभोय, महुँयरि अंबिक देवि तुहुं ।
संघह सानिधु करि सुहभोय, देहि मणछिय उदयरिद्धि ।।३०।।

जिनप्रभसूरि परम्परा की सं० १४२५ लगभग लि० प्रति, बीकानेर वृहत् ज्ञान भण्डार

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(१९) अज्ञात

(२६) श्री वीर तिलक चौपई गा० १२

आदि—वासुपुज तित्थकरु देउ, जसु तणि कला न लब्भइ छेउ ।
विज्जलपुरि विहि चइर्तिणि वेसु **वीर तिलक** खेतल नउ वेसु ।।१।

अन्त – नेउर रुणरुण झणकारु, **वीर तिलक** गुणवंतु अपारु ।
गेवरु नच्चइ मज्झिम रयणि, वासुपुज्ज परमेसर भुयणि ।।१२।।
निसुणहु **वीर तिलक** तणउ चरिउ, सुख संपइ हुयइ नासइ दुरिउ ।।
आंचली ।।

सं० १४३७ लि० प्रति जैसलमेर भंडार

---

(२०) कवि छल्हु

(२७) क्षेत्रपाल द्विपदिका गा० ८

आदि—झुम्मई डहडहंतु अइसहउ गरुयउ सद्द नहयले ।
घुम्मइ सघणघोरु जण भीसण मेहलर वउ महियले ।।
रुणु झुणु रुणु झुणंत नेउर सरु पाया लघु पहुत्तउ ।
नच्चइ खित्तवालु जिण मंदिरि बहु आणंद जुत्तओ ।।१।।

अन्त—जाइ सु पंथ कुसुम सेवित्तिय जो तुह भत्ति पूयए ।
विलसइ सुज्जु सुक्खु बहु विह परि दुक्खु न होइ तहक्कए ।।
दिव्वाभरण दिव्व देवंग समीहिय तासु संपए ।
जो तुह पढइ सुणइ खित्ता "हिव इम कवि छल्हु" जपए ।।८।।

स० १४२५ के लगभग की लि० प्रति

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(२१) अज्ञात

(२८) मयणरेहा रास गा० ३६

आदि—.................................तां राणी।
रइ रूबह लीला दवंदती, रायमए जिम नेहु करंती ।।६।।
समकितु अविचलु हियइ धरती, जिण गणहार पय पउम नमंती।
चन्द्रजसे कुमर सोहंती, गमइ दीह सा बहु गुणवंती ।।७।
अह जालतरि ईसि हसंती, उरि एकावलि हारू वहंती।
करयलि लीला कमलु करती, कल कंठी जिम किंपि भणंति ।।८।।
इणि परि पेखई मणिरहु राओ, हा धिगु पेखइ कम्म विवाओ।
पेखिउ मयणा मुह रमणीसरू, तो सायरू जिम नहासिउ नरेसरू ।।९।।
जं नवि वेय पुराण सुणीजइ, जं चिय पामरि लोइ हसीजइ।
तपि नरेसर मंडिउ कजू, पेखउ मयण महाभड़ रजू ।।१०।।
कुलि कमलेहिम बुद्धि करंतउ, नियगुण वल्ली अग्गि दहंतउ।
हाहारत तिहुयणि पावंतउ, मणिरहु मयणा मंदिरि पत्तउ ।।११।।
अन्त—जिणहरि पूजिउ मल्लिनाहु, पवतिणी पणमेई।
मिल्हिउ वालह तणउ नेहु, तउ दिक्खा लेई ।।
कुमरह सयलह जिणह वयणि पड़िबोहु करंती।
केवल नाणु धरेवि मयण, सा सिद्धि पहूती ।।५।।
सयलह रयणह वयर रयणु, जिव मूलु न जाए।
तिम जिम सामणि सीलु—रयणु कवि कहण न माए।
वीर जिणेसर जाम तित्थु, अनुसूरू पयासइ।
ता चिरूनंदउ एहु चरिउ, अनु मयण महासइ ।७।।
छ ।। मयण रेहा रास समाप्तः ।।छ।

प्र० हिन्दी अनुशीलन

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(२२) अमर प्रभसूरि शि० (धर्मसूरि पट्ट आणंद सूरि शि०)

(२९) संख वापी पुर मण्डव श्री महावीर स्तोत्रम् गाथा २१

आदि— सिरि सिद्धत्थ नरेसर नंदण गुण निलय,
पणय **भवियणु** जण देसिय सासय पय ।
दुरिय दुरत दवानल विज्झावण जलय,
तिहुयण मण आणंदण वीर जिणंद तया ।।१

जण मण चिन्तिय पूरण सुरतरु समचरण
पुव्व भवंतर संचिय कलिमल अवहरण ।
संखवाविपुर मडण खडण भव भयह,
वद्धमाण जिणवइ जय पामिविय परमसुह ।।२

अन्त—अवणि वर रमणि रमणीय सुर सुन्दरं,
सुर विमाणुव्व अवयण्ण मिह सुन्दर
संखवावीय वर गुट्टि काराविय,
जयउ जिण भवणु मुत्तुंग मंडव जुयं ।।४

वाइ गइ राय निद्दलण पंचाणणो,
धम्मसूरित्ति उद्धरिय जिण सासणो
तेण सिसि **संखवावियू** सुपइट्ठिओ,
जुगल निहि वरिसि (११९२) वीर जिण सामिओ ।।५

भत्ति उल्लसिय घण पुलय पुलय कलिय यंगया
संखपुर पवर सिरि तिलय मिह जे सिया
वद्धमाण जिण थुणइ ते वंछिया
भत्ति पावंति निब्भति सुह सपया ।।६

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

धम्मसुरि पट्टि **आणंदसुरि** मुणिवरो, **अमरपहसूरि** तसु पट्टि नव दिणयरो।
तासु सीसेण निय भत्ति भरि पणमिओ
सिद्धि सुह देउ पहु वीर जिणसामिओ ॥७
कुमय तय दिणिंदो पायनम्मामरिंदो,
भविय कुमय चदो वद्धमाणो जिणिंदो।
परमसुह निवासं मुत्ति कंता विलासं,
ववगय भव पासं देउ नाणप्पयासं ॥८

प्रतिलिपि—अभय जैन ग्रन्थालय

---

(२३) देल्हणि (श्री देवेन्द्र सूरि आज्ञा से रचित)

(३०) गयसुकमाल रास गा० ३४

आदि— पणमेविणु सुयदेवी सुय रयण विभूसिय
पुत्थय कमल करी ए कमलासणि संठिय ॥१॥
पभणउं गय सुकुमार चरित्तु पुव्वि भरह खित्ति ज वित्तू।

अंत— सिरि देविंद सूरिंदह वयणे, खमि उवसमि सहियउ
गय सुकुमाल चरित्तू सिरि देल्हणि रइयउ ॥३३॥
एह रासु सुयडेयह जाई, रक्खउ सयलु संघु अंबाई।
एह रासु जो देसी गुणिसी, सो सासय सिव सुक्खहं लहिसी॥३४॥

(जैसलमेर भंडार) प्र० राजस्थान भारती ३।२

वि० यदि देवेन्द्रसूरि प्रसिद्ध कर्मग्रथं के कर्त्ता हों तो उनका समय स० १३०० के लगभग है अतः इस रास का रचना-काल इसी के आसपास होना चाहिए।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

चौदहवीं शताब्दी

(२४) लक्ष्मी तिलक (ख० जिनेश्वर सूरि शि०)

(३१) श्री शान्तिनाथ देव रास गा० ६०

सं० १३१० लगभग

आदि— सति जिणेसर चरण कमलु कमलह आवासू ।
उत्त सिय निय उत्तमग सुरहियदस आसू ।।

सवण मह मबु चरिउ तासु विरइमु संखेवी ।
नाचहु भवियहु भाव सारु सिंगार करेवी ।। १

अन्त— एहु रासु जे दिति, खेला खेली अइ कुसल ।
बंभसति तह संति, मेघनादु वि खेतल करउ ।।५८

एहु रासु बहु भासु, **लच्छितिलय** गिणि निम्मयउ ।
ते लहति सिव वासु, जे नियमणि ऊलटि दियहि ।। ५९

महि कामिणि रवि इंदु, कुन्डल जुयलिण जास हइ ।
ताम सति जिण चदु, अनुइउ रासुवि चिरुजयउ ।।६०

प्र० सम्मेलन पत्रिका भाग ४७।४

वि० उपाध्याय लक्ष्मीतिलक बड़े विद्वान थे । इन्होंने स० १३११ डाल्हादनपुर में प्रत्येकबुद्ध चरित्र (ग्रं० १०१३०) और स० १३१७ जालौर में श्रावक धर्म प्रकरण (स्वगुरु जिनेश्वर सूरि कृत) वृहद वृत्ति (ग्रं० १५१३१) की रचना की ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(२५) सोममूर्त्ति

(३२) गुरावली रेलुआ गा० १३

आदि—वसहि मग्गु जिणि पयडु करि सहि **अणहिल पाटणि** वाईय जगि
जस ढक्क।
सो **जिणेसर** सुरि गुरु रयणु मणि भायहि जे नर ते ससारह
चुक्क ।।१
नर जुग पहाण गुरु चरिय हारु निय कंठि ठवउ तिय लोय सारु।
ए मुक्ति रमणि जिमु तुम्ह वरेइ ॥ आंचली ॥

अन्त—एह गुरावलि जो पढइ जो मणि अवधारइ रगिहि जो गायइ।
सोममुत्ती गणि इय भणइ सो नरु संसारह दुहह जलंजलि देइ ।।१३

मूल प्रति जै० भं० प्रतिलिपि—अभय जैन ग्रन्थालय

वि० सोम मूर्ति रचित जिनेश्वर सूरि संयम श्री विवाह वर्णन रास हमारे ऐ० जै० का० सं० में प्रकाशित है जिसका समय सं० १३३१ के लगभग है। अन्य रचनाओं के लिए दे० जै० गु० क० भा० १ पृ० ७ भा० ३ पृ० १४७५।

(३३) श्री जिन प्रबोध सूरि चच्चरी गा० १६

आदि—विजयउ विजयउ कोड़ि जुग जिन **प्रबोध**सूरि राउ।
विप्फुरत वर सुरि गुण रयण अलकिय काउ ।।१

अन्त—जिण **प्रबोध** सूरि गुरु तणिय जे **चाचरि** पभणति।
सोममुत्ति गणि इम भणइ पुण्ण लच्छिहति लहति ।।१६

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्रतिलिपि—अभय जैन ग्रन्थालय

जिन प्रबोध सूरि का आचार्यकाल सं० १३३१ से ४० तक का है

---

(३४) जिन प्रबोध सूरि बोलिका गा० १२

आदि—तिय लोय सामिणि हंस गामिणि, देव कामिणि पणमिया।
अन्नाण वल्लरि दलण कत्तरि, मणि धरेविणु सारयं।
सिरि सुगुरु **जिणेसर** सूरि पट्ट, गयण भूसण दिनमणी
संथुणिसु सिरि **जिण प्रबोध** सूरि गुरु, भत्ति गुरु चूड़ामणि ॥१

अन्त—जइ तुम्हि रुद्दह भव समुद्दह, पारु वंछहु भविजणा।
जिण प्रबुद्ध सूरि बोहित्थ गिन्हहु, ताऊ हो निच्चल मणा॥
लघेवि वेगिण जिमु भवोयदि, जिट्ठि पुरु पावहु थिर।
इमु **सोममुत्ती** भणइ तसु पय, भत्तउ वयरं वरं॥१२

प्रतिलिपि—अभय जैन ग्रन्थालय

---

(२६) पद्मरत्न

(३५) श्री जिन प्रबोधसूरि वर्णन गा० १०

आदि—पुहवि पहाणइ **थाराउद्रि** धण कणय समिद्ध ए। जायउ जो जगिसारु
श्रीचन्द कुलि गयणि भाणु सिरिया **देवि कुखि** उप्पन्नउ गुणह भंडारु ॥१

अन्त—एसउ गुरु **जिण प्रबोध** सूरि जो पणमए, आविचल भाविहि जो सुमरेइ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पउम रयण मुनि इम भणए सो मण बंछिउ फलो दुलहो तुरिउ
लहेइ ॥१०

प्रतिलिपि—अभय जैन ग्रन्थालय

---

(२७) ठ. फेरू (खरतर जिन चन्द्रसूरि भक्त)

(३६) श्री युग प्रधान चतुः पदिका गा. २८ सं १३४७ कन्नाणा

आदि—सयल सुरासर वंदिय पाय, वीर नाह पणमवि जग ताय ।
सुमरे विणु सिरि सरसइ देवि, **जुगवर चरिउ** भणिसु संखेवि ॥१

अन्त—संघ सहिउ **फेरू** इम भणइ, इत्तिय जुग-पहाण जो थुणइ ।
पढइ गुणइ निय-मणि सुमरेइ, सो सिवपुरि वर-रज्जु करेइ ॥२६

तेरह सइतालइ (१३४७) महमासि, **राय-सिहर** वाणारिय पासि ।
चंद्र-तणुब्भवि इय चउपइय, **कन्नाणइ** गुरु-भत्तिहि कहिय ॥२७

सुरगिरि पंचदीव सव्वेवि, चंद सूरि गह रिक्ख जिवेवि ।
रयणायरधर अविचल जाम, सघु चउव्विह नंदउ ताम ॥२८

(प्रकाशित राजस्थान भारती वर्ष ६ अ. उ. ४)

प्रकाशित पत्राकार—जिनदत्त सूरि ज्ञानभंडार सूरत
प्रकाशित-रत्नपरीक्षादि ग्रंथ सप्तक

वि० इस कवि के द्रव्यपरीक्षा (मुद्रा शास्त्र), धातोत्पत्ति, रत्न-परीक्षा, गणितसार, वस्तुसार और ज्योतिषसार आदि प्राकृत भाषा के ग्रंथ उल्लेखनीय हैं ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(२८) लखमसींह (ख० जिनचंद्रसूरि भक्त श्रावक)

(३७) श्री जिनचंद्रसूरि वर्णना रास गा० ४७ ऐति.

आदि —पाम जिणेसर वीतराहु, पणमेविणु भत्ति ।
कर जोडवि सुय देवि नमिवि, कारउ विन्नती ।।
चरिऊ रइसु मणि रायहंसु, पहु **जिणचंद सूरि**
नचहु भवियहु भावसारु, गय कलिमलु दूरि ।। १

अन्त— जुग पहाण पहु **जिणचंद सूरि**, पयट्टउ निय पयाव जसु पूरि ।
'लक्खम सीहु' वन्नवइ अवधारि, अम्ह हिव कुग्गइ गमणु निवारि ।।

प्रतिलिपि:—अभय जैन ग्रंथालय

वि० जिनचंद्रसूरि जी का आचार्यकाल सं० १३४१ से ७६ तक का है ।

---

(२९) जिनचंद्रसूरि शिष्य

(३८) जिनचंद्र सूरि फागु गा० २५

आदि —अरे पणमवि सामिउ संति जु, सिव वाउलि उरि हारु ।
अरे **अणहिलवाड़ा** मंडणउ, सव्वह तिहुयण सारु ।।
अरे **जिणपबोह** सूरि पाटिहि, सिरि सजमु सिरि कंतु ।
अरे गाइवउ **जिणचंदसूरि** गुरु, कामल देवि कउ पूतु ।। १

अन्त—मध्य में त्रुटित
मालवा की बाउल भणहिं, सयलहं लोयहं मांहि ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सिरि **जिणचन्दसूरि फागिहिं,** गायहिं जे अति भावि ।
ते बाउल अरु पुरुसला, विलसहिं सिवसुह सावि ।।२५

प्र० प्राचीन फागु संग्रह

(३९) श्री जिणचन्द्र सूरि चतुष्पदी गा० १०

आदि—पहिलउं प्रणमउं वीर जिणिंदु, जसु पय सेव करइ अमरिंदु ।
युगप्रधान जगि हूयउ नामि, तसु पट्टि श्री सोहम सामि ।। १

अन्त—मेरु महीधरु जा गिरि सारु, महियलि जा जिणि धम्म विचारु ।
जावय चंदु सूरु दिप्पंतु, तिम **जिण चन्दसूरि** भुवि जयवंतु ।।१०

प्रतिलिपि—अभय जैन ग्रंथालय

---

(३०) सहजज्ञान (ख० श्री जिनचन्द्रसूरि शि०)

(४०) श्री जिनचन्द्र सूरि वीवाहलउ गा० ३५

आदि—..

तहि सु जाओ कुले नयरि तहि निवसए, नर रयणु मंति **केल्हा-**
भिहाणो ।।३

विविह विन्नाण वर धम्म कम्म जुया, रेहए रूवधर गेह लच्छी ।
सीलगुण धारिणी तासु सहचारिणी, सरसई महुर झुणि वीण
वाणी ।।४

अन्त—एहु **जुगपवर वीवाहलउ** जे पढइ, जे दियइ भाविया रंगभरे ।
ताण सासण सुरा हुंति सुपसन्न, **सहजज्ञान मुनि** इम भणए ।।३५

प्रतिलिपि—अभय जैन ग्रंथालय

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(३१) चारित्र गणि (श्री जिनचन्द्रसूरि शिष्य)

(४९) श्री जिनचन्द्र सूरि रेलुया गा० ९

आदि—**जिण प्रबोध** सूरि राय पट्टिवर कमल दिवायरु
पयड़िउ सुद्ध जय धम्मु।
देवराज कुलि गयण चंदु सिरि
कामल पउमिणि कुखिहिं हंसु उपन्नु ॥१

अन्त—सिरि **जिणचंदसूरि** जुग पहाणु जे गायहि
भाविहि भगतिहि चितह रंगि।
'चारितु' निम्मलु पालिविण त नर अनु
नारिय पावइं सिव सुह- रंगि ॥९

रेलुया भास श्री जिनचन्द्रसूरि पदानि सर्व्वाण्यपि चारित्र गणि कृतानि।

---

(३२) ख० जिनचन्द्रसूरि शि०

(४२) युगवर गुरु स्तुति गा. ६

आदि—देधाकुलि सिरि **देवराय,** मंती सुपसिद्धउ।
कोमल देवि कलत्त तासु, सीलहि सुपसिद्धउ ॥
ताण पुत्तसिरि **खंभराउ**, बालुवि गुण सायरु।
लइय दिक्ख गुरु राय पासि, सिक्खइ किरिआयरु ॥
जावालि नयरि वीरह भुवणि, **जिणपबोह** गुरु चक्कवइ।
जिणचंदसूरि तसु नामु धरि, गुरु उच्छवि निय पय ठवइ ॥१

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अन्त—गणहर **सुहम्म** सामिय पमुह, **दुप्पसहसूरि** पज्जंते ।
वंदे कय कल्लाणे, गुणप्पहाणे गुणविहाणे ।।६

प्रतिलिपि—अभय जैन ग्रन्थालय

---

(३३) हेमतिलकसूरि शि०

(४३) श्री हेमतिलक सूरि संधि गा० ४०

आदि—पाय पणवि सिरि वीर जिणंदह, अनु सिरि गोयम सामि मुणिंदो ।
हेमतिलय सूरिहिं गुण लेसो, **संधि** बंधि हउं किंपि भणेसो ।।१

अत्थि नयरू **नायोरू** पसिद्धउ, घण कण कंचण रयण समिद्धउ ।
तहि निवसइ **गंधीय** कुल मंडणु, **बीजउ** साहु दुहिय दुह खडणु ।२

असत तसु घरि घरणि पहाणी, सीलि विमल किरि सीता राणी ।
तासु उयर सरि हंस समाणू, पुत्रु उवन्नउ पुन्न पहाणू ।।३

दोलउ नामु निरूपम लखणु, सरल सहावु विणीय वियक्खणु ।
कंचण गोर सरीर प्रमाणू, दिणि दिणि वढइ सोहग साक्त ।।४

सो कलिय कलागमु, रूवि मयण समु, **चउद**(१४) वरिस नउ जं
थियउ ।
तं जण मण मोहइ, महियलि सोहइ, सुर कुमारू जं अवयरिउ ।।५

वड्डइ गछि वाइयदेव सूरि, अणुकमि सिरि **जयसेहर सूरि** ।७
सुविहिय विहिहिं विमुहि विहरंता, अन्न दिवसि **नायउरि** पहूता ।।६

अन्त—**साठि**(६०) वरिस व्रतु पालिउ निम्मलु, सात जात करि लियउ
चरण फलु
अम्ह सव्वाउ वरिस **चहुत्तरि**(७४), मास तिन्नि ते पूरिय सत्वरि ।३७

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हव पुण थाकइं जे दिण केई, सफल करउ ते अणसणु लेई।
इम भणि संघु कमावइ सुहमणु, एगारस दिण पालइ अणसणु ॥३८
मुणिहिं गुणीतइ समइ सुहारसि, बाहत्तरइ माह वदि बारसि।
गच्छ सीख देविणु मुह चित्तू, **हेमतिलय** सूरि दिव संपत्तू ॥३९
जसु महिम करंतइ, जणि गुणवंतइ, जिण सासणु उज्जोइयओ।
सो गुरू निय गच्छहं, अणु मुणि सत्थहं, संघह मण वंछियदियओ ॥४०

इति श्री हेम तिलक सूरि संधि ॥

प्र० परिषद पत्रिका प्राप्ति—अभय जैन ग्रन्थालय

---

(३४) ख० जिनप्रभसूरि शिष्य

(४४) जिनप्रभसूरि गीत त्रय

सं० १३८५ लगभग

(१) आदि—के सलहुउ **ढीली** नयरु हे, के वरनउ वखाणू ए।
जिनप्रभसूरि जग सलहीजइ, जिणि रंजिउ सुरताणू ए ॥१

अन्त—ढोल दमामा अरु नीसाणा, गहिरा वाजइ तूरा ए।
इण परि **जिणप्रभसूरि** गुरु आवइ, संघ मणोरह पूरा ए ॥६

---

(२) आदि—उदयले **खरतरगछ** गयणि, अभिनवउ सहस करो
सिरी **जिणप्रभसूरि** गणहरो, जंगम कलपतरो ॥१

तेर पंचासियइ पोस सुदि आठमि सणिहि वारो।
भेटिउ असपते महमदो, सुगुरि ढीलिय नयरे ॥२

अन्त—सानिधि पउमिणि देवि इम, जगि जुग जयवंतो
नंदउ **जिणप्रभसूरि** गुरो, संजमसिरि तणउ कंतो ॥१०

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्र० ऐतिहासिक जैन काव्य संग्रह पृ० ११-१२

इसी तरह का एक अन्य गीत तथा जिनप्रभसूरि के शिष्य एवं उनके पट्टधर जिनदेवसूरि के २ ऐतिहासिक गीत भी साथ ही प्रकाशित हैं।

मूलप्रति अनेक अन्य रचनाओं के साथ बृहत् ज्ञान भंडार, बीकानेर में सं० १४२० के आसपास की लिखित है।

---

(३५) जयधर्म ख० जिनकुशलसूरि शि०

(४५) श्री जिनकुशलसूरि रेलहुया गा० १०

आदि—धनुधनु **जेल्हउ** मंतिवर धनु **जयतल** देविय इत्थिय गुण संपुन्न।
जींह तणइ कुलि अवयरिउ परवाइय गंजणो सिरि **जिणकुशल**
मुणिंद ॥१

अन्त—सिरि **जिण चन्दहसूरि** सीसुवर सीळ संभूसिउ वंदहि जे सविचार
ते नर नरसुर सिद्धि सुह तव चरण, संसाहिय पावहि नाणु अप्पारु ॥१०

इति श्री जिनकुशल सूरि रेलहुया कृतिरियं जयधर्म गणिका

प्रतिलिपि—अभय जैन ग्रन्थालय

श्री जिन कुशल सूरि का आचार्य काल सं. १३७७ से १३८९ है।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(३६) अज्ञात

(४६) श्री जम्बू स्वामि सत्क वस्तु (वस्तु छंद २१)

आदि — जंबु दीवहभरह खित्तंमि
रायगिहु वर नयरु, **उसभदत्तु** तहिं सिट्ठि निवसइ।
तसु गेहिणि **धारिणिय,** तासु पुत्तु **जंबू** भणिज्जइ ॥
उवरोहिण सबणह तणइं, कुमरु मनाविउ जाव।
अट्ठ कन्नवर रूव धर, बप्पु वरावइ तांव ॥१

अन्त — इत्थ चिंतहिं २ चोर सइ पंच,
धिगु जम्मु अम्मह तणउ, वारवार कुकम्मि वट्टइं।
एहु कुमरु वर भोअ पुणु, परिहरेवि धम्मेण वट्टइ।
नव अहियं पुण पंचसय (५०९), पडिबुद्धा तहि ठावि।
जंबु कुमरु संजम लियइ, दियइ सु सोहम्म सामि ॥२०
सुअतुल संजम २ पवर चारित्त
वर सील संजम सहिय, दुहिय जीव संसार तारणु।
करुणामय मयरहर, रोय-रोय निच्छइ निवारणु
जय जय गणहर धम्म वर, जय जय सिव सुह सामि
सयल संघ दुरियइं हरउ, गणहरु **जंबूउ** सामि ॥२१

(सं० १४३७ लि०)

प्र० साहित्य (पटना त्रैमासिक)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(३७) अज्ञात

(४७) श्री थूलिभद्र मुनि (मदन युद्ध) वर्णना बोली गा० ८

आदि—सुरराय समहरि करवि निज्जिय, चक्कवइ हरि हलधरा।
पायालि पन्नघ सेव मन्नहिं, कवण मत्त नरेसरा॥
तसु कुसुम सरि जो दण्डु खण्डिवि, बाण पसरु विहुडिउ।
सिरि **थूलिभद्दिण** तेम निज्जिउ, जेमू कहवि न निज्जिउ॥१

अन्त—कोवि नियतणु तविण सोसइ, कुविअ रनिहिं निवसएं।
किवि कोवि पिइ सेवालु भक्खइ, सोवि तू आसंकए॥
जो वेस घरि चउमासि निवसवि, सरण भोयण सत्तउ।
तसु थूलभद्दह पाय पणमहु, जिणि मयणु नहु जित्तओ॥८
(सं० १४३७ लि०

---

(३८) अज्ञात

(४८) श्री शालिभद्र रेलुआ गा० ९

आदि—**राजगृही** उद्यान वनि कमि वीरु समुसरिउ,
घन एसउ **सालिभद्दु** निय नियरिय मनु हरषियउ
त्रिभुवन गुरु पूछियउ वंदाविसु सुभद्र॥१

अन्त—धनउ अनए **सालिभद्रु** तुम्ह गेहि पहूता तइं नहु वंदिया कांइं।
अणसणु लेवि भागया पहुता देवलोकिहिं त्रोड़िय कम्म घणांइं॥९
जे० भं० प्रति (प्रतिलिपि—अभय जैन ग्रन्थालय)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(३९) अज्ञात

(४९) धर्म्म चच्चरी गा. २०

आदि—सुमरेविणु सिरि वीर जिणु, पभणिसु सावय-धम्मु
जो आराहइ इक्कमणि, सो नरु पावइ सम्मु ॥१

अन्त—जे आराहइ गुरु चलण, जिणवर धम्मु करिंति।
संसारिय सुहु अणुभविय, सिवपुरि ते विलसंति ॥२०

प्रतिलिपि—अभय जैन ग्रन्थालय

---

(४०) अज्ञात

(५०) कृपण नारी संवाद गा० ९

आदि—किवणु पभणइ २ निसुणि घर घरणि
महु वित्तउं जइ करह धवहिं अत्थु धरणिहि खणेविणु।
खज्जंतउ तुट्टिसइ करिउ वासु भुक्खो अत्थेविणु।
तंदुल संचह तुस वयह हिंडइ लिल्लिर वेसि
बंभण पहियम पाहुणा ढुक्की कहवि म देसि ॥१

अन्त—निसुणि सुन्दरि २ किवणु पभणेवि।
सति सीलि तुहु उत्तमिय
तुहुज देवि अपछर पसिद्धिय।
धनु एहु करतारु
तिपरु जेण मज्ज तुहु घरणि दिन्हिय

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

खाह पियह धनु विद्रवह वाहि अवारिय सत्तु ॥
जं जं भावहि तं करहि, किवणु भणइ विहसंतु ॥९
प्रतिलिपि—अभय जैन ग्रन्थालय

---

(४१) अज्ञात

(५१) श्री चतुर्विंशति जिन चतुष्पदिका गा० २७

आदि—माय पियर लंछण नयर तणु पमाण वर वन्न भिहाण सत्त-ठाण संजुत्त जिण ।
चउवीसवि घण गुणह निहाण, अणु दिणु सुमरहु भविय जण ॥१
अन्त—पढइ गुणइ सो सुणइ विचारु, सो नरु पावइ मोख दुवारु ।
सासण देवि हरउ दुह दूरि, पूरउ संघ मणोरह भूरि ॥२७
प्रतिलिपि—अभय जैन ग्रन्थालय

---

४२ शांतिभद्र

(५२) चतुर्विंशति नमस्कार गा० २५

आदि—पढम जिणवरजण मणाणंद,
सुरनाह संथुय चलण भरह जणय जय पढम सामिय ।
संसारवण गहण दव चत्त दोस अपवग्ग गामिय ॥
लोयालोय पयासयर, पयडिय धम्माहम्म
सुविहाणउं तुहु रिसह जिण, दुज्जय निज्जिय कम्म ॥१
अन्त—जसु सावयरसाहु वर चित्त
सुपसत्थ सुपसन्न मण निसि विरामि थिरु करिवि नियमणु

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

चउवीसह तित्थयर सुप्पहाइ जे थुणहिं अणु दिणु ।

ते संसारि महा जलहि, उत्तारहिं अप्पाणु,

पावह दुक्खह खउ करहि, "संति भद्दु" कल्लाणु ॥२५

सुविहाणांका चतुर्विंशति जिन नमस्काराः लिखिता श्री आलापुरे आनंदमूर्ति मुनिना ।

(सं० १३८५ लि० संग्रह प्रति जै० भं० क्र. १३२६)

---

(४३) अज्ञात

(५३) चतुर्विंशति तीर्थंकर नमस्कार गा० २५

आदि—देव तिहुयण पणय पय कमल कमलायर ।

कय चलण कमल गब्भ समवन्न सामिय रिसहेसर ।

पढम जिण पढम धम्म धुर धरण धोरियं ।

अट्ठावइ गिरिवर सिहर सेहर पुरिस पहाण ।

ताह तहट्ठिय भव जलहि जे न किय तुह आण ॥१

अन्त—इय निम्मल गुण गण वद्धमाण, पहु पणय पाय कमलाणं ।

आ संसारं सेवा महु दुज्ज जिणिंद चंदाणं ॥२५

सं० १३८५ लि० संग्रह प्रति जै० भं०

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(४४) अज्ञात

(५४) मातृका बावनी गा० ६४

आदि—भले भणं माई धुरु जोइ, धम्मह मूलु सु समकतु होइ।
समकतु विणु जा क्रिया करेइ, तातइ लोहि नीरु घालेइ ॥१

अन्त—एहु विचारु हियइ जो धरइ, सूधउं धम्मु विचारिउ करइ।
सुहगुरु तणा चलण सेवंति, ते नर सिद्धि सुक्खु पावंति ॥६४

जइ संसारु तरेवउ करउ, सतगुरु तणा वयण अणुसरहु।
जइ संसारह करिसउ छेहु, सुद्धं धमु विचारिउ लेहु ॥१ आंचली ॥
॥ छः ॥

प्रतिलिपि—अभय जैन ग्रन्थालय

---

(४५) वीरप्रभ मुनि

(५५) श्री चन्द्रप्रभ कलश गा० १६

आदि—अत्थि इह भरहि वर नयरि चंदाणणा,
जत्थ रेहंति नर नारि चंदाणणा।
करइ तहिं रज्ज महसेण पुहवीसरो,
चंग चउरंग बल कलिउ नय ईसरो ॥१

अन्त—सङ्घ सगुणड्ढ जे न्हवहिं चंदप्पहं, विहिय मुहकोस बहु तो सहय कुप्पहं।
कुगुरु कुग्गाह परिचत्तइय विहिरया, लहहि ते झत्ति निव्वाण सुह संपया ॥१६

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

इय **वीरप्पह** मुणिणा, रइउ **चंदप्पहस्स** देवस्स ।
जम्माभिसेय महिमा, दिसउ सुहं सयल संघस्स ।।१७

प्रतिलिपि अभय जैन ग्रन्थालय

---

(४६) ख० जिनचन्द्रसूरि शि०

(५६) श्री आदिनाथ बोली गा० ७

आदि—जो भुवण भूसण नाभि कुल-नर, वंसि वंस महद्धओ ।
मरुदेवि देवनई सुवन्न, कमल सिरि वसहद्धओ ।।
वर राय मुणि केवलि जिणह धुरि, पंचसय धणुहुच्चओ ।
सेत्तुज्ज मेरि गिरिम्मि सुरतरु, आदि नाहु सु नंदओ ।।१

अन्त —सोहम सामिण कमिण **जिणेसर, सूरि** गोयम तुल्लओ
तसुपट्टि सिरि **जिणपबुहसूरि**, तासु पइ विज्जालउ
जिणचन्दसूरि गुरु वएसि, जत्त करणु जि पिक्ख ए
सित्तुज्जि संठिय कउडि जक्खह, पमुह संघह रक्खए ।।७

वि. जिनचन्द्रसूरि का आचार्यकाल सं० १३४६ से १३७६ तक का है

प्रतिलिपि अभय जैन ग्रन्थालय

---

(४७) अज्ञात

(५७) श्री नेमिनाथ बोली गा० ७

आदि—धनु धनु धनु सोरठ देसि पसिद्धउ, जिणि गिरवरु गिरनारु ।
उत्तंगु सु तोरणु जसु सिरि सोहइ, भुवणि भुवणु अइ चारु ।।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तसु मज्झि निविट्ठउ जलहर वन्नउ, सामिउ नेमि कुमारु।
जिणि हेलइं जित्तउ नव जुव्वण भरि, तिहुण रगडण मारु ॥१

अन्त—रेवइ गिरि मंडणु पाव विहंडणु, तिहुयण पणमिय पाय।
भत्तिहि सथुणियउ इणि मणि रहियउ, इकु तुहुं जादव राय ॥

तिम तिम तिम करि महु भालत्थलि, जिम हुइ नेमि तिलउ सुपहाणु
जय जय जय जियवर तुहु परमेसरु, जाम गयणि ससि भाणु ॥७

प्रतिलिपि—अभय जैन ग्रन्थालय

---

(४८) अज्ञात

(५८) श्री युगादि देव जन्माभिषेक कलश गा० २०

आदि—निसुणेहु भविय लोयहु रोलवइ ऊण इक्कु वणयम्मे
मद मयणादि भन्नइ **जम्माभिसेयं** च रिसहस्स ॥१

अन्त—त घणु सारि भवियणहु जिणह अभिसेउ विहिज्जइ।
राय सोय जर मरण झत्ति, सुजल जलि दिज्जइ ॥

विहि करहु सरहु सुहगुरु वयणु, भविय लोय भव भय हरणु
चित्त घड़ि न्हवणु रिसहेसरह, नर नरवर संतिहि करणु ॥२०

प्रतिलिपि—अभय जैन ग्रन्थालय

---

(४९) अज्ञात

(५९) श्री युगादि देव कलश गा० ५

आदि—जस्स पय पकयं निप्पड़िम रूवयं
सुर असुर नर खयर वयसी कयं।——

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तस्स रिसहस्स भत्तीइ मज्जण विहिं,
किंपि पभरणेमि सुम्हि कुणह सवणातिहिं ॥१

अन्त—विमल गिरि मंडरणं नाभिनिव नंदणं,
जणमणारणंदणं कम्म निक्कंदणं ।
तयणु सारेण भो न्हवउ भवियण जणा,
सिव वहू होइ जिमु तुह उच्छुय मणा ॥५

प्रतिलिपि—अभय जैन ग्रन्थालय

---

(५०) अज्ञात

(६०) श्री चन्द्रप्रभ स्वामि कलश गा० ११

आदि—देव देविंद विंदेण गिरि मंदरे,देव चंदप्पहस्सामिणो सुन्दरे ।
जम्म मज्जण महो जह समारंभिग्रो, किंपि जंपेमि संपइ तहा
विम्हिग्रो ॥१
आगया तत्थविल्थिन्न सुर सत्थया, वियड़ मणि मउड़ दिप्पंत
तरमत्थया ।
गयण तम कंड खंडण पहा मंडला, मंडिया खंड तरणु खंडसा
खंडला ॥२

अन्त– गुल गुलिउ केविकिवि धणघरणं हेसियं, किवि करहि केवि
तिन्निवि सुरासंतयं ।
केवि हल बोलु किवि उप्फलंती तया, केवि पूरंति नंदि
समारणंदिया ॥१०॥
जे तयणु सारिणो सावया मज्जरणं, चंदपह सामिणो कुणहु दुह
तज्जणं ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कलिल संघट्ट, सुविसट्ट, परिफिट्टए, तेसि भद्द'तु निच्चंपि
परिवट्टए ।।११

प्रतिलिपि—अभय जैन ग्रन्थालय

---

(५१) अज्ञात

(६१) श्री वासुपूज्य कलश गा० ८

आदि—जइ जय२ पहु देव वसु पुज्जु,
विज्जलपुर सिरितिलउ सयल लोय लोयण सुहंकरु ।
जिट्ठ मासि सिय नवमि, मणुय लोय उइन्नु मणहरु
तहिं **वसुपुज्ज** नरेसरह, रज्जु समिद्धिहि पत्तु,
गेहु निहाणिहिं बहुविहिहिं, भरिउ सुरेहि निरत्तु ।।१

अन्त—एय मग्गिण२ परम विच्छड्डि,
छड्डे विणु संकमणि न्हवणु रयहि सिरि **वासुपुज्जह** ।
कल्लाणय सव्व दिण मंगलिक्क तियलुक्क पुज्जह
काहल संख मुयंग तहिं, वायहि मंगलतूर ।
दंसण निम्मलु करिवि जिव, पावहु सिव सुहपूरु ।।८

---

(५२) रामभद्र

(६२) शान्तिनाथ कलश गा० १०

आदि—असुर सुरिंद नरिंद विंद, वंदिय पय पउमह ।
संति जिणंदह न्हवण समउ', वज्जिय छल छउमह ।।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अवर कज्ज सावज्ज सव्वि, वज्जिय कय पुन्नह ।
नवउ कलसु हउं भणिसु तुम्हि, भवियहु आयन्नहु ।। १

अन्त—दप्पण भद्दासण नंदिवत्त, सिरिवच्छ मच्छ तह कलस जुत्त ।
वर वद्धमाण सत्थिय विसिट्ठ, जिण पुरओ विहिय इय मंगलट्ठ ।।१०

इय सन्ति जिणंदह उवरि गिरिंदह, अमरवइहि किउ न्हवणु जिम
तिव तुम्हिवि न्हावउ जिम सुहु पावहु, 'राम भद्दु'* पभणेइ
इम ।।११

* 'पाठान्तर राच भद्दु'

प्रतिलिपि—अभय जैन ग्रन्थालय

---

(५३) अज्ञात

(६३) श्री शांतिनाथ कलश गा० ६

आदि—संति नाहर जम्मि अभिसेउ ।
सिहरम्मि मणिहरि विमल बहल रयण रवि कंति सुंदरि ।
तियसिंद सयलिवि मिलिवि कुणहि भत्ति विहिसारु मंदिरि ।।
नज्जइ लोयह विहि परह, विहि दरिसणइ निमित्तु
परिवारच्छर नट्ट भरु, तहि पयडहि सुपवित्तु ।।१

अन्त—तदणु मग्गिण सड सुवियड्ढ, जिण संति मज्जणु करहिं ।
विहि जिणंद भवणंमि संपइ, तिण सयल सुविहिहि ।
कलियउ चिय कालि सुह, फलिय संसइ (सिद्धि) ।
पयड़ पयड पहावधर, लद्ध समग्ग समिद्धि ।।६

प्रतिलिपि—अभय जैन ग्रन्थालय

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(५४) अज्ञात

(६४) श्री नेमिनाथ स्तवनम् गा० २३

आदि—जयति जगति सस्वन्नेमिनाथो विशस्व—
च्छतममधिक कान्तिः सृष्ट मोहोपशान्ति ।
उदित विदित चित्रस्फूर्ज्जदुच्चैश्चरित्र—
स्त्रिभुवन जन बन्धुः पुण्य लावण्य सिन्धुः । १

अन्त—तंइ देव देव दे विन्दे, किउ जय जयकारुत ।
सवि इन्द्राणी जीतउ जाणिउ, कमहि मंगल चारुत ।
सव्वह वीरह ऊपरि, वंदू आस मुदंतुत ।
पूजउ पूजउ नेमि कुमारू, निव्वुइ कंतुत ।।२३

प्रतिलिपि—अभय जैन ग्रन्थालय

---

(५५) अज्ञात

(६५) श्री वीरजिन कलश गा० १४

आदि—नमिर सुरवर पवर सिरि मउड़ मणि किरण, निम्मल बहुल कायकंति ।
सोहियस सुंदरु संसार घण घणदहण, दुट्ठ कम्म निट्ठवण पच्चलु ।
पंचिन्दिय करिवर दलणु, जम्मण मरण विणासु ।
आइ जिणिंदह पयकमलु, भावं पणमवि तासु ।।१

अन्त—ताम जिणवरु मुणवि सुरनाहु ।
जोड़ेवि कर सिरि धरइ, खमह नाह अतुलिय परक्कम ।
नव जाण तुज्झ बलु वीर, दमिय कंदप्प दुद्दम ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पुण विज्जाहर सुर गणह, जंपइ एहु सुरिंदु ।
लेवि कलस मा चिरु करहु, न्हावहु वीर जिणिंदु ।।१४
(सं० १४३७ लि० प्रति से)

---

(५६) अज्ञात

(६६) श्री महावीर कलशः गा० २९

आदि—पणमेवि तिजयनाहं, सिद्धत्थ महानरिंद अंगरुहं ।
वीरं गिरिवर धीरं, तस्सभिसेयं थुणिस्सामि ।। १ ।।

अन्त—जेम सुर सेलि जिणु ण्हविउ सुर सामिणा,
तेम **जालउरि** विहि-मंदिरे भवियणा।
ण्हवहु पुज्जहु थुणहु, भावु धरिणिय मणे,
संति जिम होइ नर, नरवरह तक्खणे ।। २९

प्रतिलिपि—अभय जैन ग्रन्थालय

---

(५७) अज्ञात

(६७) श्री वीर जिन कलश गा० ५

आदि—जम्म मज्जणि जम्म मज्जणि, जिणह वीरस्स ।
पारद्धइं सुरगणिण मेरु, सिहरि इंदेण चिंतिउ ।
किम सहिसइ तुच्छ तणु जल, पवाहु सुर खित्तु इत्तिउ ।
पुणुअ सुणिउ जिण बलु कलिउ, इउ चिंतंतु सुरिंदु

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

लीलइं चालिउ वीर जिणि, वाम कमग्गि गिरिन्दु ।। १

अन्त—ताम सुरवइ ताम सुरवइ, वयण संभंत ।
सहसच्चिय सुर असुर, सुपसत्थ तित्थु नीरह
भरिऊण मणिमय कलश, कुणह न्हवण समकालु वीरह
पसरिय पडु पडिरव भरिय, भुवणब्भितर पूर
अप्फालिय तियसेहिं तहिं, चउविह मंगलतूर ।।५

प्रतिलिपि—अभय जैन ग्रन्थालय

---

(५८) अज्ञात

(६८) सर्व जिन कलश गा० ५ (चतुर्विंशति जिन कलशः)

आदि—जंम्म मज्जणु२ भणउं उसभस्स ।
मजिय संभवमभिणंदणह, सुमइ सुप्पभ* सुपास नाहह ।।
ससि सुविहि सीयल जिणह, सिरि सिज्जंस जिण वासुपुज्जह ।
विमलमण तह धम्म जिण, संति कुंथु अर मल्लि ।
मुणिसुव्वय नमि नेमि जिणु, पास वीर जिण वल्लि ।।१

अन्त—तयणु गारिण (तयणु गारिण) सव्व भो भव्व ।
अपुव्व वत्थाभरण, भूसियंग मणि† रंग चंगय
आणंद वाहप्पवह न्हविय, गल्लयल पुलय संगय
करहु सव्व तित्थेसरह, मज्जणु मह्रु वहु सेउ
सिवपुरम्मि तुम्हवि भवइ, जिव लहु रज्ज भिसेउ ।। ५

* सुपम सुप्पास †मंण

प्रतिलिपि—अभय जैन ग्रन्थालय

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(५९) जिनपद्मसूरि (सं० १३८९ से १४००)

(६९) श्री शत्रुञ्जय चतुर्विंशति स्तवनम् गा० २६

आदि—जग मंडण गुण पवरं, सत्तुंजय धरणि·········रं ।
सुह सारं भवतारं, भयवारं-थुणिसु जिणवरिं ॥१॥
नाभि·········ई, मुरदेवि पुत्तं जणाणंदणं ।
वसह वर लंछणं दुरिय, भ·······ण मंडलं ॥२॥

अन्त—तिय लोय भूसणु दलिय दूसणु, विबुह तोसण संगउ ।
इय माय ताय सरीर लंछण, देह कंतिहि संथुउ ॥
सिरि **माणतुंग विहार** संठिउ, सुप्पइट्ठिउ जिणगणो ।
जिण पउमसूरि सुरिंद वंदिउ, दिसउ सुक्खु गुणुल्लुणो ॥२६

प्रतिलिपि—अभय जैन ग्रन्थालय

जिनपद्मसूरि दे० जैं० गु० क० भा० १ पृ० ११

---

(६०) अज्ञात

(७०) श्री स्थूलिभद्र बोली गा० २८

आदि—सुर राय समहरि करवि निज्जिय, चक्कवइ हरि हलहरा ।
पायालि पन्नग सेव मन्नहि, कवण मत्त नरेसरा ॥
तसु कुसुम सर कोदंड खंडवि, बाण पसरुवि हिंडिउ ।
सिरि थूलिभद्दिण तेम निज्जिउ, जेम किणिवि न निज्जिउ ॥१

अन्त—कोवि नियं तणु तविण सोसइ, कोवि रंनिहि निवसए ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

किरि कोथिवि प्रिय सेवालु भक्खइ, सोवि तुह आसंकए ।।
जो वंस घरि चउमासि निवसइ, सरस भोयण सत्तउ ।
तसु थूलभद्दह पाय पणमहु, जिणि मयण तुहु जित्तउ ।।८

प्रतिलिपि—अभय जैन ग्रन्थालय

---

(६१) अज्ञात

(७१) माल उघटणं गा० १८

आदि—सयल तियलुक्क गंजि रवं, महबलदलण लद्ध माहप्पो ।
वसहंक पवर चिघो, आइ जिणिदो सुहं देऊ ।।१

अन्त—दाणवंतह२ सुकुलि उपत्ती ।
धणु धन्नु कंचण बहुलु, दाणि होइ वर रूववंतउ ।
दाणेण जगि वल्लहउ, दाण दिंत्ति सुकलत्त जुत्तउ ।
मंत तंत मूलिय सवइ, सिज्झहि दाण फलेण ।
जिणवर मुह उग्घाड़णइ. निय धणु दिज्जइ तेण ।।१८

प्रतिलिपि—अभय जैन ग्रन्थालय

---

(६२) अज्ञात

(७२) आशातना षटपद २

आदि—करहु दीह संसारु, जिण आसायण वारहु ।
आसायण मिच्छत्तु, अप्पु दुग्गह मन धारह ।।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अन्त—विहि करहु अविहि मुणु परिहरउ, सुगुरु वयणु झायहु सुगुणु ।
भव जलिहि तरहु वज्जहु नरहु, जिण-मंदिरि तंबोलु पुणु ॥२

प्रतिलिपि—अभय जैन ग्रन्थालय

---

(६३) अज्ञात

(७३) शासन देवता गीत पदानि गा ८

आदि—वाघ वाहणि विमाणि आरुही, भमइ सग्ग मच्चु पायाले ।
मण वंछित मनोरथ पूरइ, जिण-शासणि संघ सानिध करे ॥१

अन्त—अष्ट मंगलिकि अष्ट पूय करि, अष्टकि जे ध्यायंते ।
तासु तणइ धरि अफलिय फलियइ, **सासण देवि** पसाइयए ॥

प्रतिलिपि—अभय जैन ग्रन्थालय

---

(६४) अज्ञात

(७४) ज्ञान छप्पय (वस्तु छंद)

नाणु सुरतरु नाणु सुरतरु, नाणु सुरधेणु ।
चिन्तामणि नाणु जगि, कामकुंभ जिम नाणु सुहकरु ।
अन्नाण भर तिमिरहरु, नाणु भाणु कल्लाण मन्दरु ।
भव उत्तारण भयहरणु, अंधह नयण समाणु ।
झायहुं गायहुं नितु नमउं, मणि तणि वयणि हि नाणु ॥१

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(६५) धर्मसूरि

(७५) श्री समेतशिखर तीर्थ नमस्कार गा० ८

आदि—असुर अमर खयरिंद, पणमिय पय पंकय ।
जसु सिरि बीस जिणिंद, पत्त सासय पय संपय ।
वर अच्छर सुर सरिय सरिसु, तरुवर सुमणोहर ।
सो समेय गिरिंद नमउ, तित्थह सिर सेरह ॥१

अन्त—इय सम्मेय गिरिंद वीस, जे सिद्ध जिणेसर,
मोह गुरूय तम तिमिर पसर, भयहरण दिणेसर ।
ते संघु अतिअ भत्तिराइ, सुपसाइ महामुणि,
धम्मसूरि पायाण दिंतु, चिंतिय सुह जे मुणि ॥८

प्रतिलिपि—अभय जैन ग्रन्थालय

---

(६६) अज्ञात

(७४) सम्मेतशिखर गीत (अपूर्ण)

आदि—खयर नरिंद सुरिंदिहि वंदिउ रु'दियरु,
मणिकंचण रयणामय भूमिहि अइ पवरु;
वीस जिणेसर पचम कल्लाणिहि महिउ,
सिरि **सम्मेउ** नमंसह बहु अइसइ सहिय ॥१

अन्त—दिप्पंत रयण मणि कंति सारु, **सम्मेय सिहर** भव सयह पारु ।
कलि काल कलुस जण मण निएवि, संपइ नर दुग्गम विहिउ
देवि ॥१३

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सम्मेय गिरिहि सुविसाल तीरि, सुपवित्त विमल वर कुंड नीरि।
पडिबिंब पयड़ पच्चक्ख तित्थ, जिण ....

प्रतिलिपि—अभय जैन ग्रन्थालय

---

(६७) अज्ञात

(७७) श्री शत्रुञ्ज चैत्य परिवाड़ी गा० २९

आदि—सामिय रिसह पसाउ करि, जिम सेत्रुंजि चड़ेवि।
चेत्र प्रवाड़िहि सवि नमउं, तीरथ भाव धरेवि ॥१

अन्त—नेमि जिणेसरु पाज मुहि, ललतासरि जिण वीरु।
पालीताणइ पास जिणु, नमिउ लहिसु भव तीरु ॥२८
एहिजि **चैत्य प्रवाड़ि नर,** पढइं गुणइं निसुणंति।
सिरि सत्रुंजय जात्रफलु, ते निश्चइं पावंति ॥२९

प्रतिलिपि—अभय जैन ग्रन्थालय

---

(६८) अज्ञात

(७८) श्री शत्रुंजय महातीर्थ गीतम् गा० ५

आदि—तित्थ माझि सेतुज खित्तु सिद्धि सारो।
नितु लगउ जिव भमसि भवजल पारो ॥१

अन्त—प्रभु दरिसणि अमृतकुंडि अम्हि न्हाइला।
पुरबिल दुकृत कर्म आजु धोइयला ॥५

प्रतिलिपि—अभय जैन ग्रन्थालय

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(६९) अज्ञात

(७९) स्थूलिभद्र गीतम् गा० १२

आदि—भरत खेते पाडलिय पुरे नवमु नंदराओ
सकटाहल पुत्तु थूल भद्दो, सो लेइ व्रतु
जिणि जुवकालि कंदपु दालियओ
रंजिउ राउ मुनि जिणि, विषय सुख अवगनिउ
पंच मुष्टिकु लोचु कियउ, सो नमहु थूलभद्दू ।।१।। आंचली

अन्त—गुरु णिय मग्निविसो गयओ, निय गुरह पासि ।
आलोवंतउ करुण सरि, अनुमन रहसि सुद्ध भावेण
जिणि पंकु पखालिउ, गयउ सो मुणिवर देवलोके । १२

प्रतिलिपि—अभय जैन ग्रन्थालय

---

(७०) अज्ञात

(८०) श्री सुदरिसण महारिषि गीतम् गा० १३

आदि—उसभुदत्तु चंपावरि सेठी अरइ दंत पियकंता
सुभगु कुमार उम्ह इसिहिं पालकु मुनि सिहु कियउ प्रसंगो ।
कन्नु डुलइ किरि अमिय, पईसइ सुणिवि सुदरिसण
जिन्ह दीठउ से नयण ति धन्ना, मयण करडि हरि लीलो ।।१

अन्त—देवदत्ता गणिका तसु खोभई, ना खोभइ गिरि धीरु ।
अभया वितरि ठाइहिं खोभइ, तउ हुव केवल वीरो ।।१३

प्रतिलिपि—अभय जैन ग्रन्थालय

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(७१) अज्ञात

(८१) श्री स्थूलिभद्र गीतम् गा० ८

आदि—सीह सप्प धरि कुव कंचण मणि, संपत्तउ मुणि राउ।
दुक्कर कारउ वरनीजइ, थूलभद्द मुनिराओ ।।१।।

अन्त—तासु देखि गुण गुरि मन, रंजिउ दुक्करु भासइ।
तसु गुण थुणिवि करिवि जो भासइ, तसु घरि सिरि आवासइ ।।८

प्रतिलिपि—अभय जैन ग्रन्थालय

---

(७२) अज्ञात

(८२) श्री वयरस्वामि गीतम् गा० ७

आदि—भरतखेत्ते तुंववण पुरे, धणघर सेठि घरि।
हेउ विमाणह चवियउ, ता सुनंदा उवरि ।।१

अन्त—दस पूरवधरो वइर सामि, अनिक लबधि जूतो।
सूंठि गाठे अणसणु लेयाओ, पहुतउ मुनि देवलोके ।।७

प्रतिलिपि—अभय जैन ग्रन्थालय

---

(७३) अज्ञात

(८३) मधु बिन्दु गीत पद गा० ८

आदि—प्रभवु भणइ नव जोवण परिणिय, अट्ठ रमणि जगि सार ;

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

काम-भोग भोगवि तुहुं प्रामिय, मेल्हिवि जंबु कुमारा ॥१

अन्त—प्रभवु चोरु पंचसय परिवारितु जबू स्वामी प्रतिबोधिला ।
अट्ठ रमणि सउ सुधर्म सामि पासि, संजम भारु तिणि लयला ॥८

प्रतिलिपि—अभय जैन ग्रन्थालय

---

(७४) शांतिसूरि

(८४) श्री सीमंधर स्वामि स्तवनम् गा० ८

आदि—जंबू वर दीवह महा विदेह, सुणि धणि घणहां सय पंच देह ।
सीमंधर स्वामी विहरमाण, वसहंक-सयर सोवन्न माण ॥१

अन्त—संदेशे ओलग करउं देव, ऊमाहउ हीय न मे
ईणि खेत्रि वसंतां खति पूरि, इय मुक्ति भणयं श्री शांति सूरि ॥८

प्रतिलिपि—अभय जैन ग्रन्थालय

---

(७५) अज्ञात

(८५) गिरनार तीर्थ स्तवनम् गा० ६

आदि—गिरि उज्जितहं डूगरि जाइसु, वांदिसु नेमि कुमारो ।
इय संसारु समुद्द तरेविणु, पाविसु मारेव दुवारो ॥१

अन्त—पूरव धरमिणि इउ माणइ प्रभु, वीनतड़िय अवधारि ।
इसु संसारह खरी निवीनी, आवणु गमणु निवारि ॥६

प्रतिलिपि—अभय जैन ग्रन्थालय

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(७६) अज्ञात

(८६) गिरनार तीर्थ स्तवनम् गा० ५

आदि—हिव आसाढु पहुतउ हिलिए, पाउस पहिलउ मासु ।
अंबरि जलहरु उदयलि हलिए, गोयलि रासु रमेसु ।।१

अन्त—मिलिहुंणि सहिय समाणिय हिलिए, कुसुमह करडु भरेसु ।
निमि जिण पूज करावसु हिलिए, भव संसारु तरेसु ।।५

प्रतिलिपि—अभय जैन ग्रन्थालय

---

(७७) मंत्री धारिसिंह

(८७) श्री नेमिनाथ धुल गा० ८

आदि—सहजि सलूणड़ी नारि, मिलीअ स तेवड़ तेवड़ी ए ।
राउलड़ा घर बारि, नेमि कुमर वर जोयती ए ।।१
पूच्छइ पूच्छइ राजकुमारि, कहिन बहिन वर किमु हुउ ए ।
सणउ तम्हि सहिय बिच्यारि, जिण परि वर मंइ पामिउ ए ।।२

अन्त—इण परि नेमि कुमार, गुण गाइं सवि कामिणी ए ।
राणीय राजिमती भत्तार, **मंत्रि धारिसिंघ** स्वामिणी ए ।।८

प्रतिलिपि—अभय जैन ग्रन्थालय

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(७८) देवचन्द्रसूरि

(८८) रावण पार्श्वनाथ वीनती गा० ९

आदि—रावण मंडण पास जिण, पणमउं तुह पय सामि ।

महुयर केतकि कुसम जिम, मण लीणउं तुह नामि । १

अन्त—कलि कप्पद्दु म पास जिण, पयइइ तुह पय सेव ।

देवचंद सूरिप्पमुह, पाव पंक गय लेव ॥८

रावण मंडण भव भय खंडण, पास जिणेसर पय कमल ।

जे तुझ नमसिइ भत्तिइ पसंसइ, ते नर पावइं सुह अमल ॥९

प्रतिलिपि—अभय जैन ग्रन्थालय

---

(७९) अज्ञात

(८९) जिनस्तवना गा० १७

आदि—नमिर नर पवर सिरि, हीरमणि अच्चियं.

नमवि सिरि सारया, देवि पय पंकयं ।

तयण गुरुराय कम, कमल वदिय सग

भत्त भवियाण, संपावए सुह सुयं ॥१

अन्त—भव भमण भंजण मोहगंजण, सज्ज रज्जन अत्थउं,

दुह दुरिय वारण सुक्ख कारण, अवर किंपि न पत्थउं ।

निय देवी देवा चरण सेवा, करण करुणा सायरा,

दइ दाण वंछिअ पाव वंचिय, सयल सेवइं सुरतरा ॥१७

प्रतिलिपि—अभय जैन ग्रन्थालय

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(८०) अज्ञात

(९०) साऊका पार्श्वनाथ स्तवनम् गा० १०

आदि—सिरि सोहंत फणामणि मालं, अट्ठमि चंद सरिस सम भालं ।
रवि ससिहर कुंडल सकासं, वंदे **साऊ** जिणहरि पासं ॥१
सायर सरिहर निरमल काय, मोडिय मयण महाभड़ि वाय ।
पूरिय [मन] वछित [सहु] आसं, वंदे **साऊ** जिणहरि पासं ॥२

अन्त—वंम्मा कुक्खि सरोवर हंसं, अससेण नरवइ पयडिय वंसं ।
केवल लच्छि विलास निवास, वंदे **साऊ** जिणहरि पास ॥९
देखिय **साऊय** सेठि विहारं, सुरपति भुवण सरिस जगि सारं ।
धंनु सु वरिस दिवसु सुमासं, वंदे **साऊ** जिणहरि पासं ॥१०

प्रतिलिपि—अभय जैन ग्रन्थालय

---

(८१) अज्ञात

(९१) कोका पार्श्वनाथ स्तव० गा० ३० अपूर्ण

आदि—आससेणि रायकुलि अवतरीउ, हेला मांहि जीणइ जग उधरीउ,
उदयउ अभिनव चंदो ॥१
ताबि माए विंहि ऊयरिइं धरीउ, वाणारसीं नयरी अवतरीउ,
कीधउ मनि आणंदो ॥२

अन्त—**कोकउ पारिसनाथ** बखाणउं, साम्ह कइ गुण पार न जाणु
चिंतामणि अवतारो ॥३०
भविक लोक तम्हि मन माहि ध्याउ,.......................

प्रतिलिपि—अभय जैन ग्रन्थालय

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(८२) अज्ञात

(९२) महुरा पार्श्वनाथ जिन विज्ञप्ति गा० १२

आदि—**महुरपुरी** सिरि आससेण, वामा दिवि नंदणु
तिहुयण पहु सिरि पासनाहु, घण दुक्ख विहंडणु
भविअण जण भव भमण ताव, पसमण वर चंदणु
अमिय कंति तणु जट्ठि देव, देवासुर रंजणु ॥१

अन्त—इम **महुरनिवासं,** जो थुणइ भावि पासं।
विहिय मण नासं, दिन्न दोसप्पवासं।
जणिय कुगइ तासं, छिन्न कम्मट्ठ पासं।
बहु सुह सुविलासं, सो लहइ सिद्धि वासं ॥१२

प्रतिलिपि—अभय जैन ग्रन्थालय

---

(८३) अज्ञात

(९३) श्री आदिनाथ कलश गा० २२

आदि—सयल दीवाण मज्झे, जंबू दीवम्मि आइमेरम्मि।
भारह खित्ते जाओ, मुणिराओ लोय विक्खाओ ॥१
लोयविक्खाउ मुणिराउ गुण सायरो, पढम सिद्धीइ पयडंम जग दिणयरो।
भव समुद्दंमि निवडंत जण तारओ, न्हवहु जिणु न्हवहु जिणु सिद्धि—
सुहकारओ ॥२

अन्त—त दुहहरु सुहकरु न्हवण जिणंदह,
भवियहु फुणहु भत्ति गुणवंतह।
त जिणिपरि चउसठि सुरिंदिहि विहिउ,
तिणि परि सयलु तुम्ह मइं कहियउ ॥२१

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मेरु सिहरमि इंदेहिं जह विहि कउ, पढम जिण न्हवणु भत्तीइ
बुह सम्मउ
तयणुसारेण भो भवियणा संपयं, तह कुणहु जह लहहु सासय सिव
पयं ।।२२

प्रतिलिपि—अभय जैन ग्रन्थालय

---

(८४) राजशेखर

(९४) श्री पार्श्वनाथ स्तोत्रम् गा० १०

आदि—कमठासुर माण गिरिंद पविं भवियंग सरोज विबोह रविं ।
सुरराय विणमिय णेग महं, विनुवामि जिणेसर पास महं ।।१

अन्त – सिरि अससेण नरेसर जाओ, इंदनील नीलुप्पल काओ ।
रायसिहरि संपूइय पाओ, पासु पसीयउ मे जिणराओ ।।१०

प्रतिलिपि —अभय जैन ग्रन्थालय

वि० राजशेखर सूरि दे० जै० गू० क० भा० १ पृ० १२ भा० ३ पृ० ४१२

---

(८५) उदयकरण

(९५) श्री जीराउला पार्श्वनाथ स्तोत्रम् गा० ९

आदि —जीराउलि मंडण पासनाह, पय पउम सुसेवय नागनाह ।
मण वंछिय तरु गण फलण राह, महि मंडलि गुरु महिमा
सणाह ।।१

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अन्त—सिरि पास जिणेसरु भुवण दिणेसरु, जीराउलि रमणी तिलउ।
सुरनर गणि महियउ भाविण मइं थुणियउ, **उदयकरणु** भवि
भवि सरणु ॥६

प्रतिलिपि—अभय जैन ग्रन्थालय

---

(९६) श्री फलवर्द्धि पार्श्वनाथ स्तोत्रम् गा० ८

आदि—जय फलवद्धिय पुरि रमणिहार, जय पास जिणेसर भुवण सार।
जय जण मण चिंतिय सुह दतार, जय दस दिसि पसरिय जस
विचार ॥१

अन्त—**फलवद्धिय** मंडणु दुरिय विहंडणु, पास जिणेसर **उदयकरणु**।
तुह चलणि विलग्गउ हुउं इत्तउ मग्गउं, भवि भवि तुह सय
सरणु ॥८

प्रतिलिपि—अभय जैन ग्रन्थालय

---

(८६) विनयप्रभ (बोधिबीज)
श्री जिनकुशल सूरि शि०

(९७) श्री सीमंधर स्वामि स्तवनम् गा० २१

आदि—नमिर सुर असुर नर विंद वंदिय पयं,
रयणि कर कर निकर कित्ति भरपूरियं।
पंच सयं धणुह परिमाण परि मंडियं,
थुणउं भत्तीइ सीमंधरं सामियं ॥१

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अन्त—इय भुवण भूसण दलिय दूसण, सव लक्खण मंडणो।
मद मान गंजण मोह भंजण, वाम काम विहंडणो ॥
सुर राय रंजणु नाण दंसण, चरण गुण जय नायको।
जिण नाह भवि भवि तात भव मे, **बोधिबीजह** दायगो ॥२१

प्रतिलिपि—अभय जैन ग्रन्थालय

---

(९८) विमलाचल आदिनाथ स्तवन गा० १३

आदि—मुख संमुखं नयपले देन दीठउ, तहे जाणि मो अन्न न अमीय मीठउ
जदा नंदि हउं सामि ने पाल लागउ, तदा द्वेत्र मह मोह नउ द्रोह
भागउ ॥१

अन्त—इम भोलिम सामिनी भगति कीधी,
असंख्यात मू पुण्यनी वृत्ति सीधी।
न मागउं जगन्नाथ हुउं किंपि बीजउ,
विभो आभवं देहि मे **बोधि बीजं** ॥१३

प्रतिलिपि—अभय जैन ग्रन्थालय

---

(८७) अज्ञात

(९९) श्री अंतरीक पार्श्वनाथ स्तवनम् गा० ५

आदि—जय जिणेसर जय जिणेसर पास जिण नाह।
अंतरीय माहप्पुहिव, एणि कालि तुह देव दीसइ।
सिरि **सिरपुर** वर तिलय, कित्ति सयलि तिहुयणि सलीसइ।
नाम मति सुमरंतयह, दुरिउ पणासइ दूरि।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हउं पत्तउ तुह पय सरणि, दुट्ठ कम्म मह चूरि ॥१

अन्त—पोस दसमिहि पोस दसमिहि जम्मु सुपसिद्धु ।
वाणारसि वर नयरि, आससेण नरनाह मंदिरि ॥
वम्मा उरि संभामिउ, मेरु सिहरि न्हविउ पुरंदरि ॥
कमठ असुर गय मय महणि, केसरि जिम बलवंतु ।
सिरिपुर मंडणु पास जिणु, **अंतरीउ** जयवंतु ॥५

प्रतिलिपि —अभय जैन ग्रन्थालय

पंद्रहवीं शताब्दी

(८८) मेरूनंदन (ख० जिनोदय सूरि शि०)

(१००) श्री गौतम स्वामि छंद गा० ११

(सं० १४१५ लगभग)

आदि—अट्ठ छंद दस दूहड़ा, छपदु अडिल्ला दुन्नि ॥
जे निसुणइ गोयम तणा, ते परिवरियइ पुन्नि ॥ १

अन्त—गोयम सामिउं मइं थुणिउं, इम गरुयउ गुणवन्तु ।
संघ **मेरुनंदण** वर्णिहिं, सुरतरु जिम जयवन्तु ॥११

वि० मेरूनंदन की सब रचनाओं की प्रतिलिपि—अभय जैन ग्रन्थालय
कवि के सम्बन्ध में दे० जैन गू० क० भा० १ पृ० १८ भा० ३ पृ० ४२०, १४७७

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(१०१) श्री गौतम स्वामि छन्द गा० १०

आदि—ता सुरतरु जिम जयवन्तु महावणि, सुरभंडारि जेम चिन्तामणि।
दिणमणि जिमं सोहइ गयणंगणि, तिम जिण सासणि सिरि गोयम गणि ॥१

अन्त—नियमण वंछिय कज्जि नमइं, जसु सुरनर किन्नर।
इद चंद नागिंद असुर, विज्जाहर मुणिवर।
उच्छव मंगल रिद्धि विद्धि, जसु नामि पयासइं।
रोग सोग दोहग्ग दुरिय, दूरतरि नासइं।
सो वीर सीसु सूरीस वरु, महिम गरिम गुणि मेरु गुरु।
सिरि गोयम गणहरु, जयउ चिरु, सयलसंघ कल्याण करु ॥१०

---

(१०२) श्री स्थूलिभद्र मुनीन्द्रच्छंदांसि गा० ८

आदि—जो जिण सासणि कमल वणिहि, हंस जेम विक्खाउ।
सो वन्निसु सोवन्न तणु, थूलिभद्द मुणिराउ ॥१

अन्त—थूलिभद्दु मुणिवरु जयउ, घण गुण रयण निहाणु।
सयल सघ मंगल करणु, धीरिम 'मेरु' समाणु ॥८

---

(१०३) श्री स्थूलिभद्र मुनीन्द्र छंदांसि गा० २५

आदि—मेरु समाणु जु सीलि पसिद्धउ, कोस वेस रस रंगि न विद्धउ।
मलिउ मयण बल जिणि अलवेसरि, जयउ सुथूलिभद्द मुणि केसरि। १

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अन्त—गुणवंतहं सिरि तिलउ, निलउ दंसण चारित्तह ।
अच्चब्भुय वर चरिय, भरिउ मंदिरु तव सत्तह ।।
भद्दबाहु पट्ट सूरि पट्ट उदयाचल दिणयरु ।
चरम चउद्दस पुव्व धारि. सेवय जण सुहयरु ।।
उब्भियउ हत्थु जिणि सील गुणि, महिम सुरद्दुम देव कुरु ।
सो थूलिभद्दु संघह जयउ, मयण विडंबणु मेरु गुरु ।।२५

(८६) रत्नशेखर सूरि

(१०४) गौतम रास सं० १४१९, थिरउद्दपुर, गाथा ७५

आदि—ओंकार तुम्ह माय वीर, सिरिवन्त महन्तो ।
हियँ कमल झाएवि ध्यावेइ, वीरु जिणवर अरिहन्तो ।।
अभणिसु गोयम स्वामि तणौ, गुण संथव रासौ ।
जिणु निसुणो भो भविय लोय, मणि हरषि उलासो ।।१।।
पुहवि पसिद्धो मगहदेस, वर गुव्वर गामि ।
सार सरोवर कूव वावि, वणिक्कण अभिरामू ।।
तहि निविसइ वसुभूई नांत्रि, दिय राउ पसिद्धउ ।
गोयम गुत्त पवित्त वसु, बहु रिद्धि समिद्धउ ।।२।।

अन्त—जयवंतव जिण शासनि राजैं, परव महोच्छवि मंगल गाजैं ।
पहिलौ विरधि वधावणौ
भणहि गुणहि जे गोयम रासौ ।।
अष्ट महासिधि नवइनिधि तहि थरि निश्चल करहिं निवासौ ।।७४।।
चौदहस यह गुणोसइ बरसैं थिरउदपुरि गरुवउ मणि हरसैं,
रासु एहु गोयम तणौ
रयण सिहर सुरींदिहि कियौ चौबिह संघ विविह परैं ।।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रिद्धि वृद्धि मगल सिरि दियौ ॥७५॥

इति सप्तमी भाषा । इति श्री गौतम स्वामिरास समाप्ता । लिखित ब्रा० देवीदासेन सा० पदार्थ पठनार्थम् ।

महो० विनयसागर जी गुटका नं० ८६ ॥

वि० इस गुटके में इसके बाद संजयि अध्ययन, अर्थ सहित सं० १५६२ श्रावण सुदि १२ सा० पदार्थ पठनार्थ लिखा हुआ होने से उपरोक्त रचना का भी लेखनकाल १५६२ संभव है ।

---

(६०) कान्ह (श्रीमाल छांडाकुल)

(१०५) अंचल-गच्छनायक गुरू रास गा० ४०

सं० १४२० खंभात

आदि—रिसह जिणु नमिवि गुरु वयण अविचल धरी,
पंच परमेट्ठि महमंतु मनि हढु करी।
अंचल गच्छि गछराय इणि अणुकमिइं,
सुगुरु वन्नेसु गुरु भत्तिभरवि क्कमिइं ॥१

अन्त—**खंभाइत** वर नयर मझारि, दीवाली दिनि अनु रविवारे,
संवत चऊद विसोत्तरइ ए ॥३७
श्रीमाली छांडा कुलि जाउ, **कान्ह** तणइ मनि लागउ भाउ,
नवउ रासु सो इम करइ ए ॥३८
तस घरि विलसइं मंगल माल, तास कित्ति पसरइं चउसाल,
महिमंडलि सा रुण-झणइ ए ॥३९
लच्छी तास सयंवरि आवइ, एउ रासु जो पढइ पढावइ,
कान्ह कवीसर इम भणइ ए ॥४०

इति श्री गच्छ नायक गुरू रास

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्रति—मुनि पुण्यविजयजी संग्रह

कवि की अन्य रचना दे० जै० गू० क० भा० ३ पृ० १४८१

---

(६१) पहुराज (ख० जिनोदयसूरि भक्त श्रावक)

(१०६) जिनोदयसूरि गुण वणन गा० ६

सं० १४२० लगभग

आदि—किणि गुणि सोवि तवण, सिद्धिहिका भति तुम्ह हो मुणिण ।
संसार फेरि डहणं, दिक्खा बालाणए गहणं ।।१।।

अन्त—फल मन वंछिउ होइ जि किवि, तुइ नाम पयासय ।
तुझ नाम सुणि सुगुरु सेर, दारिद पणासइ ।
नाम गहणि तुय तणय सयल, श्रावय उस्सासहि ।
....

जिण उदयसूरि गणहर रयणु, सुगुरु पट्टधर उद्धरणु
पहुराज भणइ इम जाणि करि, सयल संघ मंगलु करणु ।।६।।

प्र० ऐ० जैन काव्य संग्रह पृ० ३९-४०

जिनोदयसूरि आचार्यकाल सं० १४१५-१४३१

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(६२) जयसिंहसूरि (कृष्णर्षिगच्छीय)

(१०७) प्रथम नेमिनाथ फागु गा० ३२

सं० १४२२ आसपास

आदि—पणमिवि जिण चउवीस पइ, सुमरवि सरसइ चित्ति।
नेमि जिणेसर केवि गुण, गाएसउ बहु भत्ति ॥१
जादव कुल सिंगारु पहु नेमिकुमारो।
समुद्र विजय नरहि, पूतु, सिवदेवि-मल्हारो ॥
सोहग सुंदर तरुणदेह, गुणगण भंडारो।
सिवसिरि रत्तउ गणइ चित्ति, संसारु असारो ॥२
अन्त—भास—इम विलवतिय रायमई, नेमिनाह परिचत्त।
परियणु कह नवि बूझवइ, विरहानल संतत्त ॥३१
दाणि दलिद्द दलेवि, लेवि संजमु भर दुद्धरु।
केवलु नाणु लहेवि, सिद्धि, पत्तउ नेमीसरु।
भविय जिणेसरभवण रंगि, रितुराउ रमेवउ।
कन्हरिसी जयसिंहसूरिकिउ फागु कहेवउ ॥३२॥

प्रकाशित— प्राचीन फागु-संग्रह पृ० १२-१६

(१०८) द्वितीय नेमिनाथ फागु गा० ५३

सं० १४२२ आसपास

आदि—वंदिवि सिवदिवि नंदनु, चदनु जिम जगि सारु।
गाइसु नेमि कृपागरु, सागरु गुणहं अपारु ॥१
समुद्रविजय नृप संभवु, दंभु विवज्जितु चित्ति
नेमि न योवनि माचइ, राचइ साचइ तत्ति ॥२
अन्त—केवलनाणिहि वाणिहि, छेदिउ संसय कंदु।
सीधउ सिवपुरगामिउ, सामिउ नेमि जिणिंदु ॥५२

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कीधउ कन्हमुनीसर, गणहरु जयसिंहसूरि ।
फागु रे सुणतह गुणतह, पापु पणासइ दूरि ॥५३

प्रकाशित—प्राचीन फागु-संग्रह पृ० १७-२१

---

(६३) राजतिलक (? विजय तिलक)

(१०९) जंबूस्वामी फाग गाथा ६० सं० १४३०

आदि—वंदवि वीर कृपानिधि, सानिधि दान अपार ।
पामीय सुहगुरु आयसु, गाइसु जंबकुमारु ।१
मगधदेशमुखभूषण, दूषणरहित निवासु ।
नयर राजगृह राजए, गाजए जगि जसवासु ॥२

अन्त—फागु वसंति जि खेलइ, वेलइ सुगुण निधान
विजयवंत ते छाजइ, राजइ तिलक समान ।५९
चउदह तीस संवच्छरि, मुच्छरि मानि विमत्तु
जंबुय गुण अनुरागहि, फागिहि कहीय चरित्तु ॥६०

प्रकाशित—प्राचीन फागु-संग्रह पृ० २५-३०

---

(६४) जयशेखरसूरि (महेन्द्रसूरि शि०)

(११०) द्वितीय नेमिनाथ फागु गाथा ४९ सं० १४४० आसपास

आदि—पणमिय शिवगतिगामीय, सामीय सवि अरिहंत ।
सुर नर नाह नमसिय, दंसिय सयल दुहंत ।१

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गाइसु मण अणुरागिहिं फागिहिं नेमिकुमार ।
जिणि जगि सयल विदीतउ, जीतउ भुजबलि मारु ।२

अन्त—अगणिय राजल वयणु, दाण संवत्सर देई ।
रेवय गिरिवरि सामिसालु, संजमसिरि लेई ।।
चउपन दिणि अकलंक, विमल केवलसिरि पामिय ।
घणइ कालि राइमइ सरिसु, सिवि पत्तउ सामिउ ।४८
नवजुव्वणभरि सील सबलु, सोहागिहिं सारो ।
मणवंच्छिय फलदेउ देउ, सिविदेवि मल्हारो ।
सिरि **महिंदप्पहसूर** सीसि, **जयसेहरि** कीजइ ।
फागु एउ भवियणि वसंत, ऋतु रसिहिं रमीजइ ।४९

प्रकाशित—प्राचीन फागु संग्रह पृ० २४२-१=२४२-७

दे—जैन गू० क—भाग १ पृ० २४ भाग ३ पृ० ४२४-२६-१४७८

---

(६५) गुणचंदसूरि

(१११) वसंत फागु गाथा १६, १५वीं शताब्दी

आदि—अहे फागुण फली अ बीजोरडी, पुहतलु मास वसंत ।
वनि वनि तरुअर कूंपलां, केसू कसम अनंत ।१
कामिणि कारणि भमरलु, भमतु माझिम राति ।
काची कलिय म भोगवी, भोगवी नव नवि भाति ।२

अन्त—अहे नइ हरि मइ आराहीउ, नवि जागु सिवराति ।
गोरी कंठ न ऊतरि, माहरी उत्तम जाति ।१५

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अहे वसंतक्रीडा तीह अति करि, आणंद मुनिनि पूरि।
मनरंगि एम बोलि, **श्री गुणचंद्रसूरि** ।१६

प्रकाशित—प्राचीन फागु-संग्रह पृ० ५५-५६

---

(६६) अज्ञात

(११२) श्री जयतिलकसूरि भास गा० १०

आदि—सरसति करिन पसाउ, गणधर तपागच्छ मंडणउ।
गाइसु **जतिलक**सूरि, दुख दारिद्र विहंडणउ ॥१

चालि सखीय गुरु वांदीइ,
रिद्धि वृद्धि सू सविचार जास पसाइ नांदीइ।
श्री **अभयसिंह**सूरि पाटि, दिणयर जिम जगि विस्तरइ ॥२

चालि० आंचली

अन्त—देव भवनि ध्वज लहलहइ, घरि घरि गूडी ऊछाह।
जिण सासणि वद्धामणउ, श्रावक मनिहि उच्छाह ॥६

इण परि सवे सुहासिणी, वंदीय दियइ आसीस।
पास पसाइ श्री संघसु, प्रतपउ कोडि वरीस।१०.

प्रतिलिपि—अभय जैन ग्रन्थालय

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(६७) अज्ञात

(११३) २ श्री जयतिलकसूरि भास गा० ९

आदि—नागनयर मुख मंडणउ, पणमीय पहु पास ।
गाइसु सहिगुरु अम्हतणां, जिम पूजइ आस ॥१
तपागच्छि मुनिवर गहगहइं, चंद्रकुल राजहंस ।
श्री **जयतिलक** सूरि जीणीइं, मुणि जण अवयस ॥२

अन्त— चिंतामणि सुरतरू समउ, कलि कामघट एउ ।
चिंतित फल सेवक तणा, देयइ दूसमि सोय ॥८
देशना दुख दच्च उल्हवइ, **अभयसिंह** सूरि सीसु ।
भास पढंतां पूजिसिइं, नितु आस जगीस ॥९

प्रतिलिपि—अभय जैन ग्रन्थालय

---

(६८) अज्ञात

(११४) जयतिलकसूरि भास गा० ७

आदि—थंभणपुरवर मंडणउ, पणमीय पास जिण सामि ।
श्री **जयतिलक** सूरि गाइसो, नव निधि जहनइ नामि ॥१
गुरु मुनि रयण, जीतउ मोहमयण, नयण निहालिसु आपणइ ए ।
सही ए अतिहं उत्साहो, लीजइ सुकृतलाहो, श्री **जयतिलकसूरि** उवाहो ॥२

अन्त—वचन सुधारसि वरसय, दरसय ए सिरपुर माग ।
रयणायर गच्छ पालइए, टालइए पाप नुं लाग ॥६

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अलविहि जेह सिरि कर निसय, निवसय तीण गुण ग्राम ।
चिंतामणि सुरतरु समउ, कामगवी जेहनउ नाम ॥७

प्रतिलिपि—अभय जैन ग्रन्थालय

---

(९९) जयकेशरमुनि

(११५) जयतिलकसूरि चउपई गा० ३२

आदि—सामिणि सरसति तणइ पसाइ, नितु मन वंछित कवित कराइ ।
अम्ह मनि आज ऊपनु भाउ, भगतिहि वन्निसु सुहगुरु राय ।१।
गरूया अभयसिंह सूरींद, तास पट्ट उजोयण चंद ।
तपागच्छ मंडणु गुणवंत, सिरि जयतिलकसूरि जयवंत ॥२॥

अन्त—इण परि जे नितु सुहगुरु थुणइ, तेउ चउपइ जे श्रवणिहि सुणइ ।
जयकेसरि मुणिवर इम कहइ, ऋद्धि वृद्धि मंगल ते लहइ ॥३२॥

पत्र० ३-४ से ११ (१६वीं शती लि० भारतीय विद्या मंदिर-बंबई)

---

(१००) अज्ञात

(११६) श्री जयतिलकसूरि भास गा० ८

आदि—तपगच्छ मंडण दुरिय विहडण, खंडन मोहन वीर ।
सुहगुरु गुरूउ नयणे दीठउ, मीठउ गुहिर गंभीर ॥१
सखि श्री **जयतिलक** सूरिंदो, वांदिवउ अभिनव चंद । आंचली ॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अन्त—सकल लोक मनि आणंदण पूरउ, सूरउ वर तप तेज ।
भवीयण जण जिम तम्हि चिरनंदउ, वंदउ मन नइ हेज ॥८

प्रतिलिपि—अभय जैन ग्रन्थालय

---

(१०१) जयतिलकसूरि

(११७) गिरनार चैत्य परिपाटी गा० १८

आदि—सरसति वरसति अमियज वाणी, हृदय कमल अब्भिंतर आणी
जाणीय कवियणि छंदो ॥
गिरिनार गिरिवरहज केरी, चेत्र प्रवाड़ि करुउ नवेरी,
पूरीय परमाणदो ॥१

अन्त—हुँ मूरख पणइ अच्छुं अजाण, श्री **जयतिलक**सूरि बहु मानं,
मानु मन मांहि एहो ।
पढइ गणइ जे ए नवरंगी, चेत्य प्रवाड़ी अतिहि सुचंगी—
चंगीय करइं सुदेहो ॥१८

प्रतिलिपि—अभय जैन ग्रन्थालय

---

(११८) आबू—चैत्य परिपाटी गा० १७

आदि—चरण कमल पणमेवि भत्ति, सिरि सरसति केरा ।
चेत्र प्रवाडिइ नमिसु देव, **आबूय** नवेरा ॥
मण तण वयण ज उल्हसइं, जस दरिसण दिट्ठइं ।
बुहु भव अजीय पाव-कम्म, पण निश्चिइं नीठइं ॥१

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अन्त—पढइं गुणइं जे संभलइ, **आबूय** गिरि
चेत्र प्रवाइज हरक गय, सिव सुगह सेरी ।
तीरथ यात्रा पुण्य ते, पामइं मन सुद्धिहिं
कहयं सुगुरु **जयतिलकसूरि**, वाढइ ऋद्धि वृद्धिहिं ॥१७

प्रतिलिपि—अभय जैन ग्रन्थालय

---

(१०२) जयतिलकसूरि शि०

(११९) श्री नेमिनाथ रास गा० २१

आदि—सासण देवति देवि अंबाई, माई चलणे तनु मन लाइ,
ध्याई सुह गुरु पाय ।
नेमिनाथ गुण मण आगांदिइं, गाइसु रासा केरइ छंदिइ,
वंदिसु यादव राय ॥१

अन्त—श्री **जयतिलकसूरि** सुपसाइं, नितु मन वंछित कवित करांइं,
जाइ पातक दूरो ।
मन शुद्धि जे गाइं रासउ, भवि भवि साम्ही तम्ह ते दास,
आसकि जस कपूरि ॥२१

प्रतिलिपि—अभय जैन ग्रन्थालय

---

(१२०) सोपारा वीनती गा० १९

आदि—पढम जिणेसर पय पणमेवी, सरसति सामणि चित्ति घरेवी,
सेवीय सुहगुरु पाय।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सरग जमलि **सोपारउं** भणियइ, आगम वेद पुराण श्रुत सुणीयइ,
थुणीयइ आदि जिणराय ॥१

अन्त—हुं मूरख छउं बुधि बल हीणउ, श्री **जयतिलकसूरि** गुरु पय लीणउ,
खीणउ पाप असेसो।
पढइं गुणइं जे नित सोपारइ, भाव सहितु आदीसु जुहारइ,
सारइ काज असेसो ॥१६

प्रतिलिपि—अभय जैन ग्रन्थालय

(१२१) आदिनाथ विवाहउ

सं. १४५३ भादवा १० र०

आदि—सेत्रुंज गिरिवर तीरथराय, ताय आदीसर सेवीयइ ए।
जस सिरि कोडाकोडि, जोड़ि करीयल कवीयण भणइ ए; १
भणइ कवीयण तत्थ, सिद्धि गया मुणिवर सत्थ।
असंख जिणवर नाण, अनंत मुनि निरवाण ॥२

अन्त—नवामहल नवयोवन, अविहड़ प्रीति संबंध।
चउदस त्रिपनइ (१४५३) भाद्रवइ, दसमि, रवि रचीउ प्रबंधो॥
जिन धरि निज-धरि परि-धरि, जे गाइसिअ वीवाहो।
श्री **जयतिलकसूरि** शिष्यु भणइ ते, पामिसि पुण्य उत्साहो।
इति श्री आदिनाथ वीवाहउ समाप्त०। छ।

त्रुटक ए लढण १० ॥ छ ॥ प्रतिलिपि—अ. जैन ग्रन्थालय

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(१०३) अज्ञात

(१२२) मेरुतुंग सूरीश्वर रास।

आदि—केवल कमला केलि कलीय, कमलासनि सोहइ।
कणय कंति झलकंति कंति, तिहुअणि जण मोहइ।
अष्ट महा सिद्धि रिद्धी सहीय, बहु लद्धि समृद्धिउ।
गोयम सामीय नमीय वीर, जिण सीस प्रसिद्धउ ॥१॥

तसु अनुसारिहि ग्यारमउ, **अंचल गछ** नायक।
सुरतरू सुरही रयण जेम, नम (? मन) वंछीय दायक।
गाइसु गुरु श्री **मेरुतुंग**, सूरीसर रंगिहि।
निसुणउ भवियण भत्ति भावि, रोमची अंगिहि ॥२॥

× × ×

अन्त—सिरि गछनायकु श्री सुगुरु **मेरुतुंग सूरिंद**।
नाम निरंतर जो जपइं, तहि घरि नितु आणंद ॥६॥

इति श्री गछ नायक श्री मेरुतुंगसूरीश्वर रास संपूर्ण।

प्रति—पत्र–१५ स्थान—लींबड़ी भंडार

प्रतिलिपि—अभय जैन ग्रन्थालय।

वि० मेरुतुंगसूरि समय—गच्छनायक पद सं० १४४६ स्वर्ग १४७१

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(१०४) अज्ञात

(१२३) नागपुरीय गच्छ सुगुरु फाग गा० २०

सं० १४५३ लगभग

सारद सारद हियइ धरि, सुह गुर चलण नमेवी ।
गाइसु **हेमहंससूरि रयण सागरसूरि** गुण केवी ।१

अह गुण गायसु **चंद-गछि, दिवसूरि** मुणिंदो ।
तसु अनुकमि **जयसिहर सूरि**, तप तेजि दिणिंदो ।
दसेण जलहर विरद जासु, गुण मणि भडारो ।
वयरसेण सूरि राउ, सरसइ उरि हारो ।२।

निम्मल दसण नाण चरणि, सोहइ सुपवित्तो ।
हेमतिलयसूरि तासु पट्टि, समवासिय चित्तो ।
जासु सुगुण निय वाणि थुइ, **पोराज** नरिंदो ।
सिद्धिचक्र वर लद्ध, **रयण सेहर** सूरीन्दो ।३

तसु सिंहासण वर रिकु मुद उल्हासण चंदो ।
पण यण भवियण विहिय, नयण उल्हासण चंदो ।
अमिय वाणि धारा पवाहि, सिंचिय सुह कंदो । ।
पुन्नचन्दसूरि संतु, **हिमचंद** सूरिन्दो ।४

पुरि पट्टणि गामागरिहिं, **पुंनचन्दसूरि** विहरंता ।
धण कणि जण गणि संभरिय, **संभरि** नयरि पहुंता ।५

अन्त—**हेमहंससूरि** होउ तास, भवियण बोहंतउ ।
रयणसागर सूरीस जुतु, महियलि जयवंतउ ॥२०॥

इति श्री सुगुर फागं ।। प्रति अभय, जैन ग्र०

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(१०५) उ० मुनिरत्न गणि शि०

(१२४) तपगच्छ गुरु नामावलि गा० ११

आदि—वीर जिणेसर पय कमल, प्रणमीय बहु विह भत्ति ।
तव गच्छ गणहर गुण गहण, निसणउ एकं चित्ति ।
धरणीयलि धीरम निलउ, सिरि धनेसर सूरि ।
चरम जिणेसर चित्तपुरे, ठावी साहस धोरि । १

अन्त—ईण अनुक्रमि **मुनिरतन** गणि, उवज्झराय पणमेसु
यर रयणाधिक पवन्नि कर, महुत्तर पमुह असेस ।।
मण तण वयण एकंति करी, ज बंदइ नर नारि
रिद्धि वृद्धि मगलि विउल, सुह पामइ ते सुविचार ।।११

प्रति अभय०

---

(१०६) अज्ञात

(१२५) श्री रत्नसागर सूरि भास गा० ८

आदि—तपगच्छ सिरि सिणगार, जिन शासन आधार ।
गरुउ गणधरू ए, जंगम सुरतरु ए ।।१
आगम शास्त्र अपार, जाणइं तत्व विचार ।
सुहगुरू निरमूल ए ।।२

अन्त—संजम सिरि वर नारिय बोलइ, तोलइ कोइ न दीसइ
इसूं विमासी ए वर विरीउ, भरीउ ज्ञान वरीसइ ।।७

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सकल लोक मनि आणंदण, पूरउ सूरउ वर तप तेज ।
भवीयण जण जिम तम्हि चिर नंदउ, वंदउ मन नइ हेज ।।८

प्रति० अभय,

(१०७) अज्ञात

(१२६) सुहगुरु चउपई गा० १६

आदि—गोयम गुरु पय कमल नमेवि, समरीय सामिणि सरसति देवि ।
हियइ धरेविणु निरुमल भाव, गासिउ गुरु गरुया गच्छराय ।।१
चन्द्रगच्छि **भवणेन्द्रह** सूरि, नामि पापि पणासइ दूरि ।
असयन क्रमि समरू निसदीस, पहिला सिरि **देवभद्द** गणीस ।।२

अन्त—लहूयां लगय जिणि लीधी दीख, मोहराय रहिं दीधी सीख ।
जस गुण संख न लाभइ पारू, श्री **रत्नसागरु** सरि वखाणि ।।१५
रतनसंघ सूरि नत जे नमइं, माहामत्र वयण ऊचरइं ।
गरूयां सतीरथ सविमनि धरू, भव समुद्र सो लीलां तरइं ।।१६

प्रति० अभय

(१०८) अज्ञात

(१२७) श्री गुरुगीतम् गा० ११

आदि—समरि सुर भावि सरसति ए, सरसति अमी रस वरसती ए ।
गच्छ **रयणायर** राउ ए गाइसु ए, गाइसु सहगुरु बहु भत्तिइं ए ।।१

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

धारानंदन धीर ए वीर जिण, जिण-सासणि अहिलसइ ए।
कामल उयरिइं हंस ए, हंस जिम जिम जण मण अवलसइ ए ॥२
अन्त—श्री**अभयसिंह** सूरि पाटि ए पुव्वदिश, पुव्व दिसि दिनकर झला-हल ए।
मण तण वयण एकांति ए ध्यानिहिं, ध्यानिहिं कलिमल कलि टलइ एं ॥ १०
सहीय सुलाहिस दीह ए जही यह, दीयह निजगुरू वांदीय ए।
रिद्धि वृद्धि सूं परिवारि ए नामिहिं, नमिहिं चिर थिरि नांदीय ए ॥११
प्रति० अभय जैन ग्रन्थालय

(१०६) अज्ञात

(१२८ तपा गुरावली गा० ३४

आदि—पणमउ चउवीसवि चलण, रिद्धि वृद्धि सवि मंगलकरण।
तपागच्छि तिहुयण जयबंत, गादसु गुरु गरूया गुणवंत ॥१
चउवीसमु जिणेसरू वीरू, पाप ताप दमवानज नीरू।
जिण सासण केरूउ सिणगारू, पढम सीसु गोयम गणधारू ॥२
अन्त— श्री **रतनागर** गच्छि विदवांस, जे जे रत्नाधिक पड़या हंस।
महासत महासती सविहु नाम, करजोड़ी नइ करउ प्रणामु ॥३३
इणि परि सहुगुरु केरां नाम, लेइ नइ **जे** करइं प्रणामु।
मनसा वाचा काय विशुद्धि, तीहं तणइ घरि अविचल सिद्धि ॥ ३४
प्र० अभय जैन ग्रन्थालय

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(११०) वच्छ भंडारी

(१२९) आदिनाथ धवल (सं० १४७१ काती)

आदि—राग सामवेदी

जिण चउवीस आराहिसिउ ए, अम्हि आदि जिणेसर गाइसिउ ए
कवि जणणी अम्ह मुखि वसइ ए, तु बुद्धि प्रकाश मनि उल्हसइ ए ।

अन्त—**वच्छ भंडारी** इम भणइ, आदिसर अवधारि ।
अतकालि आडउ थई, अम्ह निरया गइ निवारि ।
विद्या संक्षि एकहुत्तरइ, धुरि कहउ काति मास ।
एह धउल तिहां भणउ, कहितां पुण्य प्रकास ।
इति श्री आदिनाथ धवल संपूर्ण
संवत् १५४५ वर्षे फा० बदि **लिखितः श्री सीरोही नगरे** ।
पत्र ३ पंक्ति १४ अक्षर ४० गाथा लिखी नहीं, ८५-९० लगभग ।

प्रति० अभय०

दे. जै. गु. क भा. १ पृ. ६५, भाग ३, पृ, ५००

---

(१११) जिनवर्द्धन सूरि

(१३०) पूर्व देश तीर्थमाला गा० ३२

आदि—हियय सरोवरे धरिय गुरु राय, सूरि **जिणराय** पायारविंद ।
विणय बहुमाणहि पुव्ववर देसि, संठिया थुणउ तित्थाण वंद ॥१
पहिलउ, **सच्चउर** नयरि पणमेवि, वीर जिणेसर कप्परुक्खं ।
तयणु सिरि रयणापुरि संति तित्थकरं, वंदउ नासियां सयल दुख ॥२

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अन्त — इम्म जम्मठाणइ सिंरि निहाणइ, गाम नयरहि संसिया।
सिरि सकल जिणवर, धण गुणालय, **लक्खराय** नमसिया
जिण बिंब सग्गि पयालि महीयलि, जे असासय सासया।
ते नमउं पूयउ थुणउ भत्तिहि, सिद्धि मग्ग पभासया ॥३२

इति पूर्व देश चैत्य परिपाटी समाप्ता, श्री जिनवर्द्धनसूरिभिः कृता
लेखन संवत् १४९३ लि॰ प्रति मे स्थान – अभय जैन ग्रन्थालय।

वि॰ जिनवर्द्धनसूरि को आचार्य पद सं॰ १४६१ में मिला था

---

(११२) अज्ञात

(१३१) खर॰ गुर्वावलिः—गुरुषट्पदी-पद्य १४ में से आवश्यक पद्य

जिण सासणि सिंगार मंत्री **अर्जुन** कुल मंडण।
लखमणि देवी कुखी राजहंस दुह दुरिह विहंडण॥
मयगल जिण मा सोहेइ जोवि मुनिवर परिवरिउ।
लक्षणतर्क विचार जांण संयम सिरि वरियउ॥

जिणराज सूरि पट्टहि जयो, **जिनवर्धनसूरि** अनसरो।
चिरुणंद समुदाय सम खेमवंत कलिरव करो॥१०॥

अर्जुन मत्रि मल्हारु माय **लखमणि** उरि धरियउ।
तवि सयमि सहित संयण लक्खण परिहुवरियउ॥
आगम ग्रन्थ प्रमाण पमुह विद्या वक्खाण एतहि
सारासार विचार सहल ते पट्टंतरि आणहि॥
जिणराजसूरि पट्टुद्धरण, श्री जिण**वर्धन सूरि** गुरु॥
समुदाय सहित मंगल करण, भूय जेम **जयवंत** चिरु॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वि० इससे पहिले के पद्यों में गौतम स्वामी, कालिक सूरि सम्बधी ४ पद्यों के बाद खरतर गुर्वावली प्रारंभ। जिसमें जिनवधन सूरि तक के नाम, फिर कुशल सूरि का एक छप्पय—"कुशल बडौ संसारि", इसके बाद "दससय चौबीसेहिंम", जिणदत्त सूरि नदौ, नागदेव वर सावयण, वाले पद्य है।

(महो० विनयसागर जी गुटका नं. ३३)

---

(११३) सिद्धसूरि

(१३२) पाटण चैत्य परिपाटी गा० ६४ संवत् १४७६।

आदि—निय गुरु पाय पणमेवि, सरसति सामिणी मन धरिय।
हियड़इ हरस धरेवि, गोयम गणहर अणुसरिय।
पभणिसु चेत **प्रवाड़ि अणहिलपुर** पट्टण तणिय।
मुझ मन खरीय रहाहि, दिउ मति निरमल अति घणीय॥१

अन्त—पट्टण प्रसिद्ध हरखि किद्धी **चैत प्रवाड़ि** सुहामणि।
भणतां गुणतां श्रवणि सुणतां, अतिह छइ रलियामणो।
पभण्या जिकेइ नाम तेइ, अवर जे छइ ते सही।
छिहुत्तर वरसइ, मन हरिसइ, **सिद्ध सूरिंदइ** कही॥६४

स्थान—जैसलमेर भंडार प्रतिलिपि—अभय जैन ग्रन्थालय।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(११४) ख० जिनभद्र सूरि शि०

(१३३) खरतर गुरु गुण छप्पय पद्य ३२+१६=४८

स. १४७५ लग.

आदि—सो गुरु सुगुरु छविह जीव, अप्पण सम जाणइ।
सोगुरु सुगुरु जु सच्च रूव, सिद्धंत वखाणइ।
सो गुरु सुगुरु जु सील धम्म निम्मल परिपालइ।
सो गुरु सुगुरु जु दव्व संग, विसम सम भणि टालइ।
सो वेव सुगुरु जो मूल गुण, उत्तर गुण जइणा करइ।
गुणवंत सुगुरू भो भवियणह, पर तारइ अप्पण तरइ ॥१

अन्त—दुर्घट घटना घटित कुटिल, कपटागम सूत्कट।
वावाटोत्कट क्ररटि करट, पाटन सिंहोद्भट।
नट विट लंपट मुक्त निकट, विन तारि भटस्फट।
हाटक सुघट्ट किरीट कोटि, घृष्ट क्रम नख तर जट।
विस्टप वांछित कामघट, विघटित दुष्ट घट प्रकट।
जिनभद्र सूरि गुरूवर किकट, सितपट शिरो मुकुट ॥३७

(प्र. ऐ. जै. का. संग्रह पृ. २४ से ३६

टि. ये छप्पय समय-समय पर फुटकर रूप में रचे जाते रहे होगें। इसकी प्रतियां हमारे संग्रह में हैं जिनमें से प्रथम में ३२ पद्य हैं द्वितीय में १६ अधिक है।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(११५) देवदत्त ख० (वहरा ऊदा सुत)

(१३४) जिनभद्र सूरि धूवउ गा० २

सिसि गच्छ मंडण मयण रिण, खंडण धोणग नंदण ए।
मिलि सुदरसण अमृत वरिसणु, वाणी सुललितु ए ।।
क्रोध मान माया लोभ निवारणु, धारणु संजमु निर्मलुआ।
सयल शास्त्र व्याकरण वखाणण, संघ सभापति उधरणाउ ।।१
असरण सरण सूरि मंत समरण, करण कवित मतीए।
वादिय पंचायण विदुर विचक्षण, छत्तीस गुणालंकलु ए ।।
जिनराज सूरि पाट चिंतामण, भद्दसूरि गुरु सुहकरु ए।
भणै देवदत्त वहरा ऊदा सुत, सहि छाहड़ सुहकरणा हो ।।२

प्रति० अभय०

---

(११६) भैरइदास

(१३५) जिनभद्र सूरि गीतम् गा० २

मनमथ दहन मलिनि मन वजित, तप तेज दिनुकरू ए।
महिम उदधि गुरुया गच्छ गणधर, सकल कलानिधि ए।
वादि तरकि विद्या गज केसरि, जोग जुगति यति संपुन्नु।
आपं वसिकरण सुखनिधि, संघ सभापति मंडणु ।।१
चतुर्दिश प्रगट अमृत रस पूरित, ज्ञानि गे रेखम...।
पंच महाव्रत मेरू धुरंधर, संजम सुगृहितु ए।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जिनराज सूरि पाट ससि सोभित, भणति **भंरइदासु** मणहरुआ।
जिणभद्र सूरि सुगुरू गुण बदउ, मन वंछित फल पामउ ए ॥२

प्रति० अभय०

---

(११७) जिनभद्रसूरि शिष्य

(१३६) श्री जिनभद्र सूरि गीतम् गा० ५

आदि—माइ ए दीठउ माणिकु मेल्हि सूणीयए गच्छपति आवतउ ए।
कवणिहि अम्ह गुरु आवतउ दीठउ, कवणिहि लइय वद्धावणी ए ॥१

अन्त—सरसवि ठविउ सोवन पाटु, सासणि देवति सेस वधारिय ए।
गच्छपति बइठउ **जिणभद्द** सूरि, संघ मंडण गच्छ उद्धरण ॥५

प्रति० अभय०

---

(१३७) जिनभद्रसूरि अष्टक गा० ९

आदि—भवि यण भो भड़ सुणह बलु दलु, सज्जिविरि चडह।
जिणभद्द सूरि मुणिराय सु समर, महांगणि जिम लड़हु ॥३

अन्त—रिषभ अजित संभव जिणिंदु अभिनंदण सामिउ सुमति पद्म।
मयण राउ जिण जित्तु कोह, झाणानलि जालिउ।
मोहमल्लु जेणि नथि, माया पिण टालिउ।
कुमत प्रमुख नट विकट सुभट, जिण हेलहि जित्ता ॥
पंच विसय परिहरवि जेण, जय लच्छि धत्ता।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भव भवणि रमणि मिल्हेवि कर, नाण सुदंसण मनि धरिउ ।
जिनभद्रसूरि गुरु जाणि करि. चरण रमणि लीला वरिउ ।।६

प्रति० अभय०

---

(१३८) जिनभद्रसूरि गीत गा० ९

आदि—पहिलउं पणमीय देव, देव तणो जु देव
गाइसु गणहरु ए, जिनभद्र सूरि गुरु ए ।।१
धीणिय साह मल्हार, खेतू कुखि अवतार ।
गुणवइ सहगरू ए महिमा सागरू ए ।।२

अन्त—श्री **जिनभद्रसूरि** राइ, दीठउ पातक जाइ ।
सुमति सुजाण गुरु ए, नंदउ तां चिरू ए ।।

प्रति० अभय०

---

(११८) धनराज

(१३९) मंगल कलश विवाहलु पद्य १७० संवत् १४८०

आदि—परमगुरु आदि जिण नमवि पभणेसु, मंगल कलश वीवाहलउ ए ।
पुहवि मनोहरो मालव देश नामि, परिणामि रलियामणउ ए ।
उज्जेणी वर नयर सुविसाल, पूरिय धण कण रयण खाणि ।
सिंधु अरिगजणी दिल्य ! तण, भूपाल वयरसिंघ वर नरिंदो ।।१

अन्त—इसा करमनउ सुणउ विचार, **मंगल कलश** विरतउ संसारि ।
देवलोक पंचमइ जि जाइ, भवि त्रीजइ वलि सिद्धि लहेइ ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

संवित्सरि विक्रम नइ कही, चउदइ सइ असीयइ ए सही ।
मंगल कलस चरितु सुविसाल, **धन्नराजि** इम कहिय विसाल ।
पढइ गुणइ एक मना सही, तिहि घरि आवइ नवनिधि सही ।
इति श्री मंगल कलश चउपई समाप्त ॥

प्रति—पत्र—६ । पंक्ति—१६ । अक्षर—४८
ले०—१७वीं सदी । प्रति० अभय०

---

(११६) अज्ञात (जयसागरोपाध्याय)

(१४०) नगरकोट चैत्य परिपाटी गा० १५ सं. १४६७

आदि—देस **जालंधर** मति भरे, वंदिसु जिणवर चंद ।
ठामि ठामि कउतिक कलिय, विहसिय तरु बहु कंद ॥१

अन्त—सवत **चउद सताणवइ** (१४९७) ए, जे वंदिय जिणराय
चेईहर प्रतिमा थुणिय, भगतिहि पणमिय पाय ॥१४
इय सासय जे देवकुल नंदीसर पायाल
अमर विमाणे ब्रिब **जिण** ते वंदउ सविकाल ॥१५

प्रति—अभय०

---

(१२०) सोमसुन्दर सूरि शि०

(१४१) देव द्रव्य परिहार चौपाई गा० ४५

आदि—निसुणउ श्रावक जिणवर भगति, तिम करिवी जिम आतम सकति ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तिम करिवउं जिम नवि छीपीइ, चिरकालिइ निरमल दीपीइ ॥ १

जिण द्रवि वाधइ बहु संसार, ओछइ कुलि लाभइ अवतार।
नरय तणी गति छेअण बहु, तउ टालेज्यो जिण द्रवि सहू ॥२

अन्त—**सोम सुंदर सूरि** तणइ पसाइ, अलिअ विघन सवि दूरिं जाइं
कीधी चउपई पणयालीस, जिण चउवीसह नामउं सीस ॥४५

इति देव द्रव्य परिहार चउपइ समाप्ता।

संवत् १५४२ वर्षे का. व. १२ दिने श्रीमति कर्करी नगरे पूज्य प. शुभवीर गणि पाद शिष्य प. अभय कल्याण गणि तिलक वल्लभ गणिभिर्लेखि श्रीऽस्तु [प्र. जैन सत्य प्रकाश क्रमाङ्क ११६]

वि. सोमसुन्दरी सूरि स्वर्ग सं. १४९९

---

(१२१) अज्ञात

(१४२) मृगा पुत्र कुलक गा० ४०

आदि—नमवि सिरि वीर जिण, जणिय जण सिव सुहो।
कम्मवण गहण, निद्दहण जो हुअ वहो।
भाषिसु भावेण भव भयह भंजण परे।
मिआ पुत्तस्स मुणिनाह चरिअं वरं ॥१

अन्त—तिजग समचित्त सिरि वरह सुपसिद्धयं।
मिआ पुत्तस्स जे भणइ सु चरित्तयं।
विवुह विमाण विलसेइ विवहुप्परे।
लहइ सुह सत्त रज्जाण ते उप्परे ॥४०

इति मृगापुत्र कुलकं समाप्तमिति।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सं. १७ वीं पं. दया कमल मुनि लिखित श्राविक सूजां पठनार्थं
प्रति—पत्र २ पं. १३ ग्र. ५२

वि. रचना की भाषा व शैली से यह १४-१५ वीं शती की लगती हैं।

---

(१२२) जयशेखर सूरि शि०

(१४३) उपधान सन्धि गा० २५

आदि—कल्लवद्धिय मंडगु दुह सय खंडणु, पास जिणि (द) नमेवि करि।
जिण धम्म पहाणहं तवु उवहाणहं, संधि मुणहु जण कन्नु धरि ॥१

सिरि चरम जिणेसर वद्ध माणि, पमणिउ जह गोयम महुर वाणि।
सिद्धंत मज्झि जसु पढ़म लीह, तसु भणिउ पमाणु महानिसीह ॥२

जह गिरिहिं मेरू गह गहण चदु, निवईण चक्कि सुर गणि सुरिंदु।
तह वीर जिणेसरि तव पहाणु, उवहाणु भणिउ गुण गण निहाणु ॥३

जे निम्मल वयण जण सीलवंत, सम्मत कलिय तह पुन्नवंत।
नीरोग देह ढढ धम्म गेह, तव सत्ति जुत्त परिचत्त गेह ॥४

एवं विह सावय सावियाय, उवहाण वहहिं कय भावि भाय।
साहज्जिण विषय कुडवयस्स, सामग्गि सुगुरू निम्मल वयस्स ॥५

अन्त—जन्मंतरि तुहुं हुग्र सुलह बोहि, भव भण पाव किय तइ विसोहि।
अह संघ चउव्विह वास लेवि, त धन्नु सुलक्खणु भणि खिवेइ ॥२२

सुगंध कुसुम वा माल ताम, तसु बंधु ठवेइ कठि जाम।
वज्जति गहिर तं पंच सद्दि, नच्चहिं ग्रनुगायहिं ग्रइ सु सद्दि ॥२३

उवहाण पवरू तव इम करेड नियधण तरा जीविय फल गहेवि।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जइ सिद्धि न पावहिं काल जोगि, सहु लहहिं तहवि पय अमर
लोगि ।।२४

इय तव उवहाणह संधि पहाणहं, जयसेह (र)सूरि सीसि किय ।
जे पढ़हिं पढावहि अनुमनि भावहिं ते पावहिं सह परम पय ।।२५

इति उपधान संधि ।

प्रतिलिपि—अभय जैन ग्रन्थालय, बीकानेर

---

(१२३) अज्ञात

(१४४) श्री कयलपाट मंडल पार्श्व स्तवनम् गा० ७

आदि—पास जिणेसर पणमियइ **खरतर** तणइ विहारि ।
सामल वन्न सुहामणउ । सखि गायउ हे मन चर रंगि ।
कयल पाटे मुख मंडणउ ए ।
करहेड़उ हे पास जिणंद पूनिम चंद सोहामणउ.
मुझ हियड़इ हे लागु रगु ।।१

अन्त—आससेणि कुल चदलउ वामा उयरिहि हस । सोइजि सामि सवि
थुथ्थुणउ ।
सवि गावउ हे मन च रंगि, **कयलपाट** मुख मंडणउ ।
करहेड़उ हे पास जिणंद **कयलपाट** मुख मंडणउ सखि० ।।७

प्रति० अभय०

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

१२४ अज्ञात (उदयकरण)

(१४५) कयलवाड़ पार्श्वनाथ स्तोत्र गा० १०

आदि—जय-जय **कयलवाडपुर** मंडणु, पास जिणेसरु पाव विहंडणु ।
तिहुयण जणमण नयणाणंदणु, संथुणेमि दुज्जण निक्कंदणु ।।१
वाणारसि पइं जम्मि पवित्तिय, वामा कुच्छि सिप्प वर मुत्तिय ।
आससेण कुल गयणि दिवायर, नव कर माण देह करुणायर ।।२

अन्त—इय पास जिणवरु पणयसुरतरु, **कयलवाडइ** संठिउ ।
चिरु कालु नंदउ भविय वंदहु, नागराय अहिट्ठिउ ।।
भव जलहि तारणु **उदयकारणु**, सत्त फण सिरि भूसिउ ।
दुट्ठारि नासणु पयड़ सासणु, मिच्छ कलिहि अदूसिउ ।।१०
प्रति० अभय०

---

१२५ अज्ञात

(१४६) श्री नाडुलाई महावीर स्तवनम् गा० ८

अन्त—जय वीर जिणेसर तिजय राय, नड्डुलाई संठिय नमउ पाय ।
तुह दंसणि नासइ पाव विंद, जय भवियण नयण चकोर चंद ।।१

अन्त—**नडुलाईय** मंडणु जण मण आणंदणु वद्धमाणु जिणु जेथुणइं ।
तह वंछिउ सिज्झए भवदुहभरु खिज्जए बंभसति होइ **उदयकरो** ।।८
प्रति० अभय०

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

१२६ सज्जण सुत

(१४७) श्री पार्श्वनाथ स्तोत्रम् गा० ९

आदि—भवभय वण गण दहणं, दरिद्द रोगारि दुरिय निद्दलणं।
सिद्धि पुर कय निवासं, सयावि सुमरामि जिण पास ॥१

अन्त —इय पासनाह देवं सरिय, सज्जण सुएण अब्भहियं।
जो त सरइ तिसझं, सो पावइ बछिइ सुहाइ ॥६

प्रतिलिपि — अभय जैन ग्रन्थालय

---

(१२७) अज्ञात

(१४८) श्री चतुर्विंशति जिन स्तवनम् गा० २८

आदि—मोह महा भड मय महण, रिसह जिणेसर देव।
करि पसाउ जिम होइ मम, भवि भवि तुम्ह पय सेव ॥१
भुवण विभूषण अजिय जिण, विजया देवि मल्हार।
भव सायर निवडत मह, राखि न तिहुयण सार ॥२

अन्त—निय अवतरणिहि ताय घरि, लच्छिहिं भरिय भंडार।
अतुल महाबल वीर जिण, जय जय जग आधार ॥२७
चउवीसह जिण संथुवणु, पढइ गुणइ बहु भत्ति।
ते नर निम्मल नाण निहि, पावइ सिवसुह झत्ति ।

प्रतिलिपि — अभय जैन ग्रन्थालय

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(१२८) अज्ञात

(१४९) धर्माधर्म विचार गा० १६

आदि—चउदह पूरब माहि जो सारु, पहिलउ धरिन समरउं नवकारु ।
पभणिसु धम्माधम्म विचारु, जीणइ जीवु तरइ संसारु ।।१
धम्मु धम्मु पभणइ सहु कोइ, धम्म करइ पुण विरलउ कोई ।
धम्म तणउ तिणि बूझिउ सारु, जिह चिति क्रोधु नहीं अहंकारु ।।२

अन्त— अज्जव मद्दवगुण संजत्त, सवे वार जीव निर्मल चित्त ।
कोपानलि कोवि न दहइ, इणइ करमि मणूत्तण लहइ ।।१५
तपु तपइ भावण भावंति, शुद्धि चित्ति जें दान दीयंति ।
क्रोध मान माया परिहरउ, इणि परि स्वर्ग लोकि संचरउ ।।१६

प्रतिलिपि—अभय जैन ग्रन्थालय

---

(१२६) अज्ञात

(१५०) नंदीसरवर चउपई गा० ११

आदि—नंदीसरवर दीप मझारि, सासतां तीरत्थ जुहारि ।
जिहिं अच्छय तिहिं आवागमण, सतजोयण देखय एक भवण ।।१
इसा भुवनतिंहि बावन्न एह, जोयण बहुत्तरि बावन्न ऊंचा तेय ।
पहुलउं पणि जोयण पंचास, ते वंदी तइ पूरउ आस ।।२

अन्त— सरवालइ हिव लेखउं जोइ, बार चउक अठतालिस होइ ।
चिहुं अंजण गिरि तीरथ च्यारि, इणि परि बावन्न गिणो जुहारि
।।१०

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बिबह संख्या तह गणिय जाणि, छ सहस चउसय अडयाणीस मणि ।
इय नंदीसर वंदीय देव, अन्नवि सासय नमउं ससेवि ।।११

प्रतिलिपि—अभय जैन ग्रन्थालय

---

(१३०) अज्ञात

(१५१) विमलाचल आदिनाथ स्तवनम् गा० २१

आदि—नाभिनरिंद मल्हार, मुरुदेवि माडिय उरि रयण ।
अवगत रूपि अपारु, सामिय सेत्रुञ्ज सय थणिय ।।१

अन्त—...य पय पंकय सेव, विमलाचल मडण रिसह ।
अह निसि पणमउं देव, अवर न कांई ईछियए ।।२१

प्रतिलिपि—अभय जैन ग्रन्थालय

---

(१३१) अज्ञात

(१५२) धर्म प्रेरणा दोहा १५

आदि—जिणवर देवु सुसाह गुरु, जस हीयडइ जिण धम्मु ।
सव्व कम्मु जयणा करइ, तस हुइ सफलउ जम्मु ।।१

अन्त—गट्ठसही जे नितु करइ, अविचल मनि पालति ।
ती बीजय भवि देवत्त लहइ, कवड़ि जख जिमु हुंति ।।१४
जीवदया साचउ वयण, परधन जे नहिणति ।
सीयल ज पालइ एक मनि, ते सहि सुख लहंति ।।१५

प्रतिलिपि—अभय जैन ग्रन्थालय

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(१३२) हरिकलश (धर्म घोष गच्छ पद्मानंद सूरि शि०)

(१५३) कुरुदेश तीर्थमाला स्तोत्रम् गा० १३

आदि — अप्राप्त

अन्त — [इ] य उत्तर देसिहिं पुण्य पएसिहिं, वंदिय जिणवर जगमहिय
हरिकलस मुणिंदिहिं मण आणंदिहिं, पद्माणंदसूरिहिं
सहिय ॥१३

प्रतिलिपि — अभय जैन ग्रन्थालय

---

(१५४) पूर्व दक्षिण देश तीर्थमाला गा २२

आदि —

अन्त — भाविहिं नमंसिय पुण्य दंसिय, जगि पसंसिय जिणवरा ।
सिरि धम्मसूरिहिं गच्छसूरिहिं, भत्ति पूरिहिं सुंदरा ।
हरिकलसि मुणिवरि भाव धरि करि, थुणिय सुप्परि सुहकरा

प्रतिलिपि — अभय जैन ग्रन्थालय

---

(१५५) श्री गुजरात सोरठ देश तीर्थमाला स्तोत्रम् गा० १९

आदि — चउवीस जिणवर पणमवि सुंदर, हियइ हरषु आणेवि घण,
सिवलच्छी दायग तिहुयण नायक, तीरथ माला थुणउ जिण ॥१

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

थुणउं पास खंभाइते थंभणेसो, वड़उ पास भूमीहरे आदि ईसो ।
नमउं नेमि सीमंधरो मल्लिमझ्य, दस चउत्रीसे भवणिहिं बिब
लक्ष ।।२

अन्त—इतिय तित्थमाला अति रसाला, पुण्यशाला मणहरा,
भाविहिं गमंमिय पुण्य दंसिय, जगि प्रसंसिय जिणवरा,
सिरि धम्मसूरिहिं गच्छ भूरिहिं, भत्ति पूरिहिं सुन्दरो,
हरिकलसि मुणिवरि भावु धरि करि, थुणिय सुप्परि सुहकरो ।।१६

प्रति० अभय०

(१५६) बागड़ देस तीर्थमाला स्तोत्रम् गा० ११

आदि—जिण नमिय सुमंगल [बागड़ मंडल, भाविहि निमल ते थुणउं ।
अरिहंत अराहउं पुण्य विसाहउं, लीजइ लाहउं भव तणउं ।।१

अन्त—इय थुणिय जिणिंदा उत्तरा देस इंदा, गिरिपुर नगरत्था जे मया
दिट्ठ तित्था ।
जिकिवि पुण अदिट्ठा जे तिलोए गरिट्ठा, वर ज्ञिणहर वंदे तेवि
भावेण वंदे ।।११

प्रति० अभय०

(१५७) दिल्ली मेवाति देश चैत्य परिपाटी गा० १३

आदि—जिण नमिय सुमंगल उत्तर मंडल, भाविहिं निम्मल ते थुणउं ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अरिहंत अराहउं पुण्य विसाहउं, लीजई लाहउ भवतणउं ॥१
पुव्वुत्तर देसिहि जिणवराण, जम्मण वय नाणह मक्ख ठाण ।
धुरि विणीय अपावा कुंड गाम, अट्ठावय सम्मेतिहिं नमामि ॥२

अन्त—**जिणधम्मसूरि** वयणिहिं वियाणी, **जिणहरिहिं कलस** जिम
अचल भाणि ।
जिण परम जोति हियडइ धरेहु, सम भाव जोगि सिवपद लहेहु ॥१२
इय थुणिय जिणिंदा० ....
.... ॥१३

प्रति—**अभय०**

---

(१५८) आदीश्वर वीनती गा० १३

आदि—जय जिणदर जग गुरु जय निहाण, जय भवभय भंजणु भुवण
भाण ।
जय तिहुअण तारण तरण जाण, आदीसर निम्मल जणिय नाण ॥१

अन्त—इय **धम्म** सूरि वंसिहि मुणि **हरिकलसिहि,** विनविउ जिणवर
इक्कु मणि ।
मुझ देज्यो ते दिणु भविभवि अणु दिणु, सेवुं तुम्ह पय कमल
जिणि ॥१३

प्रति० **अभय०**

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(१५९) जीरावला वीनती गा० ९

आदि—सोहग सुन्दर पास जिणेसर, जीराउलिवर नयर नरेसर,
सेस रचिय पय सेव ।
सफल मणोरह भेटिउ सामी, मन ऊलटि तसु सिखर नामी,
पामीय सुह सय हेव ॥१

अन्त—जीरावलि मंडण दुरिय विहंडण, पास जिणेसर भत्ति भरे ।
विनविउ **हरिकलसिहिं** नवनिधि विलसहिं, जे प्रणमइं तुह
चलण परे ॥९
प्रति० अभय०

---

(१३३) पद्मानंद सूरि

(१६०) श्री चउवीसवटा श्री पार्श्वनाथ नागपुर चैत्य परिपाटी स्तोत्रम् गा० ९

आदि—जय मंगल कारण दुरिय विदारण, भव भय वारण पास पहो ।
नायउरिहिं नयरिहिं भत्तिहिं पूरिहिं, **चउवीसवट्टय** जिण थुण
हो ॥१

अन्त—इय बहु विह भत्तिहिं विहि सम्मतिहिं, आराधउ जिणवर सयल ।
श्री **पदमाणंद सुरि** देसण मणिधरि, सावय कुलु कीजइ
सफल ॥९
प्रति० अभय०

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(१६१) श्री चउवीसवटा पार्श्वनाथ स्तुति गा० ४

आदि—सयल सुहकारणो भविय जण तारणो,
नाम गहणेण दुह दुरिय निळारणो।
नयरि **नायउरि** जसु अधिक महिमा गुणो,
जयउ श्री **पासु चउवीस** वट्टय जिणो ॥ १

अन्त—सुद्ध सम्मत धारति जे देवया, धरण पउमायवइरुट्ट अंबाइया।
धम्म कम्मेसु ते करउ सान्निध्यं, सयल संघस्स पूरंतु सुह संपय ॥४

प्रति० अभय०

---

(१६२) श्री वर्द्धनपुर चैत्य परिपाटी स्तवनम् गा० ९

आदि—गरुअंइ पुरि **वधणउरि**, सिखर बद्ध भवियण महिय।
सोहइ बहु प्रासाद, दंड कलस धयवड़ सहिय ॥१

अन्त—आराधउ अरिहंत, **पदमाणंद सुरि** इम भणए।
ते रिधि वृद्धि जयवंत, जे प्रणमइ जिण अहसम ए ॥९

प्रति० अभय०

---

(१३४) अज्ञात

(१६३) द्वादश भाषा निबद्ध तीर्थमाला स्तवनम् गा० ३६

आदि—पणय सुरेसुर नमवि जिणेसर, तिहुयण जण मण कमल दिणेसर।
उड्ढलोय अहलोयह मंडण, तिरिय लोय भव भय दुह खंडण ॥१

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अन्त—सिव सिरि मणि माला वन्निया तित्थमाला,
वव गय भव आला किति कित्ती विसाला।
सिव सुह फल रुक्खं देइ तत्तं परुक्खं,
निहणउ भव दुक्खं बंछिय होउ सुक्खं ॥३६

प्रति० अभय०

---

(१३५) अज्ञात

(१६४) कोशा प्रतिबोध गा० १५

आदि—कमल वयण कोशा भणइ, कहु किन दीजइ दोस।
विणु भटतारह दीहड़ा, ईमइ कीजइ सोस ॥१
सालूणा वालंभ सादु देइ न मयणु हणइसइ बाणिसय,
राणा थूलिभद्र तूझ विणु, तूं विणु रयणि न जाए।
चक्रवाकी जिम चक्रवाक विणु दिवस दोहिलड़ा जाए।
नुं जगु ऊवसु प्रीअ तूझ विणु ॥ आंचली ॥

अन्त—कोसा पुण विमासीउं, कीधइ कंत विचार।
नाह पसाइं पामीउं, समकित सुकृत भंडार॥ १४ सालूणा ॥

रिषि बोलइ कोशा समी, नारि नहीं गुणवंति।
मनु जाणी मण वल्लही, मिलीय सरीसी कंति ॥ १५ सालूणा ॥

प्रति० अभय०

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(१३६) परमानंद (?)

(१६५) शत्रुंजय चैत्य परिपाटी गा० ४१

आदि—सरसति सामिणि नमिय पाय, सिरि सेत्रिय केरी।
चैतु प्रवाडिहि (क) रि विहेव, मनि रंगि नवेरी ॥१

पालीयताणइ ए पास वीर, ललतासरि वांदू।
नेमिहिं कडणिहिं नमीय पाय, भव दुखन कंदं ॥२॥

अन्त—सेत्रुज गिरिवर सियं धणीय नरेसूया, ऊगिउ अभिनव चंद।
सूरति **परमानंद** विय नरेसूया, टालइ सवे वि छिद ॥४०

रिद्धि वृद्धि कल्याण करी नरेसूया, बोले **चैत्य प्रवाडि** एह।
तीरथ यात्रा फल दिवए नरेसूया, निरमल करय सुदेह ॥४१

प्रति० अभय०

---

(१३७) अज्ञात

(१६६) शत्रुंजय चैत्य परिपाटी गा० ३६

आदि—वागु वाणि सुपसाउ करे, सामिणि पूरि रहाडे।
श्री शत्रुंजय जिण भुवणि, भाविहिं चेत्र प्रवाडे ॥१

पालीताणइ तलहठीय, नयरह माहि विहारो।
नरवइ कुमरिहिं कारविउ, पासु जुहारिसु सारो ॥२

अन्त—छूटउ सर्वहिं आगदह, आविय भलइं संसारे।
सिद्धि क्षेत्र जुहारिय ए, नवनिद्धि पडीय भंडारे ॥३५

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पढिसिइं गुणिसिइं निसुणिसिइं, चेत्र प्रवाडिजि एय ।

तीहं बइठाइं जाम फलो, होसिइ निरमल देह ।।३६

प्रति० अभय०

---

(१३८) माणिक्य सूरि

(१६७) राजीमती उपालंभ स्तुति गा० १८

आदि—पसूवाड़ दीठउ प्रभो जीण वेलां, तजी राज राजीमती तीणं हेलां ।
हुसी जीव संघारू रे जीण जाति, पछइ पाछिला काज रे तीणं भाति ।।१

अन्त—मनि वचनि काया करी सील पाली, रमइ रायमइ मुगति सिउं हाथि ताली ।
कहइ सुगुरु **माणिक्कसूरि** महुर वाणी, जयउ संघ समुदाय राजलि राणी ।।१८

प्रति० अभय०,

---

(१३९) डुंगरु

(१६८) ओलंभड़ा बारहमासा गा० २८

आदि—तोरणि वालंभु आवीउ, जादव कुल केरउ चंदु ।
पसूय देखि रहु वालीउ, विहि विसि हूउ विच्छंदु ।।१

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नयणां नेहु भरे गयउ सुनेमिकुमारु ।
रेवईया गिरिवरि सरि चडीउ लीधउ संजम भारु ।।२

अन्त—राजुलि जीसिउं रायमइ, पहुतउ सिद्धि सिलाहं ।
डुंगरु स्वामि गायतां, सफलां फलीइं ताहं ।। २७ नयणां ।
नयणा नेहु भरे गयउ, सुनेमिकुमारु ।
रेवईया गिरि सिरि चडीयउ, लीधउ संजम भारु ।। २८ नयणां ।

प्रति० अभय०

डुंगर—देखो जै. गु. क. भा. ३ पृ. ४६२

---

(१४०) धनप्रभ

(१६९) श्री नेमिनाथ झीलणा गा० ९

आदि—राजलदे वर देव देवर, रूपिणि गाइसो झीलणूं ए ।
ऊनटीउं मन हेव यादव जिण गुणि, लागु छइ रह कडउ ए ।।१
वउलसिरी वरमाल पहिरणि, करणीय फूलडें गूंथीउं ए
सिव दिवि सुत सुकुमाल सुललित, सेवग्रड़े सइरु सिणगारीउं ए ।।२

अन्त—मृगमद कुकुंम नीरि वावन, चदनि सींगी संपूरी ए ।
नायक नेमि शरीरि वलि वलि, बल बलि करइं ते छांटणु ए ।।८
इसी अपूरव रीति गुण, रयणायर रामतड़ी रमइ ए ।
पूरइ मननी प्रीति, धनप्रभ गाइतां सवि सुख पामीइं ए ।।९

प्रति० अभय०

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(१४१) रत्नाकर मुनि

(१७०) श्री नेमिनाथ वीनति गा० १०

आदि—गिरिनार गिरिप्रवर मौलि, बारवई पुरि मंडणउ ओ।
धन्ना ते नर नारि, नमइ नेमि जे निम्मलउ ओ ।।१
कज्जल कंति सिरीर, सोहग सुंदर निमि जिण।
करणासायर धीर, केवलि लच्छीअ केलियण ।।२

अन्त—सावीय सहस्स छत्तीस, लख ठिनि तह नेमि जिण।
वास सहस्स सव्वाउ, सिव करि सामिय सिव रमण ।।६
इसु उ ज नेमि जिणंद, मुणि **रयणायर** कित्ति घरो।
चउविह संघउ बेउ वर मंगल सो मुत्ति वरो ।।१०

प्रति० अभय०

रत्नकर दे० जैन० गु० क० भा० १ पृष्ठ ४१

---

(१४२) अज्ञात

(१७१) श्री गिरनार भास गा० १७

आदि—सही सोरठ मंडलि जाईयइ, राजलि वर रंगिइं गाईयइ।
जय जूनइगढ़ि जोगादि देव, वीर पास जिणेसर करउं सेव ।।१
पोलि वुलीय सोवन रेह तीर, सीयल जल निम्मल अय गंभीर।
तरुयर तलि दीसइ विसम घाट, रवि किरण न लागइ तीण वाट ।।२

अन्त—दीसइ दुह दिसि तुंग शृंग, सहस्सं बलस्स वण पमुह चंग।
त्रिहु भूयणे उपमा नहीय जास, गगनाचल छांडहि भवह पास ।।१६

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गजपद जलि नेमिइ न्हवीय अंग, प्रभ पूजीय पूरिसु मनह रंग ।
भावि भगतिहिं भणेसिइं एउ भास, सिरि नेमि पूरेसिइ तीह
आस ॥१७

प्रति० अभय०

(१४३) अज्ञात

(१७२) गिरनार वीनति गा० ११

आदि—हरषु माइ नही हीयडइ किमइ, मझु मनउं गिरनारि घणूउं
रमइ ।
लइह लोचन नेमि नमस्करउं, जिम न चउगइ मांहि वलि फिरउं ॥१

अन्त—विषइ वइरी नउ मदगिउ गली, जिस्यइ आवइ पाप न मू वली ।
मयण मल्ल तणउ मझु भउ किसउ, जउ जिनेश्वरइ मनि हुउं
वस्यउ ॥१०

देवी सिवानंदन नेमिनाथ, राजीमति वल्लभ विश्वनाथ ।
मागउं नही ग्राम न सिद्धि वासु, मू देव (देव) देजे निज पाय
वास ॥११

प्रति० अभय०

(१४४) अज्ञात

(१७३) श्री नेमिनाथ वीनति गा० ५

आदि—भली भावना भेटिवा नेमि पाया, हीउं ऊलटइ मानवी एन माया ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जमं जागती जीव जोइ वानी, वसइ वासना तास दसइ न वानी ॥१

अन्त—मनि मानवउ एह संसार कूड़उ, सदासेविवउ राजल कंत रूडउ।
इसी भासनी भास ए तास पूजइ, जको भवा सुद्धिइं जगनाथ पूजइ ॥५

प्रति० अभय०

---

(१४५) अज्ञात

(१७४) बारह व्रत चउपई गा० १९

आदि—वंदिवि वीरु भविय निसुणेहु, आगमि कहिउ जिणेसर एहु।
पभणउ जिणवर धम्म महंतु, बारह व्रतह मूलि समकितु ॥१
अखर एक न पामं पारु, निसणहु धम्मिय धम्मविचारू।
सुकृत प्रभाविहिं सुगति होइ, सासय, सिवसुह पामइ सोइ ॥२

अन्त—सती एक सलहीजइ नारि, दिन्नु दानु को मास चियारि।
कोसंबी नयरी सुविसाल, जगिं जयवंती चंदण बाल ॥१८
बार व्रत श्रावक संभलउ, भाव भगति मनु अविचल धरउ।
सचउ वयण सुणिउ सउ कोइ, जीवदया विणु धरमु न होइ ॥१९

प्रति० अभय०

---

(१४६) अज्ञात

(१७५) सुगुरु समाचारी गा० ३२

आदि—दल हल हुंठि माणस जम्म, कीजय निरमल जिणवर धम्म।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गुरु प्रणमीय जय सीयलं सार, दुत्तरु जीव तरय संसार ॥१

गरथ तणउ करइं परिहारु, सो गुरु जाणे तिहुयणि सारु।
बायालीस दोस विसद्ध आंहारु, सूधउ विहरइ करइ विचारु ॥२

अन्त—पुव्व भवंतरि सचीया जोइ, पाप सुद्धि सामायक होय।
धम्म रई ते अविचल मत्ति, सामाइक्क सीधउ दमदंत ॥३१

पास जिणेसर तणइ पसाइं, विघ्न सवे ते दूरिइ जाइं।
पढत्त गुणंत पूजइ आस, लहइं सुखो ते सिद्धि निवासु ॥३२

प्रति० अभय०

---

(१४७) समरा

(१७६) नेमि चरित रास गा० २८

आदि—तोरणि जादव आइलइ, पसूआ दीधा दोसू ए।
तीणं कारणि प्रभ तजीय रायमइ, नेम चडउ गिरनार रे ॥१

नज सिणगार करि अभिनवा, नेमिकुमर चाल्यउ परिणिवा।
छपन कोड़ि जादव परिवार, हइ गइ सखि न लाभइ पार ॥२

अन्त—असो अमावस केवल नाण, नेमि तणू तु निखार।
राजमती सु सुंसइ गउ, बावीसय जणेसर भउ।
मगति राणी राजल तणउ योग, पढत गणंता नासइ रोग।
नेमिचरित सू सा नारी सुणइ, पाप (प)णासइ **समरुउ** भणइ ॥२८

प्रति० अभय०

टि० समरो दे० जै० गु० क० भा० १, पृ० १४५२

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(१४८) राजलच्छी (तपा शिवचूला महतरा शिष्या)

(१७७) शिवचूला गणिनी विज्ञप्ति गा० २०

सं० १४०० लगभग

आदि—शासन देव ते मन धरिए चउवीस जिन पय अणुसरी ए।
गोयम स्वामि पसायलु ए अमे गाइसि श्री गुरुणी **विवाहलु ए** ॥१॥

अन्त—द्रुपदि तारा मृगावती ए, सीता य मन्दोदरी सरसती ए।
सोलसती सानिध करइ ए, भणववाथी श्री संघ दुरिया हरइ ए ॥२०॥

इति श्री चितकीर्ति सूरि महात्तरा शिवचूला गणि प्रवर्त्तिनी **राजलच्छी** गणि विज्ञप्तिका श्राविका हीरादे योग्यं।

(प्र० ऐ० जैन० का० सं० पृ० ३३९।

(१४९) अज्ञात (ख० कीर्तिरत्नसूरि शि०)

(१७८) कीर्तिरत्नसूरि फागु गा० ३६

सं० १५०० लग०

आदि—प्रारंभ के २७ पद्य प्राप्त नहीं।

अन्त—एरिस सुह गुरु तणउ नाम, नितु मनिहि धरीजइ।
तिमि तिम नव निहि सयल सिद्धि, बहु वृद्धि लहीजइ ॥
ए फागु उछरंगि रमइ, जे मास वसंते।
तिहि मणि नाण पहाण किति, महियल पसरंते ॥३६॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

इति श्री कीर्त्तिरत्नसूरि वराणां फागु समाप्त: ॥छ॥ शुभंभवतु श्री संघस्य

॥छ॥ लिखितं जयध्वज गणिना ॥

(प्र० ऐ० जै० का० सं० पृ० ४०१)

---

(१५०) कवियण

(१७९) मातृका फाग गा० ३१

आदि—पहे जिण चलणा सिर नमिय, पामिय सुहि-गुरु मागु ।
माईय बावन्न आक्षर, पाखरीय करो फागु ॥२

भलेय वलीय सुणि धामिय, स्वामिय कहु विचारु ।
मीडउंय हीउडलय, धरिसुउं, तरिसिउं सयल संसारु ॥२

आगलि दो दो लोहड़ीय, जीभड़ी वोलिय आलु ।
उंकारस्य मागमि आगमि, कहीयस्य साक ॥३

नव्हण विलेपन पूजि न तू जिन जिणवर देव ।
मन मन तजि नवकारज, सारज भवि माहि एह ॥४

सिर सव्वसमइं विषइं विषय सुख पक मुख मेरू समाण ।
धम्मं न बूझइं पामर, का मरमे न अजाण ।५

अन्त—रत्न अमूलिक सीलह लीलह तूं म विणासि ।
लहसि मुगति तूउं तउं पण राखिसि पासि ।२७

व नवलीखूउं बोलीय, जोईय जिण पय सेव ।
ससिकर जोड़ीय वीनवउं, सेव करउं मुझ देव ॥२८

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हव कर जोड़ीय वीनवउं, दीन वयण संभारि ।
क्षमा करेज्यो भवियण, कवियण ए आचारु ।।३०

माईय अरथ जे बूझइ, सूझइ ईण संसारि ।
पाठ दिश्या सवि दहिसिइं ए, लहसिइं सुख नर नारि ।।३१

प्रति० अभय०

इति मातृका फाग समाप्त

---

(१५१) जयमूर्ति गणि

(१८०) मातृका गा० ६४

आदि—आदि प्रणव समरू सविचार, बीजी माया त्रिभुवनि सार ।
श्रीमंत भणी जपु निशि दीस, अरिहंत पय नितु नामु सीस ।।१

गणहर गरुउ गोयम सामि, अखय निधि हुइ तेहनइं नामि ।
नवनिधान तहं चऊदय रयण, जे नितु समरइ गौतम वय थण ।।२

अन्त—क्षिरता दीसइं सुरासुर इंद्र, हरिहर ब्रह्मा रवि नइ चंद्र ।
उत्पति विगम करइं सवि जंतु, अक्षर एकु अछइ अरिहंतु ।।६३

गौतम माइय अविगत हुई, अनुभवि जयमूरति गणि कही ।
लोकालोकि एहनु व्यापु, यति जाणइ जउ जोइ आपु ।।६४

प्रति० अभय०

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(१५२) अज्ञात

(१८१) दीपक माई गा० ६४

आदि—जिण चउवीसइ चलण नमेवी, **दीपक माई** कवि व भणेसो ।
दीपक माई खेलइ रास, नागलपुरि प्रभ प्रणमुंइ **पास** ।
पास जिणेसर तणइं पसाइं, बावन (५२) अक्षर बहुयांत्थांइं ।
माई दीठु त्रिभुवन सार, अक्षरि-अक्षरि नवउ विचारि ।।२

अन्त—मंगलवीर जिणेसरु नामि, मंगल गोयम सोहम सामि ।
मंगल जंबू सामि उचरू, मंगल सयल संघ विस्तरू ।।६३
मंगल भणतां माहिसिरि, माई पढउ ते पादर करी ।
पढ़इ गणइं जे सुणइ वचार, भव समुद्र तु पामइ पारु ।।६४

प्रति० अभय०

---

(१५३) अज्ञात

(१८२) आत्म बोध मातृका गा० ६४

आदि—समरवि सवि अरिहंत मणि, सिव मंगल कर धीर ।
माई **बावन** अक्षरहं, बोलिसुं गुण गंभीर ।१।
भले पहिल्ली अक्षरे, धुरि कीजइ सुविचार ।
तिम धुरि धम्मह जीव दया, भमइ जिण संसारि ।२।

अन्त—महा श्री शिव लच्छी तणी, सासत सुखह निधानु
इय मंगलिक तीह संपजउ, जीहे जिण धर्मि बहु मानु ।६४।

आत्म संबोध मातृका

(पत्र १ सतरहवीं शती, अभय जैन ग्रंथालय)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(१५४) अज्ञात

(१८३) शृंगार माई गा० ४९

आदि— प्रीत तणी दुइ लीहड़ी, सुंदरि सहजइ जाणि।
चिति चोखउ अविचल हीयउ, वालहा ऊपरि आणि।१।

अन्त—रे पहिला रस ताहरा, केता कहुं विलास।
मन गमती गोरी मिलइ, तउ सवि पूरइ आस।४८।

भले तणे अक्षर करी, **दूहा बोल्या** चंग।
सिणगारह कूंपली, ए नवयोवन रंग।४९।

इति **शृंगार माई** समाप्ता

(पत्र १ संतरहवीं शती लि० अभय जैन ग्रंथालय)

---

(१५५) अज्ञात

(१८४) वैराग्य चउपइ गा० १७

आदि— चउदह पूख माहि जे सार, पहिलुं मन समरउ नवकार
पभणिसु धम्मधिम्म विचार, जेणिहि जीव तरह संसार ॥१

अन्त—तप तपइं भावन भावति, सुद्ध चित्ति ज दान दीयंति।
क्रोध मान माया निरजणी, इसिइं करमि देव लोकि संचरइ ॥१७

प्रति० अभय०

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(१५६) अज्ञात

(१८५) सुभाषित दोहि १४

आदि—जिणवर देवु सुसाहु गुरु, जस हीयड़इ जिण धम्म ।
सव्व कम्मु जयणा करइ, तस हुइ सफलउ जम्म ।।१

अन्त—जीवदया साचउ बयण, पर धन जे न हिरांति ।
सीयल ज पालइ एक मनि, ते सहि सुख लहंति ।।१५

प्रति० अभय०

---

(१५७) अज्ञात

(१८६) योगी वाणी गा० ५

आदि—सीयल कच्छोट्टीय मोरीय रे, जोगी संजमि पाउ पाए ।
अठ कर्म्म ध्यानि दहु रे, अवधू भस्म अधूलियत अंगे ।१

अन्त—द्रढ सम्यकित मनि धरू रे, भद्रीया ध्यायं देव आदिनाथो ।
जिणहु भगत भाव कर बोलइ बूझउ नाथ पंथो ।५

प्रति० अभय०

---

(१५८) अज्ञात

(१८७) सोधति नगर शांतिनाथ स्तवन (अपूर्ण)

आदि—सोधति नयरिहिं महिमासागर, ओपि मूरति श्री संति जिणेसर

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

संति करणु संसारे ।
कणय कलस धयवड़िहिं मणोहर, तुंग सिहर प्रासादिहिं सुंदर,
जिणवर जुगति जुहारे ।।१

मूल मंडपि छइं बहु जिण पडिमा, पूजइ भवियण गरूई महिमा,
गरिमा **संति** जिणिंद ।

संघु करइ नितु नवा महोच्छव, जिन गुण गाय.........

अन्त— × × त्रुटित

प्रति० अभय०

---

(१५६) अज्ञात

(१८८) जीराउलि वीनती गा० ११

आदि—करू सेवना देवना पाय लागी, इलइ वार लागी नमूं सीस नामी
कहूं सतिहु जन्म जीतु अम्हारउ, जगन्नाथ जीराउलउ जई
जुहारउ ।।१

अन्त—इसि छंदि आणंदि सुं दीस रातिं, पढइं एक भावि भजंग प्रयाति
महा दुख संसार ना पास छूटइं, इसुं सत्य जाणी कहिउ जोति
बूटइ ।।११

प्रति० अभय०

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(१६०) अज्ञात (सुंदर सूरि शि०)

(१८९) विमल मंत्री रास गा० ४४ (?)

आदि—अप्राप्त

अन्त—भास—

थापिउ विमल दह अडसि वरिसे, बावीस प्रासाद चडाउलि देसे ।
अनइ तिण कीध संघ सपरिवारि, सात जात्र सेत्रुंजि गिरनारि ।।४३
जां ध्रू निश्चल तांह एह नंदउ, गुरु श्री **सुंदर सूरि** वांदउ ।
एह रास जे भणइ भणावइ•••द्रि सवि सुख आवइ ।।४४
इति विमल (मंत्री) रास संपूर्ण
संवत् १५१३ वर्षे श्रावण ३ दिने पूज्याराध्य वाचनाचार्य पं० जयवीर गणि शिष्य सुमतिवीर गणिना लिखितः सुश्रावक श्रे० महिराज भणनार्थं ।।छ।। शुभं भवतु ।।

पत्रांक ६० वां, अभय०

---

(१६१) शांतिसूरि

(१९०) श्री अर्बुदाचल हीयाली गा० ६

आदि—**विमलदंड** नायक नी वसही, सोजि अष्टापदि देउ ।
न्हवणइ नीरि निरमल थाइजि, जइ कोइ जाणइ भेउ ।।१

अन्त—नहीयलि घण गाजतु संभलि, कायर कंपइ देहइ ।
बारहमास सदा फलदायक, सुरहउ अविचल गेह ।। सही ए० ।५।।
सांतिसूरि भणइ अम्ह **हीआली,** जे नर कहइं एह ।
झटकइं झलहती ते पामइं, जाण मांहि जगि रेह ।। सही ए० ।६।।

प्रति० अभय०

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सोलहवीं शताब्दी

(१६२) मतिशेखर (वा)

(१९१) बावनी गा० ५३

सं० १५१४ लग०

आदि—पहिलउं परम ब्रह्म अणुसरी, तेहनि एक अविचल चिति धरी।
कहइ **मतिशेखर** सुणो सुजाण, माई बावन, वर्ण व खाणि ॥१

भलइं भलिय परि लागुं पाय, गुरु गणवइ सरसति पियु माइ।
नमतां नर भवि आवइ खोड़ि, अग भले जिम दोवड़ मोड़ि ॥२

अन्त—माई अखर नी बावनी, इणि परि कही विश्व पावनी।
वाचक **मतिशेखर** इम कहइ, भणइं सु नर अक्षय पद लहइ ॥५३

इति श्री माई अक्षर बावनी समाप्ता।

(अभय जैन ग्रन्थालयस्थ गुटके में)

त्रि० दे० जै० गु०क० भा० १ पृ० ४८ (अन्य रचना सं० १५१४
की प्राप्त भा० ३ पृ० ४६७)

---

(१६३) अज्ञात [केहरु ?]

(१९२) श्री जिनभद्र सूरि पट्टे श्री जिनचन्द्र सूरि गीतम् गा० २
राग मल्हार

कुंजर मयण नमनि मच्छरु करि, हरि हरु ब्रह्म नयहु जाणी।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मूरिख बिरहुणि बहु सोता पणु पंच बागन नमनि आणी ।।
रति अनइ प्रीति दिवसि विधि वतणु, कवण कुमति तुव बिधि रूठउ।
भुंजइ सुंडि बंडु दंतूसलि मुनि केहुरू जब दिठि दीठउ ।।१

पंच विसइ जिनि मुनिवर जीत्या, अष्ट कर्म जिनि खैं करिया।
चारितु रयणि अमलु जो पालइ, पंच महाव्रत जिनि धरिया ।।
वादी अंधकार सहस करु विद्या नाम बिरुदु छाजैं।
ससि गच्छ सिरि **जिनभद्र सूरि** पाटिहिं, श्री **जिनचंद्र सूरि** राजैं ।।२

वि० जिनचंद्र सूरि आचार्य पद सं० १५१४ स्वर्ग १५३०

---

(१६४) अज्ञात

(१९३) रयणावली गा० ३३

(सं० १५२० वि०)

आदि—पणमवि वीर चलण बहु भत्ति, हंस गमणि समरउ सरसत्ति।
सुणउ भविक जण चिंत अवधारि, इणि संसारि रयण छइ च्यारि ।।
जीवदया जिण सासण धम्म, सुविहित गुरु सावय कुलि जम्म।
वड्इ भागिए लाभइ ए च्यारि, नहीय मूढ नरि हेला हारि ।।२

अन्त—**च्यारि रतनावलि** गुणधार, पाटसूत्र मुक्ताफल हार
सरल कंठि निय हियड्इ धरउ, मुगति रमणि सइंवरि तुम्हि वरउ ।।३३

इति श्री रयणावली समाप्ता
सं. १५२० वर्षे ज्येष्ठ वदि ४ दिने श्री सीरोही नगरे महोपाध्याय शिरोमणि श्री श्री सुधानंदन गणि शिष्येण ति० श्र० रिषीयोग्यं
[पत्र १ अभय जैन ग्रंथालय]

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(१६५) कल्याणचंद्र

(१९४) कीर्तिरत्न सूरि वीवाहलउ गा० ५४

(कीर्तिरत्न सूरि शि०) सं० १५२५ लग०

आदि—भक्ति भर भरियउ हरिस सिरि वरियउ, पणमिय संति करु
संतिभाह ।
सारदा सामिणि हंसला गामिणी, झाणिहि निय हिय करि संनाह ॥१
नाण लोयण तणउ अम्ह दातार गुरु, अनय गुणवन्त सिरिमउड़
मणि ।
तेण सिरि **कित्तिरयण** सूरीसरे, हिव कहिसु हउं चरिय धरि
भत्ति मणि ॥२

अन्त—एह विवाहलउ भणइ भावि, तसु मणो वंछित देइ इंदो ।
भतु सिरि **कित्तिरयण** सूरि पाय. सीसतसु कहइ **कल्लाण चंदो**
॥५४

स्थान—जैसलमेर भंडार ।

प्रतिलिपि—अभय जैन ग्रंथालय ।

---

(१९५) श्री कीत्तिरत्नसूरि चउपइ गा० १८

आदि—सरसति सरस वयण दे देवि, जिम गुरु गुण बोलिउं सखेवि ।
पीजइ अमिय रसायण बिंदु, तहवि सरीरिइ हुइ गुण वृंद ॥१

अन्त—श्री **कीर्तिरतन** सूरि चउपइ, प्रहऊठी जे निश्चल थई
भणइ गुणइ तिहि काज सरंति, 'कल्याणचंद्र' गणि भगति
भणंति ॥१८५

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

।। इति श्री कीर्तिरत्न सूरि चउपई ।।

ले० सं० १६३७ वर्षे शाके १५८२ प्र० ज्येष्ठ मासे शुक्ल पक्षे षेष्टातिथौ गुरुवासरे । श्री महिमावती गछ्ये श्री वृहत्खरतर गच्छे श्री जिनचद्र सूरि विजयराज्ये । संखवाल गोत्रीय संघ भार धुरंधर साह केल्हा तत्पुत्र सा० धन्ना तत्पुत्र सा० बरसिघ तत्पुत्र सा० कुवरा तत्पुत्र सा० नव्वा तत्पुत्र सा० सुरताण तत्पुत्र सा० खेतसीह भ्रातृ साह चांपसी पुस्तिका करापिता पुत्र पुत्रादि चिरं नद्यात् शुभं भवतु ।

[श्री पूज्य जी के संग्रहस्थ गुटका]

प्र० सं० जै० का० सं० पृ० ५१

---

(१६६) विनयचूला गणिनि

(१९६) हेमरत्नसूरि फागु गा० २२

१६वीं शती का पूर्वार्ध

आदि — अहे जुहारिसु जगत्रय अधिपति, मुनिपति सुमति जिणंद,
अहे गायसु रंगि घनागम, **आगम** गच्छ मुणिद ।। १

श्री हेमरत्नसूरि भगतिहिं, विगतिहिं गुण वर्णवेसु,
गुरुपदपंकज सेविय, जीविय सफल करेसु ।। २

अन्त — **विनय** मेरु अनुकूला, **चूला** गरिम निवास,
······मम······लहर, मणहर देसण भास ।। २१

इणि परि सुहगुरु सेवउ, केवउ नहीं भव वासि,
दुर्लभ नरभव लाधउ, साधउ सिद्धि उल्हास ।। २२

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

इति श्री हेमरत्न सूरि गुरु फागु । विदुषी **विनय चूलागणिनिबंधेन** कृतम् ।।

प्रति० अभय० जै० ग्रंथालय

---

(१६७) अज्ञात

(१९७) अमररत्नसूरि फागु गा० १८

१६वीं शती पूर्वार्ध

आदि— अहे केवलकमलां राजए, छाजए जगतदिणिंद,
अहे नीलवर्ण्ण रलीआमणु, सुहामणु पास जिणिंद ।।१
पणमीय तासु प्रभाविहिं, भाविहिं गुण गाएसु,
श्री अमररत्न सूरि राजा, ताजा जई वांदेसु ।।२

अन्त— फागुण फाग सींदूरिहिं, पूरिहिं सर वरि सार,
भगतिहिं सुगुरु मल्हावउं, फावउं जिम सवि वार ।।१७
श्री अमररत्नसूरि मनोहर, सुहगुरु बालकूंआर,
स्तवतां भविअण अम्ह घरि, तम्ह घरि जय जयकार ।।१८

प्रकाशित—प्राचीन फागु संग्रह पृ० २ १-४२

---

(१६८) सेवक (तपा. लक्ष्मीसागरसूरि भक्त)

(१९८) शालिभद्र फागु गाथा ७२ (सं० १५२५ लग०)

आदि—गोयम गण निधि गण निलु, लबधि तणु भंडार ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नामि नव निधि पामीइ, वंछित फल दातार ॥१

सरसति सामिनि पाए नमु, मागू अविरल वाणि।
सालिभद्र गुण वर्णवु ते चडयो सुप्रमाण ।।२

अन्त — काशमीर काशी समु, मूलनायक श्रीपास;
चिंतामणि श्री सामलु, वछित पूरी आस ॥६६

सालिभद्र बीजउ सुणु, सुद्र सतन गदराज,
गूजर न्याति कुलतिलु, कीधां उत्तम काज ॥६७

संवत पंनर वीसमि, नयर सोजीत्रा मध्य।
देव भवन पद बिसणां, बिंब प्रतिष्ठा कीध ॥६८

संवत पंनर पंच वीसमि भीम साह प्रासादि ।
अर्बुदगिरि श्री आदिजिन, थाप्या श्री गदराज ॥६९

तप गच्छ केरू राजिउ लिछ्मीसागर राय।
तासु सीसि गुण वर्णव्या, प्रणमु सदगुर पाय ।७०

भणतां भलपण पामीइ, सुणतां संपति होइ।
सालिभद्र मुनिवर समु, अवर न बीजउ कोइ ॥७१

एक मनां जे सांभलि, सालिभद्र नु रास।
करजोड़ी सेवक भणि, करसि लील विलास ।।७२

इति श्री शालिभद्र नु फाग संपूर्णम्।

(ओरियण्टल इंस्टीच्यूट, बड़ौदा प्रति नं० १८५५२)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(१६९) लखमसीह

(१९९) शालिभद्र चौपई गा० १०४

सं० १५२७

आदि—प्रथम विनवउ प्रथम विनवउ देवि सरसत्ति।
कासमीरह मुख मडणीय, हंसगमणि कर कमलि वंगिय।
गायंती महुर सरे सुकवि, कंत नव नेह रजिय।
वीणा पुस्तक धारणीय, सातय सर पयडति।
सा सरसति निय रुलीय भरि, जिणह भुवणि गायति ॥१

पहिलउ वीनवउ सारद माय, लघु दीरघ जा आणइ ठाइ।
कूड़उ अक्खर राखे होइ, तिम करि जिम सलहइ सुहकोइ।
दियउ दानु धनु वेबउ ठांहि, पुवहिहि (भहु?) सहु रहइ कलि मांहि।
दान सील तप भावन वरउ, भव समुद्र जिम लीला तरउ ॥३

जा अछइ कसमीरह देसि, हंस गमणि सेयं वर वेसि।
उर पिहर विजयवंती माल, करि वीणा वर वाइ ताल ॥४

लखमसीह कवि बोलइ एहु, भवियउ निसुणहु कन्नि सुणेहु।
पढत गुणंता नासइ दूरिउ, **सालिभद्र** वखाणु चरिउ। ५

अन्त—महा विदेहि मणुया ? भव लहि (य), सिद्धि रमणि ते वीरेसइ सही।
सालिभद्द जे चरिउ पठंति, भाव भगति जे नरनि सुणंति।
हरषि जाई जिणहरि जे देंति, मुगति रमणि फल ते पावति ॥१०४

इति शालिभद्र चतुष्पादिका चरित्र समाप्त।

लेखन काल—संवत् १५२७ वर्षे भादवा वदि षष्ठी बुधवासरे लिखितमिदं

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सालिभद्र चरित्रं । शुभं भवतु ।। श्री ।।

प्रति—पत्र—४ (अन्त पृष्ठ खाली) पंक्ति-१४ । अक्षर-५२

प्रति० अभय०

---

१७० देपाल

(२००) काया बेड़ी सज्झाय गा० ५

आदि—काया बेड़ी काट सत्त वेध, ऊठि कोढ़ि बंध बाधी

न्हान्हो परहुण घणा नीगम्यां, अति दुलंभ तु लाधी ।।१

संसार समुद्र अपारो, तीहं मझारि जीव वणजारउ, दुन्नि क्रियाणा ववहरइ ।

अन्त—विवेकु खंभु ज्ञानि पंजारि, निरुखिला दीठुला सेत्रुज स्वामी

देपाल भणइ जिण मंदिरु पामी, वधामणी दिउ धामी ।।५

प्रति० अभय०

वि० दे० जै० गु० क० भाग १ पृ० ३७ भाग ३ पृ० ४४६

---

(१७१) जयानंद

(२०१) ढोला मारू की वार्ता-दोहाबद्ध : दूहा ४४२,

सं० १५३०, वैसाख वदी गुरुवार

आदि—अथ ढोला मारू री वार्ता दोहाबद्ध लिख्यते ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दूहा—पूगल पिंगलराव, नल राजा नरवरै नयरै ।
अदीठा अणदीठा, सगाई दैव संयोगे ।।१।। गाहा ।

दूहा—पिंगल ऊंचालो कियो, गयो नरवरचे देस ।
पिंगल देस दुकाल थयो, किणहीं वाव विशेस ।।२

नळराजा आदर दियो, जो राजवियां जोग ।
देसवास सहि रावळा, अै घोड़ा अै लोग ।।३

नरवर नळ राजा तणों, ढोलो कुमर अनूप ।
राणी राव पिंगलतणी, रींझी देखै रूप ।।४

पिंगलपुत्री पद्मिणी, मारवणी त सुनाम ।
जोसी जोय विचारियो, धन विधाता काम ।।५

सारीखी जोड़ी जुड़ी, आ नारी ओ नाह ।
राजा राणीं सूं कहै, कीजै ओ वीवाह ।।६

अन्त—पिंगळ राव पमार री, पुतरी गुणै अमोल ।
कछवाहो नररो सुतन, कुल दीपक छै ढोल ।।४३९

आणंद अति अच्छव हुवो, नरवर वाज्या ढोल ।
ससनेही सैणां तणां, कल में रहिया बोल ।।४४०

दूहा गाहा सोरठा, मन विकसणां बखांण ।
अणजाणी मूरख हंसै, रींझै चतुर सुजांण ।।४४१

पनरै सै तीसै (१५३०) बरस, कथा कही गुण जांण ।
वदी वैसाखे वार गुरु, जती **जयानंद** सुजाण ।।४४२

इति ढोला मारवणी दूहा सम्पूर्ण ।

।। वि० सागर गुटका नं० ६३ ।।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(१७२) धनसार (उपकेशगच्छ)

(२०२) **उपकेश गच्छ ऊएसा रास—गा० १२८**

स० १५३३ विजयदशमी, उपकेशपुर

आदि—पणमवि पास जिणिंद पाय, सरसति वयण दयउ माय ।
काई कविय करण हूं मंडउ, सुह सुहगुरु ना पाय न छंडउ ।।१

उएस वंसनइ गच्छ जु किद्ध, **उवएस नयरिहिं** सोजि प्रसिद्ध ।
पासनाह जिणवर संताणिहि, पढम नाम हुअ इणि अहिनाणिहिं ।।२

अन्त—संवत **पनर तेत्रीस** आसो माम सुदी ए रासकियउ सजगीस ।
दसमीय सुगुरु वारिहिं ऊजलीय ।
उवएस पुरवर रास, पढतां पजइ आस ।
आवइ अंगि उल्हास, अहनिसि ऊपजइ अति मन रली ए ।।२७

नयर **उएसह** ठाउ, **वीर जिणेसर** राउ ।
नितु-नितु करइ पसाउ, जिण गुण अमिय रसायण तोलियइ ए ।
भवियण करउ सभाउ, उवएस माह (त) णउ उपाउ ।
सुह संपति नउ दाउ, **पाठक धनसार** इम बोलियइ ए ।।१२८

श्री उपकेश गच्छ ऊएसा रास समाप्त इति ।

संवत १६२५ वर्ष आषाढासितष्टम्यां दिने राजळदेसरस्थै वा० देव सुंदरै लिलेखि । सच्चरित्र स्मरणार्थं ।

पत्र ६ [बीच के २ पत्र कुछ चिपकने से अक्षर अस्पष्ट]

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(१७३) कीरति (साधु पूनिम गच्छ विजयचन्द्र सूरि)

(२०३) आराम शोभा रास—कीरति कृत

सं० १५३५ आश्विन पूणिमा

आदि—सरसति सामिणि वीनवूं, मांगु निरमल बुद्धि ।
कवित करसि सोहामणुं, सांभलता सुख वृद्धि ।।१

आराम शोभा नारी भली, जाणइ सयल संसार ।
पुण्यइ ते गिरूइ हुइ, बोलिसु तास विचार ।।२

जंबुद्वीपह दश कुश, नयर पाडलीपुर नाम ।
वापी कूप तडाग गढ़, रूअड़ा सफल आराम ।।३

ते नयरी सुरपुर समी, विस्तरि जोयण बार ।
चउरासी चहुंटा जिहां, रूयड़ा पोलि पगार ।।४

अन्त— पुण्यइं लाभइं सुख सयोग, पुण्यइ काजइ देवगह भोग ।
पुण्यइ सवि अंतराय टलइ, मनवंछित फल पुण्य लहइ ।।

साध **पूनिम पक्ष** गच्छ अहिनाण, **श्री रामचन्द्र सूरि** सुगुरु सुजाण ।
नवरसे फरइ अमृत वखाणि, चतुर्विध श्री संत्रमनि आण ।।

तस पाटधर साहसधीर, पाप पखालइ जाणे नीर ।
पच महाव्रत पालणवीर, **श्री पुण्यचन्द्र सूरि** गरुआ गंभीर ।।

तास पट्ट उदया अभिनवा भाणु, जाणे महिमा मेरू समान ।
गिरुआ गुणह तणू निधान, **श्री विजयचन्द्र सूरि** युगप्रधान ।।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

संवत **पंनर यांत्रीसु** जाणि, **आसोई पूनमि** अहिनाणि ।
गुरुवारइ पूक्ष नक्षत्र होइ, पूरव पूण्य तणां फल जोई ।
कर जोड़ी **कीरति** प्रणमइ, **आराम सोभा रास** जे सुणइ ।
भणइ गुणइ जे नर नि नारि, नवनधि वलसइ तेह घरि बारि ।।

अति आराम सोभा रास समाप्त: ।

संवत् १५५६ वर्षे चैत्र बदि ८ भूमे लखित ।।
भुवनवल्लभ गणि विलोकनार्थ ।। चगइ वडो पोसाल
नु जाणियो सही १०८ ।

(डा० भोगीलाल सांडेसरा से विवरण प्राप्त)

---

(१७४) लब्धिसागर सूरि

(२०४) वीशो (२० स्तवन)

सं० १५५४ वि०

आदि—

अन्त—धवल मंगल गुण गाइ वाला, रास भास वर तोरण माला ।
वाजइ किति भेरि भंकारा, घरि घरि उछव जय २ कारा ।

इय देव पुरंदर सत्थिय सुंदर अजिज कीरिय परमेसरू ए
जो पणमइ भाविइं सरल सभाविइ तूंसइ तासनिजग गुरु ए ।

इति श्री अजितवीर्य स्तवनं २० श्री लब्धिसागर सूरिभि: कृतानि ।

लेखन—संवत् १५ आषाढादि ५४ वर्षे द्वितीय श्रावण सुदि १ सोमे लिखित
शुभं भवतु ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्रति—पत्र २ से १० । पंक्ति—१० । अक्षर—४१

प्रति०—अभय जैन ग्रन्थालय

वि० दे० जै. गु. क, भाग पृ. ३ ५२७ (सं० १५३८ चोवीशी की प्रति का लेखन)

---

(१७५) कोल्हि

(२०५) **कंकसेन राजा चौपाई** सं० १५४१

आदि—पहिलउ पणमउ शारद माइ, भूल्यो आखर आणउ ठाई ।
काशमीर मुख मंडण ढणी, करउ पसाउ देह बुद्धि घणी ॥१
गणवइ पूजउ थारा पाय, देहि बुद्ध स्वामी सूपसाइ ।
तुह पसाइ हुय पडउ करउ, मगरमच्छ चंरी उधरउ ॥२
तंबावती वसइ अति भली, कुल छत्तीस रहसी इति मिली ।
दिसइ दुरग धवलहल घणां, मढ़ देवल कि नाहीं मणां ॥

अन्त—जाण्या उराड़ा तणो विचार, वन मांहे नाठउ छोड़ि घर बार ।
पंचा कह्याउ जो नवि करइ, स कंकसेन ज्यूं भूलउ फिरइ ॥३२९
पन्द्रहसइ इकतालइ(१५४१)श्रावण मासि, बुद्धि पूछो कवियण पासि ॥
पुष्प नक्षत्र आछाइयाती खरउ, उधम एह आज ही करउ ॥३३०
कवियण **सानिधी** चउपइ, भोलोउइ भावि **कोल्हि** इम कही ।
सुदि पांचमी अ'र मंगलवार, हुवउ चरित सब विघ्न निवार ॥३३१

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सुणउ चरित नरवइ सद भाइ, भूलउ अराउ अंतेउर मांहि।
अस्तरी तणउ विलास जे करइ, सु कंकसेन भूलउ जम उभसइ ॥३३२

इति कंकसेन राजा की चउपइ समाप्त।

संवत् १७३५ वर्षे मगसर सुद ६, सने मासती दंमाजी अकोला लिखितम् गुरुजी स्मा पठनार्थम् नदेरइ मध्ये बांचे जिसु राम-राम बंचजो जी तथा चौमासो नंदेरइ मध्ये जे तीर्थी जोय हिडउं वरी छै। अनेक वंदणा बंचजो जी।

प्रति० विनयसागरजी संग्रह, कोटा गुटका

---

(१७६) पद्ममंदिर (ख० गुणरत्नसूरि शि०)

(२०६) गुणरत्न सूरि विवाहलउ गा० ४९

सं० १५४६

आदि—मंगल कमलविलास दिवायरं सायर संति पायारविंदं।
पणमिय अमिय गुण रयण रयणायर, राय रंकाण आणद चंदं ॥१

इक्क मह नाण लोयण तणउ दायगो, नायको अनइ संजम सिरिए।
सुवन कटोरड़ी सोहग उरडी, जगि करइ दूध साकर भरीए ॥२

अन्त—एह सिरि **गुणरयणसूरि** वीवाहलउ, **पद्ममंदिर** गणि तासु सीस।
पभणउ भवियण अनुदिन, जेम पामउ सुह सुह जगीस ॥४९

इति श्री गुणरत्न सूरीराणां वीवाहलउ ॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्रति—गुटका जिसमें आपके रचित अन्य स्तवन भी हैं जो
संवत् १५४६ लिखित हैं। स्थान—जैसलमेर भंडार।

प्रतिलिपि—अभय जैन ग्रन्थालय।

---

(२०७) श्री देवतिलेकोपाध्याप चौपई गा० १५

आदि—पास जिणेसर पय नमु', निरूपम कमला कंद।
सुगुरू थुणता पामियइ, अविहड़ सुख आणंद ॥१

अन्त—गुरु श्री **देवतिलक** उवझाय, प्रणम्यइ वाधइ सुह समवाय
अरि करि केसरि विसहर चोर, समरयउ असिव निवारइ घोर ॥१४

ए चउपई सदा जे गुणइ, उठि प्रभाति सुगुरू गुण थुणइ।
कहइ **पद्ममंदिर** मन शुद्धि, तसु थाए सुख संपति रिद्धि ॥१५

(प्र० ऐ० जै० का० संग्रह पृ० ५५)

---

(१७७) क्षेमराज (ख० सोमध्वज शि०)

(२०८) फलवर्धी पार्श्वनाथ रास। पद्य २५। रचयिता-क्षेमराज।

आदि—सुगुरु शिरोमणि मणिधरी, श्री **गोतम** गरुयउ गणधार।
रास रचिसु रलियामणउ, श्रवणि सुणतां हो हरष अपार ॥१

फलवधी पास जुहारीइ खेला, देस सवालख नउ सिणगार।
सार करउ त्रिभवन धर्णी, सुरनर जंपि हो जय २ कार ॥२

अन्त—मलिय महाजन मनि रली, पास नउ रास वसंति रमंति।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तिहि घरि नव निधि संपजइ, खेमराज मुनिवर पभणंति ॥२५
श्री फलवर्धी पार्श्वनाथ रास समाप्तमिति ।

प्रति—गुटकाकार नं० ६ पत्र २१६ से २१, पंक्ति १३ अक्षर १७
लेखनकाल—संवत् १६४६
प्रति बृहत् ज्ञान भंडार

वि. दे. जैन. गु. का. भाग. ३ पृ. ५०० (श्रावकाचार चौ० सं० १५०६)

---

(१७८) अज्ञात

(२०९) प्रभव जंबूस्वामि वेलि

सं० १५४६ पत्र ५

आदि—

करजोडी प्रभवु भणइ, जंबुकुमर अवधारि ।
विषयसौख्य भोगवि भलां, रगिइं पंच प्रकारि ॥
सरब भोग विरमणी रसिरातु, महियाजनम म हारि । जंबुत भूलीइ ।
कणय निवाणु कोडि हेलां न मूंकीइ,
नव यौवन अट्ठ नारि बंधन चूकीइ ।
माय बाप केरी आण भगतिइं सारीइ ।
आविउं सुख पगित ठेलि, किमइ न वारीइ ।
यौवन दुलभ संसारि, हईइ आलोचीइ ।
मोरुं वयण अवधारि, पछइ म सोचीइ । आंचली ॥१

अन्त—प्र० कणय निवाणूं कोडि त्यजी, नव परणित अट्ठनारि ।
प्रभवासिउं जंबूकुमर, जूतु संजम भारि ।
क्षिपीय करम नइं लीला पांमी, मुगति रमणि वरनारि ॥२६

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

इति प्रभव जंबूस्वामि वेलि ।। समाप्त ।।

संवत् १५४८ वर्षे आसोवदि—मे ।। व्यहरा राघवषठनार्थं ।।
।। श्री ।। छ ।। शुभं भवतु ।।

प्रति० रा० प्रा० वि० प्र०

---

(१७६) जयवल्लभ

(२१०) नेमि परमानंद वेलि पत्र ४

आदि—गिरि गिरनारि सोहामणो रे, पाखलि फिरता वन्न
जसु शिरिस्वामी यादववंशी, सोहइ सामल वन्न रे ।।१
हीयडला हेलिरे नेमजी नाम मेल्हि, परमाणदरस वेलि रे
हृदय कमलितुं भेलि रे, उपशम रंगज रेलि रे नेमि ।। आंचली ।।

अन्त—श्री जइवलुभ मुनीस्वर नवइ सुणसु नेमि जिणंद
दोइ कर जोडी सेवा तोरी, मांगू वलीवली एह रे ।।४८

इति श्री नेमि परमानंद वेलि समाप्ता ।।

प्रति० रा० प्रा० वि० प्र०

वि० दे० जै० गु० क० भा० ३ पृ० ५१७

---

(१८०) कनक नं० १३४६

(२११) वल्कल चीर ऋषि वेलि

क० कनक, पत्र ४

आदि—राग असाउरी। नंदिषेण ना गीतनु ढाल ।।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पोतन पुर वरते, नगर सिरोमणि जाणू ।
गढमढ धवलग्रह, पोलि प्रसाद वषाणूं ।
सोमचंद नरेसर, राज करइ सुविचार ।
राणी धारणि गुणवति तणु भरतार ।।१

अन्त—तत षिणि रिषि पामिउं केवल निर्मल, क्षपक श्रेणि शुभ ध्यानि ।
बिन्हइ सहोदर ते केवल धरहुं प्रणमुं बहुमानि ।
वक्कल चीरप्रसन चंद्ररिषि जिनशासनि जयवंत ।
कनक भणइ तेहना गुणगातां, महिमा सुजस अनंत ।।७५ ।। छ ।।

इति श्री वक्वलचीर कुमार रिषि राजवेलि संपूर्णा समाप्ता मंड-पगढमध्ये ग० अमरश्री गणिनी लेखिता श्रा० कीकी योग्य पठनार्थं शुभं भवतु लेखक पाठकयो: श्रीरस्तु ।।

प्रति० रा० प्रा० वि० प्र०

वि० कनक दे० जै० गु० भाग० १ पृ० १७०

भा० ३ पृ० ६२६

---

(१८१) सालिग

(२१२) बलभद्र वेलि गा० २८

आदि—द्वारिकां नयरी नीकल्या, बे बंधव ईक ठाय ।
त्रिषा ऊपनी कृष्ण नई, बंधव पाणी पाय ।।१

बंधव जाई लाव्युं नीर, ऊर्वीसम साहस धीर ।
पउढयउ छइ वृख तली छाया, कुंमलांणी कोमल काया ।।२

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अन्त—इम जीव दया प्रति पालउ, साचउ समकित रयण उजालउ ।
समकित विण काज न सीझइ, सालिग कहइ सुघउ कीजइ ॥२८

इति बलीभद्र वेलि समाप्ता लिखता ।

सं० १६६६ लि० गुटका अभय०

(१८२) अज्ञात

(२१३) हेमविमल सूरि विवाहलउ पद्य ७१

आदि—प्रथम पत्र अप्राप्त

अन्त—इम आणी अंगि ऊमा·············वीवाहलु ।
नरनारी जे नितु गावइ, तेह मंदिरि नवनिधि आवइ ॥७०

श्री सुमति साध····················सुगुरु रतन्न ।
श्री **हेमविमल सूरीस,** गुरु प्रतपु कोड़ि वरीस ॥७१

जस भेरी चिहुं दिसि··········
·········श्री गुरु **राज वीवाहलउ** संपूर्ण ॥

प्रति—पत्रांक ३ (गा० ५५ से ७१) पंक्ति—१४। अक्षर-४४ ।

लेखनकाल—१७वीं० लि०

प्रति० अभय०

विशेष—किनारे कटे हुए ३ पत्र हेम विमल सूरि संबंधी प्राप्त हुए हैं। पर तीनों तीन विभिन्न रचनाओं के ज्ञात होते है अेक दूसरे का संबंध व गाथा का अंक नहीं मिलता। मध्य पत्र में गाथा २९ से ५६ तक है। वह रचना भी बड़ी होनी चाहिए। प्रथम पत्र में गाथा का अंक ५+५+३, इस प्रकार त्रुटित अंक हैं उसका प्रारंभ इस प्रकार होता है—

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(२१४) हेमविमल सूरि फाग

आदि—राग आसाउरी—

सरसति सरस वचन दीइ, कबिजन केरी माइ।
खड रितु रासो गाइसिउ, श्री **हेमविमल** गछराइ ॥१

धुरि षड रति राजा वड़उ, सयल वणावलि कत।
मलयानिल **चचलि** चड़ी, आयु मास **वसंत** ॥२

वि० हेमविमल सूरि को आचार्य पद सं० १५४८ में मिला था।

---

(१८३) विनयरतन वा० वड़ गच्छ मुनि देवसूरि वा० महीरतन मुनिसार शि०

(२१५) सुभद्रा चउपई-पद्य १५३ सं० १५४६

आदि—कमलवदनि हंसगामिनी, सरसय पय धरि चित्त
संखेपइ **सुभद्रा** तणउ, कहिसु कवित्त सुचित्त ॥१

सीलइ सोभा पवर धण, सीलइं सोहग रूप।
अविचल सीलइं जीव सुख, शीलइ मानइ भूप ॥२

अन्त—वड़ गछि **देवसूरि** अनुक्रमइ, **मुनीश्वरसूरि** तणा पय नमइ।
मेरुप्रभ सूरिंद पसाउ **राजरत(न)सूरि** गणहर राउ ॥४९

श्री **मुनिदेवसूरि** उपदेसि, **महीरतन** वाचक रयणेस।
गणि प्रधान गिरुआ गणसार, शील अखंडित गुणि मुनिसार ५०

तास सीस रचिउं चरित्र, बुद्धि तीण गुरु पुण्य पवित्र।
विनयरतन वाचक कर जोड़ि,…………………॥५१

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

संघ पसाइं रचिउं एह, सोम्य दृष्टि मुझ करयो नेह ।
सवत **पनरगुणचासइ** चरी, भाद्रवड़इ मति उपनी खरी ।।५२

शास्त्र माहि मइ दीठी जिसी, चउपइ बंधए आणी तिसी ।
भणइ भणावइ निसुणइ जेह, **वरकाणाधिप** तूसइ देव ।।५३

इति शील विषये सुभद्रा चउपई समाप्त: ।

संवत् १६६३ वर्षे आसो वदि २ दिने गणि समयसागरेणालेखि । मुनि आनंद सागर मुनि सुमति सागर वाचनार्थं शुभं भवतु: ।

[पत्र ४ अभय जैन ग्रन्थालय, बीकानेर]

---

(१८४) हेमध्वज

(२१६) जैसलमेर चैत्य परिपाटी गा० १६

सं० १५५०

आदि—पहिलुं हुं समरिस वाग्वाणि, माता द्यउ मुखि विमल वाणि ।
जिम **चैत्र प्रवाड़ी** करुंअ रगि, **जेसलमेरु** देखी हरषि अंगि ।।१

अन्त— **सातमइ** ए जिणहरि वीर, सासण सामिय गाईयइ ए
बिंबा ए सउवावीस, भाव भली परिघ्याईयइ ए

सातइ ए जिणहर बिंब **च्यारि सहस्र** अठत्रीस पणि
धन-धन ए ते नर नारि, नित्त जुहारइ ए एह जिण ।।१५

संवत् **पनरह सय पंचासइ** भाव भगति नमंसिया
मगसिरइ मासइ मन उल्हासंइ **हेमध्वज** पसंसिया
गणधर गण मूरत्ति गरुइ, आदि जिणवर पादुका
मरुदेवि मायड़ी सयल संघह, करउ मंगल मालिका ।।१६

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

इति श्री जेसलमेरू चैत्य परवाड़ि ।।

[१७वीं शती के गुटके में अभय जैन ग्रंथालय, बीकानेर]

---

(१८५) अज्ञात

(२१७) परनिंदा चौपाई, पद्य १७५,

सं० १५५८

आदि—देवी सरस्वती पय पणमेवि, मनसिउं शिव नायक समरेवि ।
कहुं कथा **चउपई प्रबंध, परनिंदा** ऊपरि संबंध ।।१

पंडित धर्मी विनय विवेक, नीम निपुण आचार अनेक ।
तपसी दानी ए कहइ लोक, निंदा करइ तु गुण सवि फोक ।।२

पर निंदा ते पोढउं पाप, पावक पांहि बधारइ व्याप ।
पुण्य पदारथ थान दहइं रस भरी वाइ लूली वहइ ।।३

काया नगरी नव बारही, राजध्यानी एह नवली कही ।
मान मोह मच्छरह चिरास, परम हंस राजेसर तास ।।३

तास चेतना राणी एक, बीजी माया नहीं ते छेक ।
भूपति जेहवइ घर आवंति, कुमति सुमति तेहवी हवंति ।।५

अन्त—पर निंदक नइ नरक निवास, आप निंदक नइ शिव सुख वास ।
दुख मंदिर पर निंदा पाप, सुख मंदिर निंदा आपाद ।।१७३

कला कुमुदनी वछर वेद, सुदिया सोमासर तसु रिद ।
नाग **पंडव संख्याइ** तिथिवार, धुरि दिन आरम्भ पूर्ण विचार ।।१७४

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

निंदा ना अवगुण जेतला, मइं नवि कहिवाई तेतला ।
प्रबन्ध साम्भलयां तगु प्रमाण, निंदा मोकु तुम्हें सुजाण । १७५

इति परनिंदा चोपई सम्पूर्ण ।

सवत् १६१८ वर्षे आषाढ़ सुदि १० रवउ । श्री पिपल गच्छे भ० श्री शान्तिसूरि तालध्वजी शाखायाम् ।

प्रति० विनयसागर गुटका ८१

---

(१८६) भक्तिलाभ

(२१८) श्री जिनहंससूरि गुरु० गीत गा० १८

आदि—सरसति मति दिउ अम्ह अति घणी, सरस सुकोमल वाणि ।
श्रीमज्जिनहंससूरि गुरु गाइसिउं, मन लीणउ गुण जाणि ।।१

अन्त—बंदि छोड़ि मोटउ विरुद लाधउ, बादशाहे परखिया ।
श्री पासनाह जिणंद तुट्ठउ, संघ सकलइ हरखिया ।।१७

श्री **भक्तिलाभ** उवझाय बोलइ, भगति आणी अति घणी ।
श्री **जिणहंससूरि** चिरकाल जीवउ, गच्छ खरतर सिर धणी ।।१८

इति श्री गुरु गीतम्

(प्र० ऐ० जैं० का० सं० पृ० ५३)

वि० जिनहंससूरि समय सूरिपद सं० १५५५ स्वर्ग १५८२

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(१८७) भावसागर सूरि शि० (विधिपक्षीय)

(२१९) चैत्य परिपाटी गा० ४४

पत्र २ सं० १५६२

आदि—प्रणमसिउं पहिलुं पास जिणंद, **चैत्य प्रवाड़ि** करिस आणंदि ।
श्री **चीत्रोड़** तणी जिनयात्र, करीय करूं निय निरमल गात्र ॥१
पाटण थकी मझ इछा इसी, भाव भगति वि हुईड़ि बसि ॥
कतियापुर देहरा छि पंच, प्रणमाता नवि करीइ खंच ॥२

अन्त—वछित ए दानद समरथ **तीरथमाल** विवहु पुरे ।
एम करीए निरमल जुत्त, सवत **पनर बासट्ठि वरे** ॥४३
तेह हूइ पदिपदि सयल संपद, विपद सवि दूरि टलि ।
कल्याणमाला करि केली, वलिय मन वछित फलि ॥४४

इति चैत्य परिपाटी

वि० दे० जै० गु० क० भा० ३ पृ० ७७२

---

(१८८) विनय अज्ञात (उएसगच्छीय सिद्धिसूरि आज्ञानुवर्त्ती मेघरत्न ?)

(२२०) महावीर २७ भव स्तवन गा० ६१

स० १५६५ मेड़ता

आदि—सरसति सरस वचन दिउ माय, जिम मुझ हीयड़इ हरषित थाइ ।
पभणिसि गुणहु जिणिवर तणा, महावीर भव पूर्व्या घणा ॥१

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अन्त— **उएस** गच्छ मंडण **देवगुप्ति** सूरीसरो, तास परि जयवंता **सिधि सूरि** वरो।

संवत **पनर पइंसठइ** संवछरे, **मेड़तइ** नयर सथुण्यउ तित्थेसरो।
वीनवइ रंग मेघ रत सेवक वरो, भाव भगतइ नमी ताह वछीकरो
तास घरि लछीय होइ निश्चल थिरो, चउवए संघा दियइ आणंद वरो ॥६०

इम वीर जिणि वर संघ सुहकर, परम संपद दायगो।
सखेव विस्यी वीससग (२७) भव, तवन तिहु अण नायगो।
सोवन वन्न सुसघ लछण, संत हथ तणं बरो।
सुर असुर वदी पाय भवियण, होय जिणि मंगल करो ॥६१
इति महावीर स्तवन संपूर्ण।

प्रति—गुटका नं० ७ स्थान—वृहत् ज्ञान भंडार।

---

(१८९) कमलधर्म (पं० भुवनधर्म शि०)

(२२१) चतुर्विंशति जिन तीर्थमाला गा० ४७

सं० १५६५

आदि—अप्राप्त

अन्त— नयरि कालप्पिय आवीया ए मा, पूज्या जिणवर देव।
चंगि पथि **चंदेरीइ** ए मा, आण्या कुशलय खेम ।४४
सति पास दोइ पूज्यस्या ए मा. हीयड़ेइ हरष धरेवि ।।श्रु
भुवनधर्म पंडित वरू ए मा.,गुण मणि तणां भंडार ।।४५
कमलधर्म तसु सीस वरइ मा., करइ विदेस विहार।
संवत पनरह पांसठ ए मा, हस साल सुविचार ।।४६

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नियमति मानिइ वर्णव्या ए मा., तीरथ सगला सार ।
तीरथमाला जे भणइ ए मा., आणिय ऊलगि अंग ।
ते नरनारी कवि भणइ ए मा., पामइ नव-नव रंग ॥४७

इति श्री चतुर्विशति जिन तीर्थमाला संपूर्ण ॥श्रीरस्तु ॥

प्रति—पत्र २ से ६ पंक्ति-११ । अक्षर=२८।

प्रतिलिपि—अभय जैन ग्रंथालय

---

(१९०) धर्मसमुद्र (खरतर विवेकसिंह शिष्य)

(२२२) सुदर्शन चौपई

आदि—रिसह जिणेसर पच नमी, समरिय सारद देवि ।
सेठ सुदरसिण नु चरित्र, विरचिसु हुँ संखेवि ॥१
जिणवरि जे सवि व्रत कह्यां, तिहां सवि शील प्रधान ।
सील सहित नर नइ दिय, सिव रमणी नितु मान ॥२

अन्त—श्री **खरतर** गछ गणधार, **जिनचंद** सूरि सुहकार ।
वाचक **विवेकसिंह** सीह (? स) कहइ **धर्मसमुद्र** मुनीस ॥ज०
इणि ध्यानि टलइ सवि रोग, इण ध्यानइ नासइ सोग ।
इणि ध्यानइं जरइ दुख, इणि ध्यानइ गरुया सुक्ख ॥ज०
इम सेठि **सुदरसन चरिय,** घण पुण्य प्रभावइं भरिय ॥
जे नर नारी नीरागी गाइं, तिहि ऋद्धि वृद्धि नितु थाइं ॥जय

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सुदरसनु न (उ) नाम, मन वंछित पूरइ काम ।
अति सबल सील अभिराम, मनि ध्याई करउ प्रणाम ॥१०७

इति सुदर्शन चउपई ।

अभय जैन ग्रन्थालय

प्रति — पत्र-३ । पंक्ति १६ से १६ । अक्षर-५०

वि. दे. जै. गु. क भाग १ पृ ११६
भाग ३ पृ. ५४८ (रचनाकाल सं० १५६७ से १५८४)

---

(१६१) विद्यारत्न (लावण्यरत्न शि०)

(२२३) मंगल कलश रास-पद्य ३३९ ।

रचनाकाल सं० १५७३ (७) मि. व. ६

आदि—श्री जी राउलि जिन जपुं, जग जीवन देव ।
समरयां काज सवे सरै, करइं सुरासुर सेव ॥१

भारति आरति सहु हरै, चितवति मति अति (अंत) ।
जे दरिस देखइं डरी, दुरमति जाय दिगंत ॥२

चिंतत चिंतामणि सरिस, हरिस हीआ सु आंण ।
श्री **लावण्य** रत्न पय प्रणमतां, पाम्यो अविरल वाण ॥३

जीव अनते अनंत सुख, लाधा धर्म प्रमांण ।
मंगल कलस प्रति फलिउ, सुवसे तास वखांण ॥६

अन्त—तपगछ गगन विभासन भाण, श्री**सोमसुंदर** सुरि प्रगट समान ।
जे गुरु (रा) ज चिहुं दिसि चडइं, कुमति घूक अंध थई पड़इ ॥३१

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तास पाटे मुनि सुंदरसूरि, लीध्या नामें दुरित जाय दूरि ।
वादी वृंद विदारण सोह, श्री **रतणसेखर** सूरि नमूं निसदीह ॥३२

तसु पटे सूरि गिरि सुर तरु समो, श्री **लक्ष्मीसागर** सूरि नर नमो ।
तसअ पटे गुरु गिरमां निलो, श्री **सुमति साधु** सूरि तपगछ तिलो ॥३३

संप्रति सूरि सिरोमणि सरइ, श्री **हेमविमल** सूरि संघ मंगल करइ ।
वाद अखण्डित पंडित जाण, श्री **धनदेव** सुधारस बानि ॥३४

मोह महिपति मोडित मदा, **सुरहंस** पइ प्रणमो सदा ।
ते गुरु सीस ईम अव(त)र्या, मदन महाभट हेलां हर् (या) ॥३५

विद्या चउद वितंडा वाद, उन्मद वाद उतार्या नाद ।
दीन उगमते उजम परा, विद्यारत्न गुरु वांदो नरा ॥३६

तस पय कमल विमल चित धरी, **विद्यारत्न** कहे इणि परि ।
संवत पनरस्य तहोत्तरी रिष, मागसिर वदि नवमि मणि हरिष ।

सुर धरणीधरधरणी जास, जां द्रु न चलइ अंबर वास ।
तां प्रतिपो पृथ्वी तसि एह, मंगल माला गिरुउ गेह ॥३८

पुण्य ऊपरि ए कीयो प्रबंध, पाप तणा टालिउ समंध ।
भणतां गुणतां सुणतां सार, ऋद्धि वृद्धि मंगल जयकार ॥३९

इति श्री मंगल कलश रास संपूर्ण ॥

लेखन काल – संवत् १६६४ वर्षे चइत्र सुदि १४ बुध वासरे श्री देवगिरि नगरइ सुश्रावकि संघवी जगसी भार्या हर्षाई तस्य पुत्र त्रण्य

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जात सां द्रेउजी, दामाजी, सां. दीनाजीए मध्ये दामाजी लिखित आत्म हेतु ।

प्रति—गुटकाकार । पत्र-२०४ से १८ । पंक्ति २० । अक्षर-२४

स्थान—वृहत् ज्ञान भंडार

वि. दे. जै. गु. क. भा. ३ पृ. ६३१

---

(१६२) उ० हर्षप्रिय (ख० क्षान्तिमंदिर शि०)

(२२४) शाश्वत सर्व जिन द्विपंचाशिका गा० ५२

रचना काल १५७४ खंभाइत ।

आदि—समरवि सारदा देवि, त्रिभुवन तीरथ सासता ए ।
ते संख्या पभरगोसु, ते जिन सासन जागता ए ॥१

वृषभानन ब्रधमान चंद्रानन तह वारिषेण ।
ए चिहुँ नाम समान, सासय पड़िमा त्रिहुँ भवणि ॥२

अन्त—त्रिणि चउवीसी विहरमाण, सासय जिण च्यारि ।
छन्नू नमीअइ भावधर, जिणवर ए च्यारि ।

पनर चिहुत्तरि तवन कीध, **खंभाइत** नयरि ।
भणतां गुणतां नितु विहाणि, सुह सपय तसु घरि ॥५१

सेत्रुंज नइ गिरनारि, यात्रा करता हुइ जे फल ।
अट्ठावय समेतसिहरि, काया हुइ निरमल ॥

तिम सासय जिण इथाण **बावन्नी** भणतां ।
श्री हर्षप्रिय उवझाय एम बोधि मांगइ रचितां ॥५२

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

इति श्री शाश्वत सर्व जिनद्विपंचाशिका संपूर्ण ।।श्रीरस्तु ।।

लेखनकाल—सवत् १७३० वर्षे आसोजवदि १३ दिने लिखतं पंडित दया-तिलकेन ।

प्रति—पत्र—३ (१ में ३ पंक्ति) । पंक्ति १५ । अक्षर ४६।

प्रति० अभय०

---

(२२५) शील इकतीसो गा० ३१

आदि—अप्राप्त

अन्त—मन वचन काया तजी माया, विषय सुख मधु बिंदुआ ।
अरिहंत वाणी जीव जाणी, म करि नारी छंदुआ ।।
जे सील लाधै जीव साधै, मोक्ष ना सुख ते सुण्यो ।
श्री क्षांति मन्दिर गुरु प्रसादै **हर्षप्रिय पाठक** भण्यौ ।।३१

इति शील इकतीसो समाप्तः ।

लेखन काल—१७वीं शताब्दी । श्री ठकरादे पठनार्थं ।

प्रति—पत्र-६ अन्य रचनाओं के साथ । पंक्ति-११ । अक्षर-३७ ।

अभय०

---

(१९३) भाव उपाध्याय

(२२५) विक्रम चरित्र रास

सं० १५८२

।। विनयविमल गणि गुरुभ्यो नमः ।।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आदि—नमो नमो तुम्ह चंडिका तुम्ह गुण कर न हुँति ।
एक चित्तइ जु समरतां, सुख संपत्ति पामंत्ति ।।१
तइं जो माहिषासूर बद्ध, दैत्य ज मोडया मान ।
जाणु संभ नसंभुना, तइं हरिया सवि खाण ।।२
पवाड़ा तुझ केतळा, कहितुं न लहुं पार ।
अर्जुन शिरि शरणि चडी तुं भलभड़ी अपार ।।३
छपन कोड़ि रूपज धर्या, चुसठि योगनि हुँति ।
तुल तणा गुण गावतां, मन हरषइ पामंति ।।४
साहेली सरोवर तणी, न लहइं को तुझ पार ।
कहि कवियण चंडां सुणु तुं अडवडीयां आधार ।।५
कवण गजु हुं मानवी, मुझ बल ताहरुं हुंति ।
विश्व माय ताहरइं बलि, राउ विक्रम वर्णवति ।।६
श्री गुरुनी सानिधि थकी, अविरल वाणी होइ ।
उवज्ञाय भाव कहइ मानवी, सभलयो सहु कोइ ।।७
नयर उजेणी राजिउ, जाणु विक्रम राय
कलियुग माहिं अवतरि, जिणि राख्यु जसवाय ।।८
चूपई—उजेणि नव जोवन वार मनुष्य तणु नहीं पार ।
व्यवहारी बसे श्रीवंत, अछइ दयामय जेह नुं जंत ।।९

(९७५ पद्यों में विक्रम के लीलावती से पाणिग्रहण, उसके पुत्र का प्रसंग वर्णित है।)

अन्त—दूहा – संवत पन(र) व्यासीइ, (१५८२) तिथि वलि तेरसि होइ
मास मागसिर जाणयो, वारह रवि दिन जोइ ।।७२
चडी तणइ पसाउ लहइ, चडिउ प्रबंध प्रमाणि

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उवझाय भाव इणि परि भणइ, बात ज आवी ठामि ॥७३

नर नारी सहु साभंलइ विक्रम चरित्र ज बात
ते सानद्धि चडी करि, टालइ सवि उपघात ॥७४

इति विक्रम चरित्र रास संपूर्ण:

बोर्डर पर विक्रम चुपई लिखा है।

गुलाब कुमारी लाइब्रेरी बंडल नं० १६/१६४ पत्र १-५३

वि० दे० जै० गू० क० भा० ३ पृ० ६३३

---

(१६४) विनयसमुद्र (उपकेश हर्षसमुद्र शि०)

(२२६) विक्रम पंचदण्ड चौपइ

रचना काल-संवत् १५८३

आदि— देवि सरसति २ प्रथम प्रणमेवि ।
वीणा पुस्तक धारिणी,
वंड विहंसि सुप्रससि चुल्लइ ।
कासमीर पुर वासिणी,
देइ नांण अन्नांण पिल्लइ ॥
कवियण नीतु मण्डली,
दिउ मुझ बुद्धि विसाल ।
जिम **विक्रम** राजा तणउ,
कहउं प्रबंध रसाल ॥१

गवरि नंदन २ समरि गणपत्ति ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

एकदंत गजवदन पुणि विघन विसन सवि दूरि टालइ ।।
लंबोदर नवनिधि करण सुरह वृंद स्वछंदि पालइ ।
मूंगा वाहणि अति पवर करि मोदक अभिराम ।।
सिरि **विक्रम** नरवइ तणा, कवि करिस्युं गुण ग्राम ।।२

सत साहस तनि आदरु, जिमि मनिवंछित होइ ।
पंचदंड सिरि छत्र किय, ए उत्तिम परि जोइ ।।८

अन्त—संवत पनरह सइ त्रयासीयइ ए, चरित्र निसुणी हरसीयइ ।
साहसीक जे होइ निसंक, कायर कंपइ जे बलि रंक ।।९०

श्री **उवएस** गणाधरि सूरि, चरण करण गुण किरण प्रपूर ।
रयणप्पह प्रभु गुण गण भूरि, तसु अनुक्रमि संपइ **सिद्धि** सूरि ।।९१

तेहनइ वाचक **हर्षसमुद्र**, जसु जस उज्जल खीर समुद्र ।
तसु विनेय **विनयांबुधि** एह, रचिउ प्रबंध निरखि तिणि एह ।।९२

पंचदंड नाम सुचरित्र, देखी तेहनुं अति विचित्र ।
तिणि विनोद चउपई रसाल, कीधी सुणतां सुफल विलास(विसाल) ।।९३

इति श्री विक्रमादित्य राजा पंचदंड चउपई समाप्त शुभं भवतु

लेखन—१७ वीं लि० (**विनय समुद्र** का अंवड चौ० सं० १५९९ लिमरी के साथ)

प्रति—पत्र संख्या ३५ से ६३ गुटकाकार। पंक्ति १५ । अक्षर ३७

स्थान—मोतीचंदजी खजांची संग्रह ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(२२७) नमिराज ऋषि संधि गा० ६९ बीकानयरे

सं० १५८३ लग०

आदि—पापहरण जिणिवर पणमेवी, सवि गणधर गुण हीयइ धरेवी ।
सासण देवति निय गुरु ध्यावउं, संधि बंधि नमि ऋषि गुण गावउं ॥१

महियलि मंडण मिथला नयरी, जिणि निजि तेजि नमाव्या वयरी ।
नायक निरुपम तिहुअण राजइ, श्री **नमिराज** करइ गुण गाजइ

अन्त—कर्म खपावी केवल नाण, पामी पहुंतउ नमि निरवाण ।
वीकानयर वसुह वरट्ठाण, **विनय** वणासीरी (रीसी) कीयउ बखांण ॥६९

इति श्री नमि राजऋषि संधि ।

लेखन—? संवत १६३२ वर्षे आप्ता ।

विनय रचित अन्य स्तवनादि—

१. शत्रुंजय आदि स्त० गा० २७
२. थंमण पार्श्व स्त० गा० १३
३. पार्श्व १० भव स्त० गा० ३६

प्रति—गुटका नं० ७

स्थान—वृहत ज्ञान भण्डार

१७ वीं लिखित, साध्वी हेमी पठनार्थ पत्र ५ । पंक्ति १० । अक्षर ३६

स्थान—मोतीचंद खजांची संग्रह ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

(२२८) नमि राजऋषि कुलं गा० ६३

आदि—पहिलउं तिथंकर लिउं नाम, सर्व साधु नइ करउं प्रणाम।
श्री **नमिराय** तणउ अवदात, बोलिसुं अध्ययनइ विख्यात ॥१

अन्त—नमिऋषि नामिउ निज आतमा, शक्रइं प्रेरी तओ महातमा।
तउ घर छंडि विदेह नरिंद, चारित उत्तम कियउ मुणिंद ॥६२
जे पंडित छइ ते सुविचार, पविक्खण सवि भोग निवारि।
ते नमि राजऋषि नी परइं, **वाचक विनय** इम वचन सिद्धिइ वरइ ॥६३

इति श्री नमि राजऋषि कुलं।

पत्र ३, पं० १३, अ० ४०

---

(२२९) चित्रसंभूति कुलक गा० ८३

सं० १६५३ पूर्व

आदि—वीर जिणंद सुवंदिय भावइ, जसु गुण पार न सुरगुरु पावइ।
तेरम अज्झयणइं विख्यात, **चित्रसंभूति** तणो अवदात ॥१
श्री साकेत पुरइ वरचंग, चंद वडिस पुत्त बहु रंग
मुणि चंद सागर चंदह पासइ, लेइ दीख पुहवि प्रतिभासइ ॥२

अन्त—तेरम अज्झयणइ सुणिवउ सुयणइ वयणइं वीर वखाणीयउ ए।
जेह भवि भणिस्यइ श्रवणि सुणिस्यइ **विनइ** वृति थी जाणीयउ ए ॥८३

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

इति श्री चित्रसंभूति कुलक समाप्तं

प्रति-गुटका पत्र २५३-५७।। पं० १८ अ० २७

वि० इसी प्रति में सीता चौ०, श्रेणिक चौ० [सोमविमल सूरि] सुरप्रिय स० श्रुत षटत्रिंशिका (पासचन्द), ब्रह्मचर्य.........समाधि कुलक (पासचन्द) व नवतत्व वाला० है।

सोमविमल सूरि के दस दृष्टान्त त्रु० है।

अन्त—इणि परि दस बोले दोहिलउ नरभव जाणी।
सील समकित पालउ अज वलाउ निज प्राणी
श्री हेमविमल सूरि सुगुरु वचनि मनि आणि
श्री सोमविमल सूरि जंपइ एहवी वाणी।

इति दस दृष्टान्त सं० १६५३ लि०

---

(२३०) इलापुत्र कुलक गा० ६१

सं० १६५४ से पूर्व

आदि—संति सुहंकर सोलिम जिणवर, संति जिणेसर ध्यावउजी।
पुहवि प्रगट नर अति अचरिज कर, **इलापुत्र** गुण गावउजी ।।१
ए भव नाटक नी परि बूझइ, जे हुई भवियण प्राणीजी।
साधु सुसंगति सयम सूधद, मुझ इन विषय नबिनांणी जी। (आं.)

अन्त—आप तरीनइ पांचइ तारया, अविगति पंथ लगाया।
निरमल चित्त निरंजन नितनित, **विनइ भगति** गुण गाया रे।।६

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

Serving JinShasan
188217
gyanmandir@kobatirth.org

For Private and Personal Use Only